दोष-मुक्ति
नया जन्म

दोष-मुक्ति नया जन्म

चार्ल्स लैटर

प्रस्तावना:पॉल वॉशर

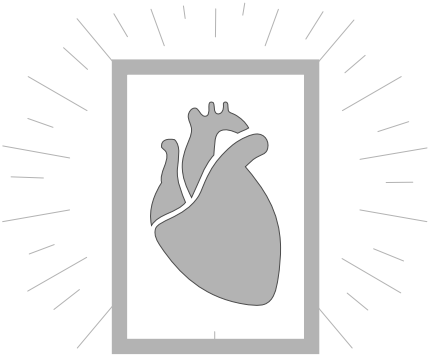

ALETHIA Publications

दोष-मुक्ति और नया जन्म

© ALETHIA Publications, 2017

The title *Justification and Regeneration* is originally published in English by Granted Ministries Press.

Copyright ©2009 by Charles Leiter. This Hindi version has been translated and published by **Alethia Publications** with permission.

First Hindi Edition 2017.

All rights reserved.
No part of this publication may be reproduced in any form or by any means, Electronic or mechanical, including photocopying, recording, or any Information storage and retrieval system, without permission in writing from the publisher.

Published & Distributed by
ALETHIA Publications.
Chandra Niwas Building, Bitco Point, Nashik Road 422101,
Maharashtra, India.
www.alethiabooks.com

ALETHIA Publications is the publishing division of
Alethia Publication & Training Pvt. Ltd.
alethiapublications@gmail.com
www.alethiabooks.com

Hindi Translation: Sameer Salve & Team.
Cover Design: Jon Green

Price: ₹ 199

Printed and bound in India by
GS Media, Secunderabad 500 067
E-mail: printing@ombooks.org

विषय-सूची

आभार प्रदर्शन		7
भूमिका		9
प्रस्तावना		11
अध्याय – 1	पाप	13
अधाय – 2	क्या एक मनुष्य परमेश्वर के सामने धर्मी ठहर सकता है?	23
अध्याय – 3	धर्मी ठहराया जाना	31
अध्याय – 4	नया जन्म	49
अध्याय – 5	नई सृष्टि	53
अध्याय – 6	एक नया मनुष्य	59
अध्याय – 7	एक नया हृदय	65
अध्याय – 8	एक नया जन्म	75
अध्याय – 9	नया स्वभाव	83
अध्याय – 10	क्रूस पर चढ़ाया जाना और पुनरूत्थान	89
अध्याय – 11	क्षेत्रों में परिवर्तन	97
अध्याय – 12	क्षेत्रों में परिवर्तन	107
अध्याय – 13	क्षेत्रों में परिवर्तन	117
अध्याय – 14	व्यवस्था से अनुग्रह की ओर	123
अधाय – 15	क्षेत्रों में परिवर्तन	133
परिशिष्ठ–अ	पुनरूज्जीवन	143
परिशिष्ट–ब	''पाप नहीं कर सकते''	153

परिशिष्ट–क रोमियों 7 157
परिशिष्ठ–ड मसीह में सभी आशीषें 167
परिशिष्ठ–ई अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न 177

आभार प्रदर्शन

मैं हार्टक्राय मिशनरी सोसायटी के पॉल वॉशर का इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए उनके प्रोत्साहन एवं सहायता के लिए विशेष धन्यवाद व्यक्त करना चाहूंगा, उसी तरह कर्क्सविल, मिसूरी के गॅरेट होल्थॉस को भी धन्यवाद देना चाहूंगा कि उन्होंने इसकी विषयवस्तु के संबंध अपने अनमोल सुझाव दिए। मेरे प्रूफरीडरों के लिए विशेष धन्यवाद जिन्होंने विचारपूर्वक मेरी गलतियों को ढूंढ़ निकाला, और सबसे अधिक – मेरी पत्नी, मोना के लिए जिसने कोलोरैड़ा से हमारी तेरह घण्टों की यात्रा के दौरान खुशी के साथ मुझे पूरी पाण्डुलिपी पढ़कर सुनाई और कई अत्यंत उपयुक्त बदलावों का सुझाव दिया।

भूमिका

बाइबल के धर्म सिद्धांत के विद्वान और सामान्य मसीहियों को अलग करने वाला एक बड़ी खाई प्रतीत होती है। धर्म सिद्धांत का विद्वान परमेश्वर के सत्य के एव्हरेस्ट पर्वत पर चढ़ पाता है और दर्शन के द्वारा परिवर्तन पाता है, फिर भी वह प्रायः अपना दर्शन ऐसी भाषा में निवेदन करता है जो हमारी समझ से परे होती है। इस प्रकार, हम विख्यात मसीही साहित्य पर निर्भर होते हैं जो अक्सर अनोखी कहानियों दस्तन्दाजी, और बपतिस्मा प्राप्त मनोविज्ञान से अधिक और कुछ नहीं होता।

समकालीन अमेरिका की कलीसिया को और रणनीतियों, चरण, और मसीही जीवन की कुंजियों की ज़रूरत नहीं है। कलीसिया को सत्य की, अधिक विशिष्ट तौर पर, ऐतिहासिक मसीहत की बड़ी बुनियादी सच्चाइयों की ज़रूरत है। इस कार्य में, पास्टर चार्ल्स लीटर ने कलीसिया की बड़ी सेवा की है कि उन्होंने पवित्र शास्त्र के दो महान सिद्धांतों और मसीही जीवन के महान चमत्कारों में से दो को लेकर सरल भाषा में इस प्रकार समझाया है कि विषय–वस्तु को कोई हानि नहीं हुई।

जब मैंने इस पुस्तक की हस्तलिपि पढ़ी तब मैं उसकी सरलता और विस्तार को देखकर अचंभित रह गया। धर्मी ठहराए जाने और नए जन्म के महान सिद्धांतों को विश्वास के अन्य महान सिद्धांतों के संदर्भ में ही उचित रीति से सोचा जा सकता है – परमेश्वर का पवित्र और धर्मी चरित्र, मानवजाति की भ्रष्टता, प्रायश्चित्त, पश्चाताप,

विश्वास, पवित्र किया जाना आदि कुछ हैं। पास्टर लीटर ने हमें न केवल इनमें से प्रत्येक शिक्षा का संतुलित दृष्टिकोण प्रदान किया है बल्कि उन्होंने यह भी प्रत्यक्ष रूप से दिखा दिया है कि वे किस प्रकार आपस में बटकर मसीह जीवन की बुनियाद तैयार करते हैं।

मेरे लिए विशिष्ट रुचि का विषय है नए जन्म का उचित दृष्टिकोण प्रस्तुत करना। आधुनिक दिनों के सुसमाचार प्रचार में, यह अनमोल शिक्षा मात्र अपने हाथ उठाने, गिरजाघर के बीच की कतार में चलने, या 'पापियों की प्रार्थना करने' के मानवीय निर्णय तक सीमित रह गई है। परिणाम स्वरूप, बहुसंख्य अमेरिकन यह विश्वास करते हैं कि उनका 'नया जन्म' हुआ है, जब कि उनके विचार, शब्द, और कार्य परमेश्वर के स्वभाव और इच्छा के बिल्कुल विपरीत हैं। पास्टर लीटर दिखाते हैं कि नया जन्म परमेश्वर का अलौकिक का कार्य है जिसके द्वारा पापी का मृत, पत्थर का भ्रष्ट हृदय हटाकर उसे नया हृदय प्रदान किया जाता है जो प्रेम और आज्ञाकारिता के साथ परमेश्वर के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करने हेतु न केवल इच्छुक भी होता है पर सक्षम भी होता है। दूसरी बात, पास्टी लीटर रोमियों 6 और 7 का विवेचन तर्कपूर्ण और सुसंगत शैली में करते हैं, जो तत्पश्चात पाठकों को गहन सरलता के साथ निवेदन करते हैं। इन दो महान अध्यायों के संबंधों में हमारे भाई के विचार मेरी अपनी यात्रा के वर्षों में मेरे लिए बढ़े बल, सात्वंना और आनंद का स्रोत रहे हैं।

उसके प्रकाशन में जाने से पहले मैंने इस पुस्तक को कई बार पढ़ा है। मैंने उसकी शिक्षा से बहुत लाभ प्राप्त किया है और मैं हृदय से उसकी विषय–वस्तु का अनुमोदन करता हूं। परमेश्वर का आत्मा आपके हृदय और मन को प्रकाशित करने पाए ताकि आप न केवल यहां पर स्पष्ट किए गए वचनों को समझ सकें, बल्कि वे आपके जीवन में वास्तविकता बन सकें।

प्रस्तावना

क्यों की हम सब भी पहिले निर्बुद्धि, अनाज्ञाकारी, भ्रम में पड़े हुए तथा विभिन्न प्रकार की वासनावों और अभिलाषाओं के दास थे, और अपना जीवन डाह व इर्ष्या में व्यतीत करते थे। हम घृणित थे तथा एक दुसरे से बैर रखते थे। पर जब हमारे परमेश्वर की दया और मनुष्यों के प्रति उसका प्रेम प्रकट हुआ तो उसने हमारा उद्धार किया, यह हमारे द्वारा किए गए धर्म के कामों के आधार पर नहीं परंतु उसने अपनी दया के अनुसार अर्थात् पवित्र आत्मा द्वारा नए जन्म और नए बनाए जाने के स्नान से किया। इसी पवित्र आत्मा को उसने हमारा उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर बहुतायत से उण्डेल दिया, कि उसके अनुग्रह के द्वारा हम धर्मी ठहराए जाकर अनंत जीवन की आशा के उत्तराधिकारी बनें।

– तीतुस 3:3–7

सुसमाचार के हृदयस्थल और केंद्र में दो बड़े आश्चर्यकर्म हैं। पहला है *धर्मी ठहराया जाना,* जिसके द्वारा दोषी अपराधी पवित्र और धर्मी न्यायाधीश की दृष्टि में धर्मी ठहराए जाते हैं। दूसरा है *नया जन्म,* जिसके द्वारा विद्वेषपूर्ण, गुलाम बनाए गए और घृणित पापी भी परमेश्वर और मुनष्यों के प्रेमी बन जाते हैं। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, नए नियम में दो आश्चर्यकर्म सर्वत्र दिखाई देते है। वे सुसमाचार और मसीही जीवन दोनों की उचित समझ के लिए पूर्ण रूप से बुनियादी हैं। फिर भी, सच्चे विश्वासियों के मध्य

भी इन बहुमूल्य और आत्मा को स्वतंत्र करने वाली इन सच्चाइयों के संबंध में भ्रम और अज्ञान है।

इसके बाद वाले पृष्ठों में, धर्मी ठहराए जाने और नए जन्म के स्वभाव और विशेषताओं को बाइबल के स्पष्ट प्रकार में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। ऐसा करने हेतु हमें सर्वप्रथम अध्याय 1 पर विचार करना होगा कि क्यों सभी मनुष्यों को इन दो दैवीय कार्यों की नितांत ज़रूरत है। इसमें पाप द्वारा उत्पन्न वस्तुगत अपराधबोध और अंदरूनी भ्रष्टता दोनों की चर्चा शामिल है।

सभी मनुष्य अपराधी हैं और पाप से भ्रष्ट हैं, इस कारण मनुष्य के उद्धार के मार्ग में बड़ी नैतिक दुविधा खड़ी है : धर्मी परमेश्वर अधर्मी पापी को स्वयं अन्यायी न बनते हुए कैसे धर्मी ठहरा सकता है? अध्याय 2 में इस दुविधा का और उस प्रणाली का परीक्षण किया गया है जिसके द्वारा ईश्वरीय बुद्धि ने प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व और कार्य के द्वारा इसका समाधान किया है। अध्याय 3 में, धर्मी ठहराए जाने के स्वरूप और विशेषताओं की वचन में प्रस्तुत किए गए धर्मी ठहराए जाने से संबंधित सात सत्यों के प्रकाश में छानबीन की गई है।

बाइबल में नए जन्म के विषय में बहुत कुछ कहा गया है। नया जन्म क्या है इस विषय में स्पष्ट दृष्टिकोण प्राप्त करने के प्रयास में, हम अध्याय 4–13 में इस महान चमत्कार के बाइबल आधारित नौ विवरणों का परीक्षण करेंगे। प्रत्येक वर्णन समान महिमा में सच्चाई को भिन्न दृष्टिकोण से देखता है, और साथ–ही–साथ उसके विभिन्न पहलुओं को प्रकाशित करता है।

अध्याय 14 में, धर्मी ठहराया जाना और नया जन्म दोनों पर 'व्यवस्था और अनुग्रह' के और बड़े वर्गों के संदर्भ में विचार किया गया है जिन्हें नए नियम में प्रस्तुत किया गया है। और अंतिम अध्याय में, दोनों पर हमारे मसीह में होने की और बड़ी वास्तविकता के भाग के रूप में विचार किया गया है। मसीहत मसीह है। प्रत्येक आत्मिक आशीष 'उसमें' पाई जाती है – जिसमें धर्मी ठहराए जाने और नए जन्म की सभी आशीषें शामिल हैं – और कोई भी आत्मिक आशीष उससे अलग नहीं है।

इस संपूर्ण पुस्तक में, फुटनोट में कई महत्वपूर्ण वचन दिए गए हैं, और आसान संदर्भ के लिए उन्हें प्रत्येक पृष्ठ के नीचे दिया गया है।

– चार्ल्स लेटर

अध्याय – 1

पाप
मनुष्य की बुनियादी समस्या

धर्मी ठहराए जाने और नए जन्म की उचित समझ के लिए, हमें वही से आरंभ करना होगा, जहां से बाइबल करती है, अर्थात् पाप से। समस्त पाप खुद को परमेश्वर के स्थान पर रखने की मनुष्य की विकृत अभिलाषा से प्रवाहित होता है – मनुष्य सारी बातों का केंद्र और मानक बनना चाहता है और स्वयं 'जानना' चाहता है कि अच्छा क्या है और बुरा क्या है।[1] 1 तीतुस 3:3–7 के अनुसार, मनुष्य अपनी स्वाभाविक दशा में "निर्बुद्धि, और आज्ञा न मानने वाले, और भ्रम में पड़े हुए, और रंग रंग की अभिलाषाओं और सुखविलास के दास" थे। उनके जीवन की पहचान "द्वेष, ईर्ष्या और नफरत" थीं। इस स्थिति को पहचानने की बजाय, खोया हुआ व्यक्ति खुद के विषय में यह कल्पना करता है कि वह "मूलतः अच्छा" है, जब तक कि परमेश्वर अपनी दया से उनके अंधकारमय हृदय की सच्ची दशा को उन पर प्रगट नहीं करता। पाप मानवजाति की परम एवं एकमात्र समस्या है।

पाप का बाइबल आधारित दृष्टिकोण

बाइबल में पाप के विषय में कहने के लिए बहुत कुछ है। यदि हमें पाप के सच्चे स्वरूप को सही रीति से समझना है, हमें इस बाइबल के प्रकाशन को मौका देना होगा कि वह हमारे अंधकारमय मनों को प्रकाशित करें और हमारे लापरवाह हृदयों को नरम दिल बनाएं। उसके विषय में जरा सोचिए! बाइबल के अनुसार, पाप ––––

पूर्णतया सार्वत्रिक है

पाप मानवजाति में पूर्णतया सार्वत्रिक है। "हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया" [2] "जैसा लिखा है, कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। कोई समझदार नहीं, कोई परमेश्वर का खोजनेवाला नहीं। सब भटक गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए, कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं।"[3] आप और मैं शायद एक–दूसरे से कभी न मिले हो, परंतु हमारे परिचय से पहले एक बात निश्चित है – हम दोनों पापी हैं। पृथ्वी पर रहने वाला प्रत्येक पुरुष, स्त्री, बालक पापी हैं, चाहे वह कितना ही बुजूर्ग, कितना ही जवान क्यों न हो। छोटे बच्चे भी, यदि उनके मन के अनुसार करने के लिए छोड़ दिए जाएं, तो वे प्राणियों के साथ और एक–दूसरे के साथ भी अत्यंत निचले दर्जे की क्रूरता कर बैठते हैं।

वंश और राष्ट्रीयता भी पाप से कोई प्रतिरक्षा प्रदान नहीं करती; अत्यंत सभ्य राष्ट्र भी बर्बर जातियों के समान ही जातिसंहार करते हैं। "सुसभ्य" लोगों के "जहरीली गैस के कक्ष" "असभ्य" जातियों द्वारा चलाए जाने वाले हथियारों का सुसंस्कृत रूप है।

"कुलिन आदिम" या "प्रसन्न/उल्लासपुर्ण काफिर जैसी कोई बात नहीं है। एक पूर्व मिशनरी के शब्दों में, "बुरे परमेश्वर को अच्छे मनुष्यों को नर्क भेजने से रोकने के लिए मैं मिशन क्षेत्र में गया। जब मैं वहां पहुंचा तो मैंने पाया कि वे अपराधों के दानव हैं।" सवाल यह नहीं है कि मनुष्यों को "यीशु को ग्रहण करने का" अवसर मिला है या नहीं। प्रश्न है उन्हें मिशनरी के साथ दुर्व्यवहार करने का और उसके संदेश को इन्कार करने का अवसर मिला या नहीं – क्योंकि पवित्र आत्मा के विशेष कार्य को छोड़, वे अवश्य ही ऐसा करेंगे।[4]

पाप मानवजाति में सर्वव्यापी है

पाप न केवल सार्वत्रिक है; परंतु वह सर्वव्यापी है। मानव व्यक्तित्व और मानव अस्तित्व का प्रत्येक पहलु उससे प्रभावित है :

बुद्धि अंधी कर दी गई है। "उन अविश्वासियों...की बुध्दि को इस संसार के ईश्वर ने अन्धी कर दी है, ताकि...उन पर न चमके।"[5]

इच्छा भ्रष्ट हो चुकी है और असमर्थ हो गई है। "मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है इसलिये निरन्तर बुरा ही होता है।"[6] "तुम जीवन पाने के लिए मेरे पास आना नहीं चाहते।"[7] "कोई मेरे पास नहीं आ सकता, जब तक पिता, जिसने मुझे भेजा है, उसे खींच न ले।"[8]

भावनाएं विचलित और विकृत हो चुकी हैं। कुछ हृदय निरंतर क्रोध और नफरत से भीतर ही भीतर घुट रहे हैं; अन्य कुछ रात और दिन अर्थहीन भय से प्रताड़ित हैं। जनसमुदाय उन बातों पर हंसता है जिन पर उन्हें रोना आना चाहिए, अन्य कुछ हैं जो बिना किसी कारण के रो पड़ते हैं। इस प्रकार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पाप से मनुष्य का व्यक्तित्व गहरे और सर्वव्यापी उपद्रवों से प्रभावित है।

अविवेकी है

पाप अविवेकी है। कई बहुमूल्य जन्मसिद्ध अधिकारों का केवल एक कटोरी दाल[9] के लिए सौदा हुआ है; कई विवाह और पारिवारिक जीवन एक रात के अवैध सुखविलास की वजह से बर्बाद हो गए हैं। अवैध मादक औषधि के क्षणिक रोमांच के लिए, मानव मस्तिष्क की सर्वोच्च शक्तियों को नियमित रूप से और स्थायी रूप से बर्बाद कर दिया गया है। हमारे भूतकाल के पापों पर एक क्षण चिंतन करना इस बात की पुष्टि करने के लिए पर्याप्त है कि उनमें से कुछ भी अर्थपूर्ण नहीं है। उड़ाऊ पुत्र के कार्यों की मूर्खता ऐसी थी कि उसके पश्चाताप में "अपने आपे में आने"[10] से कुछ भी कम शामिल नहीं था।

कोई बुद्धिमानीपूर्ण पाप नहीं है।

पाप धोखा देता है

पाप धोखा है। बाइबल "पाप के छल में आकर कठोर"[11] होने के विषय में बोलती है। जैसा कि सब प्रकार के छल या धोखे के साथ होता है, उसका शिकार अपनी छली अवस्था के विषय में अनजान होता है। उसी समय वह सोचता है कि वह "धनी है, और धनवान हो गया है, और उसे किसी वस्तु की घटी नहीं है," परंतु, वास्तव में वह "अभागा, तुच्छ, कंगाल और अन्धा और नंगा है!"[12] वह "अपने को बुद्धिमान जताते" हैं, परंतु वास्तव में "मूर्ख" हैं।[13]

पाप कठोर करता है

पाप के विषय में सर्वाधिक भयावह बात यह है कि उसके पास पाप करने वाले को कठोर कर देने की सामर्थ है।[14] मनुष्य पाप में जितना गहरा उतरता जाता है, उतना ही पाप उसे कम परेशान करता है। बाइबल के अनुसार, मनुष्य का विवेक "मानो जलते हुए लोहे से दागा गया है।"[15] प्रत्येक पापी व्यक्ति अब पाता है कि वह उन पापों को कर रहा है जिन्हें वह एक समय तुच्छ जानता था और अब वह जिन पापों को तुच्छ जानता है, उन्हें वह किसी दिन स्वयं को करता हुआ पाएगा। यह सोचकर हम अचंभित हो जाएंगे कि एक समय ॲडॉल्फ हिटलर भी छोटा लड़का था वह अन्य छोटे लड़कों के समान खिलौनों से खेला करता था। मनुष्य पाप का आरंभ जानता है, परंतु किसी भी मनुष्य ने पाप का अंत कभी नहीं जाना है।

पाप गुलाम बनाता है

पाप उन्हें गुलाम बनाता है जो उसका आचरण करते हैं। "जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है।"[16] कोई भी खुद को पाप के बंधन से मुक्त नहीं कर सकता या बच नहीं सकता। पाप पापी व्यक्ति पर 'राज्य करता है' और तानाशाह की तरह उसकी पीठ पर सवार होता है जब तक कि वह विनाश और मृत्यु की गर्त में अंतः न ले जाए।[17] यदि आप मसीही नहीं हैं, तो आपके गले में दूसरी किसी भी भौतिक जंजिर से कई अधिक भयानक जंजिर लटकी हुई है। शायद आप एक पाप छोड़ सकते हैं, परंतु तुरंत दूसरा पाप उसका स्थान ले लेगा – अक्सर घमण्ड या खुद को धर्मी समझने का पाप क्योंकि आप कल्पना करते हैं कि खुद को सुधारने में आपने वह सब कुछ हासिल कर लिया है। पाप गुलाम बनाने वाला है।

पाप तुच्छ करता है

पाप अत्यंत उच्च दर्जे के और कुलिन स्त्री पुरुषों को लज्जा और बदनामियों की गहराई में ले जाता है। जो जवान व्यक्ति पहले अत्यंत कीमती पोशाक पहनता था और अपने दफ्तर की चमड़े की कुर्सी में विराजमान होता था, अब पाप के परिणाम स्वरूप अपने ही वमन में लथपथ पड़ा है। वह जवान लड़की जो पहले साफ–सुथरी और सुंदर और मासूम थी, अब तुच्छ और वासनामय और गंदी है – फिर से, पाप की वजह से। स्त्री और पुरुषों को परमेश्वर के प्रतिरूप में बनाया गया, अमरता के स्वप्न देखने के लिए

सृजा गया और अनंतकाल के अंतहीन विचार सोचने के लिए उत्पन्न किया गया, वे अब पाप की वजह से इतनी हीन दशा में पहुंच चुके हैं कि वे रोटी के एक टुकड़े के लिए सुअरों के समान कीचड़ में रेंगते हुए दिखाई देते हैं। पाप ने स्वर्गदूतों को भी दुष्टात्माओं में बदल दिया[18]; वह मनुष्यों को 'अविवेकी जानवरों'[19] में बदल देता है। पाप तुच्छ बनाता है।

पाप अशुद्ध करता है

अंत में, पाप अशुद्ध करने वाला है।[20] पाप छोटी सी बात नहीं है; पाप 'प्यारी सी' बात नहीं है; पाप मजेदार नहीं है। पाप अत्यंत *दुष्ट और विकृत* है; वह "अत्यंत पापमय" है।[21] *सब प्रकार का पाप विकृत और विकृत कुरूप और दुष्ट है।* हमें यह देखकर अचंभित होना चाहिए कि मनुष्य कितने दुष्ट हैं और उस दुष्टता के प्रति हम कितने कठोर हृदय हो जाते हैं। हमें उसकी *आदत* पड़ जाती है! पहला बालक बड़ा होकर अपने ही भाई की हत्या करता है।[22] और तब से मानव इतिहास में युद्ध, वासना, नफरत, सताव, बलात्कार, विकृति, दुर्व्यवहार, और क्रूरता का लगातार धारा प्रवाह बह रहा है। यह आशीष की बात है कि हमारे अपने ही गांव या नगर में हुए पापों को हम विस्तारपूर्वक नहीं जानते। ऐसा ज्ञान इतना प्रदूषणकारी होगा कि हम उसे सह नहीं पाएगे।

फिर भी, हमें इस सच्चाई का सामना करना है कि संसार को जैसा होना था वैसा वह नहीं है क्योंकि उसमें हिटलर जैसे कुछ बुरे लोग हैं; संसार जिस प्रकार का है उस प्रकार का इसलिए है क्योंकि वह हमारे जैसे कई लोगों से बना है! हम में से प्रत्येक में *गहरी दुष्टता* है। कभी–कभी इस दुष्टता को हमें दिखाने हेतु परमेश्वर ऊपरी तौर पर "छोटी" दिखने वाली कोई बात हमें दिखाएगा। ऑगस्टीन को, उसकी अनैतिक जीवन शैली ने नहीं, परंतु उसकी युवावस्था में – भूख के लिए नहीं लेकिन खेल–खेल में अपने पड़ोसी के वृक्ष से नाशपतियों को चुराने के अपराध ने – उसे उसके हृदय की गंभीर भ्रष्ट दशा प्रगट की। पाप, मात्र बुराई करने के आनंद के लिए, बिना किसी कारण और बिना किसी प्रतिफल के, मनुष्य के हृदय से प्रवाहित होता है और हम सबों को अशुद्ध कर देता है।

मानव की पाप की समस्या के दो पक्ष

पाप मानवजाति की अंतिम और एकमात्र समस्या है। परंतु यह "पाप की समस्या" के दो भिन्न पहलु हैं – पहला अंदरूनी और दूसरा बाहरी।

अंदरूनी समस्या - बुरा हृदय

प्रभु यीशु के अनुसार, मनुष्य स्वयं भ्रष्ट और पतीत है। "जो मनुष्य के भीतर से आता है, वही उसे अशुध्द करता है।" क्योंकि भीतर से अर्थात् मनुष्य के मन से बुरे–बुरे विचार, व्यभिचार, चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि, निन्दा, अभिमान और मूर्खता निकलती हैं।"[23] मसीह के बगैर प्रत्येक मानव हृदय की यही दशा है। हमारे अतीत के कार्यों की बात छोड़िए, यदि हमारे पूर्व विचारों का चलचित्र हमारे परिवार और परिचितों के सामने बड़े पर्दे पर दिखाया जाता, तो हम मे से प्रत्येक शर्मसार होकर उस कमरे से भाग जाता। प्रत्येक गैरमसीही – उसके व्यक्तित्व में – पवित्र परमेश्वर के प्रति प्रतिक्षेपक है, जिसकी वह कल्पना भी नहीं कर सकता।

परंतु पाप के साथ मनुष्य की समस्या इससे भी अधिक गहरी है। मान लीजिए कि किसी चमत्कार से, पापी व्यक्ति नया बन सकता है और बाकी जीवनभर कभी पाप न करे, *फिर भी वह निश्चित रूप से नर्क जाएगा।* नियमित रूप से हत्या करने वाला हत्यारा जो सच्चे मन से फिर कभी हत्या न करने का संकल्प करता है, उसे अपने अतीत के अपराधों की कीमत चुकानी होगी। दूसरे शब्दों में, पाप के साथ मनुष्य की समस्या का अंदरूनी होने के अलावा और एक आयाम है। मनुष्य के पास न केवल *बुरा हृदय* है; बल्कि परमेश्वर की व्यवस्था की दृष्टि में उसका *बुरा लेखा* भी है।

बाहरी समस्या - बुरा लेखा

प्रत्येक पापी न्याय से पलायन करता है। उसके हृदय की वर्तमान दशा चाहे जो हो, उसके पास परमेश्वर की व्यवस्था की नज़रों में उसके खुद से *बाहर वस्तुपूरक दोष* बुद्धि है। उसमें किसी प्रकार की "दोष भावनाएं" नहीं होंगी, परंतु वह फिर भी "दोषी" या "दण्डित" होकर खड़ा है। उसके सारे पिछले अपराध पुकारते हैं कि उनका भुगतान किया जाए और न्याय को संतुष्ट किया जाए। यह पुकार परमेश्वर के चरित्र और व्यक्तित्व में, *न्याय* या *निष्पक्षता* के उसके गुण में स्थिर की गई है।

इस निष्पक्षता या न्याय के बोध की वजह से जिसे परमेश्वर ने मानव हृदय के अंदर गहराई में लिखा है, हम तुरंत नैतिक क्रोध महसूस करते हैं जब अपराध करने वाले को बिना सजा के छोड़ दिया जाता है। बलात्कारी – हत्यारे को केवल दस डॉलर का दण्ड देकर छोड़ देना गलत क्यों हैं? हम यह साबित नहीं कर सकते कि वह उसके अधिक के लायक है, परंतु हम जानते हैं कि वह उसके लायक है। यह हमारे अंदर स्थित यह

अनिवार्य ज्ञान किसी भी सैद्धांतिक "प्रमाण" से अधिक बुनियादी और निश्चित है। यह मानव विधान के लिए पूर्णतया मौलिक है – परमेश्वर के अपने स्वभाव का प्रतिबिंब है।

परमेश्वर के न्याय के गुण के विषय में बहुत कुछ कहा जा सकता है, विशेषकर इन दिनों में जब न्याय की अवधारणा ही व्यापक समाज में प्रायः गुम दिखाई देती है। अपराध का दण्ड क्यों दिया जाना चाहिए इसके तीन मूलकारण हैं। पहला, न्याय को संतुष्ट करने के लिए (अर्थात्, क्योंकि अपराधों का दण्ड देना उचित है और उसे दण्ड देना आवश्यक है); दूसरी, बात अच्छे समाज के लिए (अर्थात् भविष्य के अपराधों की रोकथाम के लिए); और तीसरी बात, अपराध करने वाले की भलाई के लिए (अर्थात्, उसे उसके मार्गों को बदलने हेतु विवश करने के लिए)। इन तीन में से, न्याय का समाधान अन्य दो के लिए प्राथमिक और बुनियादी है। यदि अपराध का दण्ड *न्याय्य* और *उचित* नहीं है, तो वह न तो भविष्य के अपराध को दूर करेगा और न ही अपराधी को सुधारेगा।

हमारे दिनों में दण्ड का प्राथमिक और बुनियादी कारण – न्याय का समाधान – प्रायः पूर्ण रूप से दबा दिया गया और नकारा गया है। केवल दूसरा और तीसरा कारण बचता है, और इनका महत्व विपरीत कर दिया गया है। अपराधी का "सुधार" अब प्राथमिक नहीं है, और कैदखानों को अब कैदखाने नहीं कहा जाता, परंतु "सुधारगृह" कहा जाता है। जो लोग आज भी यह विश्वास करते हैं कि समाज की भलाई के लिए अपराध का दण्ड दिया जाना चाहिए, यह विचार रखते हैं कि हत्यारों को न केवल इसलिए सजा दी जाए क्योंकि उन्होंने हत्या की है; बल्कि इसलिए भी कि भविष्य में हत्या न हो। इस प्रकार का तत्व ज्ञान दुष्टतापूर्ण और झूठा है, और इस झुठ पर आधारित है कि वास्तविक रूप मे स्त्री और पुरुष उनके कार्यों के लिए जिम्मेदार नहीं है।

यह समझना मुश्किल नहीं है कि यह स्थिति कैसे उत्पन्न हुई। क्योंकि मनुष्य स्वयं परमेश्वर बनना चाहते हैं[24], इसलिए वे संप्रभु व्यवस्थादाता के विचार से घृणा करते हैं, जिसे उन्हें हिसाब देना होगा। वे परमेश्वर के उस अनिवार्य ज्ञान का दमन करते हैं जो उनके आसपास और उनमें है,[25] और बल्कि कहते हैं कि कोई परमेश्वर नहीं है।[26] परमेश्वर के अस्तित्व का यह इनकार उनके लिए यह दावा करना आसान बना देता है कि सही और गलत जैसी कोई बात नहीं है। दोषी पापी होने की बजाय, स्त्री और पुरुषों को उनकी परिस्थितियों के असहाय शिकार के रूप में देखा जाता है। ऐसे परिवेश में, न्याय को संतुष्ट करने के लिए दण्ड अविचारनीय हो जाता है। मनुष्य जैसा चाहता है वैसा करने के लिए स्वतंत्र हो जाता है और किसी को उत्तर नहीं देता।

परंतु मनुष्य उसका दमन करने का चाहे जितना प्रयास करे, फिर भी मनुष्य के हृदय में एक अनिवार्य ज्ञान है कि *सही* और *गलत* का अस्तित्व वास्तविक हैं,[27] कि मनुष्य उनके गलत कार्य के लिए *जिम्मेदार* हैं, और पाप को दण्ड देना *योग्य* है।[28] सभी मनुष्य अपने हृदय की गहराई में जानते हैं कि न्याय का तराजू अंत में संतुलित किया जाना ही है।[29] यदि आप मसीही नहीं है और इन वाक्यों को पढ़ रहे हैं, तो आपके जीवन में इस समय भी न्याय का तराजू अत्यंत *असंतुलित* है, आप निश्चित जान सकते हैं – परमेश्वर के अस्तित्व और न्यायपूर्ण चरित्र के आधार पर – कि यदि आप आपकी वर्तमान दशा में बने रहे, तो वह तब तक विश्राम नहीं करेगा या मुलायम नहीं होगा *जब तक कि आप नर्क में न डाल दिए जाए।* यदि वह आपको नर्क में नहीं डालेगा, तो विश्व की पूरी नैतिक इमारत धराशायी हो जाएगी।

इसी संदर्भ में बाइबल "परमेश्वर के क्रोध" के विषय में बोलती है। परमेश्वर का क्रोध आत्म–संयम या भावना की स्वार्थी लहर की क्षणिक हानि नहीं है। यह उसके पवित्र, तपकर श्वेत हुए पाप की नफरत है, जो कुछ बुरा है उसके विरोध में उसके पवित्र स्वभाव की अभिक्रिया और घोर प्रतिक्रिया है। परमेश्वर का क्रोध प्रत्यक्ष रूप से उसके न्याय से बंधा हुआ है। उसका संबंध प्रत्येक पाप को दण्ड देने, न्याय के पलड़ों को संतुलित बनाए रखने, और प्रत्येक गलत को सही करने के उसके धर्मी संकल्प से है। इसीलिए परमेश्वर का क्रोध प्रत्येक अविश्वासी पर "बना रहता है।"[30] मनुष्य जितने अधिक पाप में बने रहते हैं, उतने अधिक वे "अपनी कठोरता और हठीले मन के अनुसार उसके क्रोध के दिन के लिए, जिसमें परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रगट होगा, अपने निमित्त क्रोध कमा रहे है।"[31] परमेश्वर का क्रोध अंततः "उण्डेला जाएगा"; वह धर्मी न्यायाधीश है और सदाकाल पाप को बिना दण्ड के अनुमति नहीं देगा।

शास्त्रसंदर्भ

1 उत्पत्ती 3:4–5;

2 यशायाह 53:6;

3 रोमियों 3:10–12

4 मत्ती 22:1–6;

5 2 कुरिन्थियों 44:4;

6 उत्पत्ती 6:5;

7 यूहन्ना 5:40;
8 यूहन्ना 6:44;
9 इब्रानियों 12:6.
10 लुक 15:17;
11 इब्रानियों 3:13;
12 प्रकाशितवाक्य 3:14;
13 रोमियों 1:22;
14 इब्रानियों 3:13;
15 1 तिमुथियुस 4:21;
16 यूहन्ना 8:34;
17 रोमियों 5:21.
18 मत्ती 25:41;
19 2 पतरस 2:12;
20 यहूदा पद 10;
21 मरकुस 7:20–23;
22 रोमियों 7:13;
23 उत्पत्ती 4:8.
24 मरकुस 7:20–23.
25 उत्पत्ती 3:4–5;
26 रोमियों 1:18 (प्रथम भाग);
27 भजन. 10:4, 14:1, 53:1.
28 रोमियों 2:14–16;
29 रोमियों 1:32;
30 प्रेरितों के काम 28:4;
31 यूहन्ना 3:36;
32 रोमियों 2:5.

अध्याय – 2

क्या एक मनुष्य परमेश्वर के सामने धर्मी ठहर सकता है?

मनुष्य के लिये संभावित उद्धार के मार्ग में यहां आकर हमारा सामना सबसे बड़ी बाधा से होता है: *कैसे एक पूर्णतया न्यायी और सच्चा न्यायाधीश एक बिल्कुल दोषी और दंडित अपराधी को दोषमुक्त ठहरा (धर्मी घोषित करना) सकता है?* कैसे एक मनुष्य नर्क के दंड से बच सकता है? हमें स्वयं परमेश्वर द्वारा कहा गया है कि "जो *दोषी को निर्दोष* और जो *निर्दोष को दोषी* ठहराता है, उन दोनों से यहोवा घृणा करता है।"[1] मान लीजिये कि एक पिता अपने घर पहुंचकर अपने परिवार को घात किया हुआ पाता है। एक दुखदायी लंबी दौड़ के बाद, वह हत्यारें तक पहुंचने योग्य बनता है। जब अंततः अपराधी न्यायाधीश के सामने प्रस्तुत होता है, वह निश्चित रूप से अपराध का दोषी पाया जाता है। परंतु जब दंड देने का समय आता है, तब न्यायाधीश निम्नलिखित घोषणा करता है: "इस मनुष्य ने भयानक अपराध किया है, परंतु मैं एक बहुत प्रेमी न्यायाधीश हूं और मैं उसे निर्दोष घोषित करने का चयन करता हूं। असल में, मैं उसे कानून की दृष्टि में *निर्दोष* घोषित करता हूं! "ऐसा न्यायाधीश उचित तौर पर उतना ही

बड़ा अपराधी ठहरेगा जितना कि वह मुजरिम! उसने "दुष्ट को निर्दोष" ठहराया और यह "प्रभु के लिये घृणित बात" है।

परंतु अगर यह मानवीय न्याय के लिये भी सत्य है, तो कितना अधिक यह परमेश्वर के न्याय के लिये भी सत्य होगा? कैसे आदम के भ्रष्ट और दोषी पुत्र, परमेश्वर के समक्ष, जो ब्रह्मांड का सच्चा न्यायाधीश है, खड़े होने की कभी आशा रख सकते हैं? कैसे परमेश्वर स्वयं अशुद्ध हुए बिना कभी किसी "अधर्मी को न्यायी" ठहरा सकते हैं? "जो दुष्ट को कहता है, 'तुम निर्दोष हो,' उस को तो हर समाज के लोग शाप देते और जाति जाति के लोग धमकी देते हैं।"[2] परमेश्वर कैसे स्वयं बिना अपने चरित्र को अपवित्र किये, हम जैसे पापियों से कह सकता है, "तुम धर्मी हो,"? परमेश्वर किस प्रकार *स्वयं को* और अपनी सच्चाई व न्याय को बचाये रख सकता है?

इस द्वंद ने हर अपराधग्राही आत्मा के लिये अनकहे रहस्य को जन्म दिया है। यह कुलपिता अय्यूब के सामने एक भयानक समस्या थी। "मनुष्य ईश्वर की दृष्टि में क्योंकर *धर्मी* ठहर सकता है? चाहे वह उस से मुकदमा लड़ना भी चाहे तौभी मनुष्य हजार बातों में से एक का भी उत्तर न दे सकेगा।"[3] "मनुष्य है क्या कि वह निष्कलंक हो? और जो स्त्री से उत्पन्न हुआ वह है क्या कि *निर्दोष* हो सके? देख, वह अपने पवित्रों पर भी विश्वास नहीं करता, और स्वर्ग भी उसकी दृष्टि में निर्मल नहीं है। फिर मनुष्य अधिक घिनौना और मलीन है जो कुटिलता को पानी की नाई पीता है!"[4] "फिर *मनुष्य ईश्वर* की दृष्टि में धर्मी क्योंकर ठहर सकता है? और जो स्त्री से उत्पन्न हुआ है वह क्योंकर निर्मल हो सकता है? देख, उसकी दृष्टि में चंद्रमा भी अंधेरा ठहरता, और तारे भी निर्मल नहीं ठहरते। फिर मनुष्य की क्या गिनती जो कीड़ा है, और आदमी कहां रहा जो केंचुआ है!"[5]

प्रायश्चित करने वाले पापी के द्वंद की इस प्रबलता को कोई महसूस नहीं करता। वह जानता है कि वह नर्क जाने के *योग्य* है। मानवीय सरकार के राज्य में, अपराधी अक्सर वास्तव में स्वयं को अधिकारियों के सुपुर्द कर चुके होते हैं कि न्याय मिल सके, बजाय कि वह और अधिक असहनीय अपराध बोध के साथ जिये! प्रायश्चित करने वाले पापी जन जानते हैं कि वे दंड दिये जाने *योग्य* हैं और उन्हें दंड नहीं दिया जाना, उनके लिये *न्यायोचित* नहीं होगा। वे जानते हैं कि परमेश्वर यूं ही "उनके पापों की अवज्ञा" *नहीं कर सकता* और उनके विषय में भूल नहीं सकता। इसलिये, उनके हृदय की पुकार होती है, "कैसे एक न्यायी परमेश्वर कभी *मेरे* उपर मुस्कुरा सकता है? कैसे

अपराध का बोझ दूर किया जा सकता है? कैसे परमेश्वर *मेरे* उपर *आशीष* उच्चारित कर सकता है? कैसे *मेरे* जैसा मनुष्य परमेश्वर के समक्ष *न्यायोचित* ठहर सकता है!''

अध्यारोपण करना *

इस द्वंद का केवल एक उत्तर है। किसी जन को पापी के पापों के एवज में *मूल्य चुकाना* है। न्याय का संतुष्ट होना आवश्यक है। या तो यह पापी द्वारा सदा के लिये नर्क में स्वयं भुगतने से संतुष्ट होगा, या पापी के एवज में कोई जन इस न्याय को संतुष्ट करेगा।

आश्चर्यो में आश्चर्य! कि ''कोई'' आ चुका है! प्रभु यीशु मसीह ''आप ही *हमारे पापों को* अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया।''[6] ''निश्चय उसने *हमारे* रोगों को सह लिया और *हमारे* ही दुखों को उठा लिया। परंतु वह *हमारे* ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह *हमारे* अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; *हमारी* ही शांति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि *उसके* कोड़े खाने से हम चंगे हो जाएं।''[7]

कैसे इतना बड़ा आदान प्रदान संभव हुआ? इसे समझने के लिये, हमें छोटे से शब्द ''अध्यारोप'' को समझना होगा। इसे विविध रूप से अनुवादित किया गया है ''मानना,'' ''गिनना,'' ''विचारना,'' और ''मढ़ना।'' पौलुस के फिलेमोन को लिखे पत्र के अंश को देखने से हम महसूस कर सकते हैं जो उसके दास उनेसिमुस को लौटाने से संबंधित हैः ''सो यदि तू मुझे सहभागी समझता है, तो उसे इस प्रकार ग्रहण कर जैसे मुझे। और यदि उस ने तेरी कुछ हानि की है, या उस पर तेरा कुछ आता है, तो मेरे नाम पर लिख ले।''[8] यहां पौलुस फिलेमोन को ''उसके नाम पर लिख लेने'' के लिये निर्देश देता है (शब्दशः ''अध्यारोप'') कि अगर उनेसिमुस का कोई कर्ज फिलेमोन की ओर निकलता है। यह वास्तव में पौलुस का कर्ज नहीं था, परंतु पौलुस ने इच्छा से *उसके कर्ज को अपने उपर लिया* और यह उसके लेखे में गिना गया!

अब, बिल्कुल यही समान शब्द और इसके सहयोगी शब्द *पाप* के लिये प्रयुक्त किये गये हैं। उदाहरण के लिये, बाइबल कहती है कि ''परंतु जहां व्यवस्था नहीं, वहां पाप *गिना* (''हमारे लेखे में लिखना'') नहीं जाता।''[9] पुनः रोमियों 4 में, पौलुस कहता है, ''परंतु जो काम नहीं करता वरन भक्तिहीन के धर्मी ठहराने वाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना जाता है। जिसे परमेश्वर बिना कर्मो के धर्मी ठहराता (धार्मिकता का ''अध्यारोप'') है, उसे दाउद भी धन्य कहता हैः 'कि धन्य वे हैं, जिन के अधर्म क्षमा हुए और जिन के पाप ढांपे गए। धन्य है वह मनुष्य जिसे

परमेश्वर पापी न ठहराए।''[10] महिमामयी आदान प्रदान! हमारे पाप *हमारे* उपर *नहीं* मढ़े गये क्योंकि वे *मसीह* पर मढ़े *गये,* और *उन्हें ऐसे स्वीकार किया गया मानों कि वे उसका अपना कर्ज हो,* उसने उन्हें पूरा भर दिया!

हम बिल्कुल इसी प्रकार की वास्तविकता पुराने नियम की ''पाप वहन करने'' की धारणा में देखते हैं। प्रायश्चित के उस महान दिन में, दो बकरें बलिदान कीये गये थे – एक ने पापों के प्रायश्चित स्वरूप अपना रक्त बहाया[11] और दूसरा (जीवित) बकरा ये पाप वहन करके निर्जन में चला जाता था[12] : और हारून दोनों बकरों पर चिट्ठियां डाले, एक चिट्ठी यहोवा के लिये और दूसरी अजाजेल के लिये हो। और जिस बकरे पर यहोवा के नाम की चिट्ठी निकले उसको हारून पापबलि के लिये चढ़ाए; परंतु जिस बकरे पर अजाजेल के लिये चिट्ठी निकले वह यहोवा के सामने जीवता खड़ा किया जाए कि उससे प्रायश्चित किया जाए और वह अजाजेल के लिये जंगल में छोड़ा जाए।''[13] यहां परमेश्वर दो बकरों का उपयोग हमें प्रभु यीशु मसीह के प्रायश्चित संबंधी कार्य के उस एक सत्य को सिखाने के लिये करता है। एक तरफ, *वह हमारे पापों के लिये मरता है,* और दूसरी तरफ– उसकी मृत्यु के परिणामस्वरूप – वह *प्रभावोत्कारी ढंग से हमारे पापों को* परमेश्वर की उपस्थिति से दूर ले जाता है।

पापों का अध्यारोप लेने की जो महिमामय वास्तविकता यहां प्रस्तुत की गयी है, उस पर ध्यान दीजिए! ''और हारून अपने दोनों हाथों को जीवित बकरे पर रखकर इजरायलियों के सब अधर्म के कामों और उनके सब अपराधों, निदान उनके सारे पापों को अंगीकार करे, और *उन को बकरे के सिर पर धरकर* उसको किसी मनुष्य के हाथ जो इस काम के लिये तैयार हो जंगल में भेज के छुड़वा दे। और वह बकरा *उनके सब अधर्म के कामों को अपने उपर लादे हुए* किसी निराले देश में उठा ले जाएगा; इसलिये वह मनुष्य उस बकरे को जंगल में छोड़ दे।''[14] हममें से प्रत्येक को जो प्रश्न अपने आप से पूछना है, वह यह है: ''क्या मैंने अपने विश्वास का हाथ कभी प्रभु यीशु मसीह पर रखा है और मेरे पाप उसे किसी निर्जन जगह में ले जाने के लिये दिये हैं?''

नहीं संपूर्ण रक्त जानवरों का,
यहूदी वेदियों पर जो मारे गये,
अपराध बोध से शांति दे सकता था,
और न पाप के धब्बे को धो सकता था।

परंतु मसीह जो स्वर्गीय मेम्ना है,
हमारे सारे पापों को दूर ले जाता है,
एक उत्तम नाम का परित्याग
और उनसे बढ़कर कीमती रक्त उसका।

मेरा विश्वास अपना हाथ रखेगा
तेरे उस प्रिय शीश पर,
जबकि मैं एक पश्चातापी के समान खड़ा हूं,
और स्वीकार करता हूं मेरे पाप।

— आयजक वाटस्

एक प्रतिनिधि हमारे स्थान पर मरा! "हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने *हम सभों के अधर्म का बोझ* उसी पर लाद दिया।"[15] तो *इस तरह* एक *सच्चा* परमेश्वर अपने स्वर्गिक न्यायकक्ष में जीवनपर्यंत अपराधी कहलाने वाले लोगों को *न्यायोचित* ठहरा सकता है। वह हमारा लेखा खोलता है और देखता है कि हमारे कर्ज उसके प्रिय पुत्र के लेखे में गिने गये हैं। इससे भी बढ़कर, वह देखता है कि उसके द्वारा कर्ज वास्तव में *पूर्ण रूप से भर दिये* गये हैं। हैल्लेलुयाह! परमेश्वर ने, अपने महानतम प्रेम के द्वारा[16] हमें उससे और उसके अपने न्याय से बचाने के लिये एक मार्ग तैयार किया! ऐसा उसने अपने एकमात्र पुत्र को हमारे स्थान पर मरने देने के द्वारा किया।

सुसमाचार का केंद्र

ये सच्चाईयां सुसमाचार का मूल केंद्र हैं। इनकी व्याख्या प्रेरित पौलुस के द्वारा रोमियों 3:21–26 में दी गयी हैं, जो थोड़ा जटिल अंश है परंतु एक बार जब हम उपर वर्णित अध्यारोप का अर्थ समझ जाते है, तो उस अंश का अर्थ स्पष्ट हो जाता है:

> *"पर अब बिना व्यवस्था परमेश्वर की वह धार्मिकता प्रगट हुई है, जिस की गवाही व्यवस्था और भविष्यवक्ता देते हैं अर्थात परमेश्वर की वह धार्मिकता, जो प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करने वालों के लिये है; क्योंकि कुछ भेद नहीं। इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से*

रहित हैं। परंतु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में हैं, सेंत मेंत धर्मी ठहराये जाते हैं। उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है। कि जो पाप पहिले किए गए और जिन की परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आनाकानी की; उन के विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रगट करे। वरन इसी समय उस की धार्मिकता प्रगट हो; कि जिस से वह आप ही धर्मी ठहरे, और जो यीशु पर विश्वास करे, उसका भी धर्मी ठहराने वाला हो।''

यहां पौलुस घोषित करता है कि मसीह हमारे पापों का कर्ज चुकाने के लिये मरा ताकि परमेश्वर पापियों को ''*धर्मी* '' ठहरा सके और उसी समय स्वयं भी ''*धर्मी* '' परमेश्वर ठहरे। संपूर्ण पुराने नियम में, पाप केवल ''*आनाकानी* '' की जाती थी, उनके अपराध का मूल्य साल दर साल आगे बढ़ा दिया जाता था जब तक कि वह मेम्ना जिसके मरने से वे पाप वास्तव में दूर हो जाते, प्रगट नहीं हो जाता।[17] इस पूरे समय के दौरान, ऐसा प्रतीत हुआ कि परमेश्वर अधर्मी था, क्योंकि उसने (अब्राहम और दाउद के समान) मनुष्यों को वास्तव में न्याय के संतुष्ट हुए बिना धर्मी ठहराया। इसलिये यह आवश्यक था कि मसीह ''सार्वजनिक रूप'' से मरे, खुले स्तर पर परमेश्वर की धार्मिकता को प्रगट करे, क्रूस पर पाप का मूल्य पूरा चुकाया गया, सब इसे देख सके। इस अर्थ में, मसीह मरा, न केवल मनुष्यों को धर्मी ठहराने के लिये, परंतु परमेश्वर को धर्मी ठहराने के लिये! क्रूस पर उसकी मृत्यु ने, परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को धर्मी ठहराने वाले, उसके सच्चे न्याय को प्रमाणित किया और प्रगट किया। हमारे पापों के लिये, एक ''प्रायश्चित'' बनकर (अर्थात क्रोध को दूर करने वाले बलिदान) मसीह, परमेश्वर के न्यायिक क्रोध को हमसे दूर कर देता है। हम ''उपहार स्वरूप धर्मी '' ठहराये गये हैं, (*बिना दाम* के निर्दोष ठहराये गये हैं), ''छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है'' (परमेश्वर को हमें निर्दोष ठहराने का भारी *मूल्य* चुकाना पड़ा)। हम ''धार्मिकता के उपहार''[18] को व ''मसीह यीशु पर विश्वास रखकर परमेश्वर की धार्मिकता को भी''[19] प्राप्त करके धर्मी ठहरे।

क्या आप अभी भी पाप और दोष के बोझ को उठा रहे हैं? क्या आप अभी भी परमेश्वर के क्रोध के अधीन हैं? ''वह देखों, परमेश्वर का मेम्ना जो जगत के पाप को उठा ले जाता है!''[20] ''पाप और अशुद्धता का एक सोता'' है।[21] ''यीशु का लहू, परमेश्वर का पुत्र हमारे सारे पापों को शुद्ध कर देता है।''[22] आप के पाप कितने ही बड़े क्यों न हों, वे मसीह के बहुमूल्य लहू के आगे कुछ भी नहीं![23] ''जहां पाप बहुत हुआ, वहां अनुग्रह

उसे से भी कहीं अधिक हुआ।''[24] उसके पास आइये! वह आप को आमंत्रित करता है और अपने पास आने की आज्ञा देता है; आप आने में धृष्ट बने रहे, इस लिये आप को डरने की आवश्यकता नहीं है: ''और जो प्यासा हो, वह आए और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंतमेंत ले।''[25] उसके पास आइये! जीवन का जल *लीजिये*! अपने पापों का बोझ उस पर डाल दीजिये और वह आपके पापों का वाहक है ऐसा विश्वास किजिये। ''प्रभु यीशु पर विश्वास किजिये और आप बचाये जायेंगे।''[26]

शास्त्रसंदर्भ

1 नीतीवचन 17:15;
2 नीतीवचन 24:24;
3 अय्यूब 9:2–3.
4 अय्यूब 15:14–16;
5 अय्यूब 25:4–6;
6 1पतरस 2:24;
7 यशायाह 53:4–5;
8 फिलेमोन 17–18.
9 रोमियों 15:13;
10 रोमियों 4:5–8;
11 लैव्य. 16:16;
12 लैव्य. 16:22;
13 लैव्य. 16:9–10;
14 लैव्य. 16:21–22.
15 यशायाह 53:6;
16 यूहन्ना 3:16;
17 यूहन्ना 4:9–10.

---

* अध्यारोपण imputation इस धर्मवैज्ञानिक शब्द के लिए प्रयुक्त शब्द है जिसका अर्थ है 'किसी की धार्मिकता दूसरे पर मढ़ना' या 'किसी का दोष दूसरे पर मढ़ना'। मसीही धर्म–विज्ञान में अध्यारोप का अभिप्राय 'मसीह की धार्मिकता विश्वासीयों पर मढ़ना' और 'विश्वासीयों का पाप मसीह पर मढ़ना' से है। – संपादक

18 इब्रानियों 9:15;

19 रोमियों 5:17;

20 रोमियों 3:22;

21 यूहन्ना 1:29;

22 जकर्याह 13:1;

23 1यूहन्ना 1:7;

24 1पतरस 1:18–19;

25 प्रेरितों के काम 20:28; रोमियों 5:20; प्रकाषितवाक्य 22:17;

28 मत्ती 11:28;

29 प्रेरितों के काम 16:31.

अध्याय – 3

धर्मी ठहराया जाना

उसके लक्षण

"निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुःखों को उठा लिया; तौभी हम ने उसे परमेश्वर का मारा–कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं। हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।"

– यशायाह 53:4–6

हमने देखा है कि मनुष्य की सबसे बड़ी समस्या *पाप* है। परंतु उस पाप की समस्या के दो पहलु हैं : पहला है अंदरूनी – मनुष्य का हृदय बुरा है। दूसरा है बाहरी – मनुष्य के विषय में बुरा लेखा है। इसे दूसरी तरह कहने का तरीका : प्रत्येक गैरमसीही के लिए पाप उसे *अशुद्ध* करता है (पाप का संबंध *वह कौन है* से है) और उसे *दोषी* ठहराता

है (इसका संबंध *जो उसने किया है* उससे है)। एक ओर, पाप की सामर्थ उसमें राज करती है; दूसरी ओर पाप का *दण्ड* उसकी मृत्यु के लिए पुकारता है। और भले ही वह खुद को पाप की सामर्थ से मुक्त करने के लिए *असहाय* नहीं होगा, फिर भी उसके पाप के दण्ड की वजह से वह *आशारहित* होगा। जब मनुष्य इन भयानक सच्चाइयों को समझता है, तब "यीशु" का नाम उसके लिए कुछ अर्थ रखता है। "तू उसका नाम यीशु रखना; क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से *उद्धार* करेगा।"[1] प्रभु यीशु मसीह अपने लोगों को उनके पापों *से* बचाता है – उनके पापों के *दण्ड* से भी और उनके पापों की *सामर्थ* से भी। वह पहला धर्मी ठहराने में करता है और दूसरा नए जन्म में करता है।

अध्याय 2 में हमने धर्मी ठहराने के विषय में विचार करना आरंभ किया : मनुष्य परमेश्वर के सामने "सही" कैसे रह सकता है? यह दुविधा है जिसने संपूर्ण इतिहास के लोगो को प्रताड़ित किया है। उसी ने मार्टिन लूथर को रोम में *स्केला सैन्क्टा* की सीढ़ियों पर घुटनों के बल चढ़कर जाने के लिए विवश किया, और मठवासियों को प्रेरित किया कि वे उनके पापों की कीमत चुकाने के प्रयास में मछली के कांटे लगी हुई बालों से बनी कमीज़ पहनें। आज भी, वह साऊथ सी आयलैण्ड्स के निवासियों को मुर्गियों का बलि देने और उनका खुन देवताओं के सामने छिड़कने के लिए प्रेरित करता है। अधिक "सभ्य" देशों में, कई लोग "गिरजाघर जाना" या किसी तरह के "अच्छे कामों को करने" से संतुष्ट होते हैं ताकि उनके दोषी विवेक को शांत कर सकें। और हर स्थानों में मनुष्य उनके बुरे कार्यों का बहाना बनाकर या उन्हें तर्क संगत बताकर खुद को "धर्मी ठहराने" का प्रयास करते हैं।

मनुष्य परमेश्वर के साथ सही संबंध कैसे बना सकता है? केवल एक उत्तर है : मनुष्य परमेश्वर के साथ *केवल* प्रभु यीशु मसीह के जीवन और मृत्यु के द्वारा ही सही संबंध बना सकता है जो उसने मनुष्य के लिये सही। "वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया"[2] "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।"[3] केवल मसीह हमें परमेश्वर के साथ सही संबंध में ला सकता है।[4] इस अध्याय में, हम सात सच्चाइयों पर विचार करेंगे जो इस महान विषय के संबंध में पवित्र शास्त्र में सिखाई गई हैं।

धर्मी ठहराए जाना यीशु के लोहू पर आधारित है

"इसलिए जब कि हम अब सब उसके लोहू के कारण *धर्मी ठहरे*, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे?"।[5] "उसके पुत्र *यीशु का लोहू* हमें सब पापों से शुद्ध करता है।"[6] धर्मी ठहराए जाना यीशु के लोहू पर आधारित है इसका अर्थ क्या है? इसका अर्थ यह है कि धर्मी ठहराया जाना छुटकारे के दाम के आधार पर आगे बढ़ता है जो चुकता किया गया है; वह न्याय की संतुष्टि के आधार पर आगे बढ़ता है। दूसरे शब्दों में, जब परमेश्वर मनुष्य को "धर्मी ठहराता है", तब वह व्यक्ति की ओर नहीं देखता, बल्कि वह *मसीह के लोहू* की ओर देखता है। हम "उसके लोहू के द्वारा धर्मी ठहराए गए है!" परमेश्वर मनुष्य को मनुष्य जो कुछ है उसके आधार पर उसे धर्मी नहीं ठहराता। विशिष्ट तौर पर, यह इसलिए नहीं है कि मनुष्य किसी रीति से, आकार से, या स्वरूप से – धर्मी है जिसे परमेश्वर *धर्मी* ठहराता है। हमें रोमियों 4:5 में विशिष्ट रूप से बताया गया है कि परमेश्वर "अधर्मी को धर्मी ठहराता है!" ये सचमुच अद्‌भुत और चौकानें वाले शब्द हैं। क्या आप धर्मी ठहराए जाने के लिए अयोग्य महसूस करते हैं? आप अयोग्य हैं! आपमें जो कुछ भी है वह सब आपके विनाश के लिए पुकारता है। मसीह के लोहू और धार्मिकता के अलावा आपको कोई आशा नहीं है।

मनुष्य में ऐसा कुछ नहीं है जो परमेश्वर को उसे धर्मी ठहराने के लिए प्रेरित करे, जिसमें *उसका पश्चाताप और विश्वास भी शामिल हैं।* पश्चाताप पाप की कीमत नहीं चुकाता। अपराधी के अपराध के लिए उसका पछतावा व्यवस्था की न्यायपूर्ण मांगों को संतुष्ट नहीं कर सकता। न ही *विश्वास* पाप की कीमत चुकाता है! केवल यीशु का लोहू पाप की कीमत चुका सकता है। धर्मी ठहराया जाना *मसीह के लोहू* पर आधारित है।

यदि मेरे उत्साह को कोई अंत न होता,
यदि मेरे आंसू सदा बहते,
फिर भी वे मेरे पापों का प्रायश्चित न कर पाते;
तुझे बचाना है और केवल तुझे।

– ऑगस्टस टॉप्लेडी

इससे यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति का विश्वास कमज़ोर होकर भी उसे क्यों धर्मी ठहराया जाता है। कल्पना करें कि एक खाई पर दो पुल हैं : एक अत्यंत कमज़ोर और अविश्वसनीय है; दूसरा बहुत मज़बूत है। *कमज़ोर* पुल में मनुष्य का अत्यंत *मज़बूत*

विश्वास हो सकता है और वह आत्मविश्वास के साथ उसकी ओर बढ़ सकता है। उसका दृढ़ या मज़बूत विश्वास उसे उसकी मृत्यु में छलांग लगाने से नहीं बचा सकता। दूसरी ओर, *मज़बूत* पुल में मनुष्य का विश्वास अत्यंत *कमज़ोर* हो सकता है और वह डरते हुए और कांपते हुए उस पर आगे बढ़ता है और जैसे–तैसे पुल पार करता है। पुल उसे मज़बूती से थाम रखेगा, भले ही उसका विश्वास कमज़ोर था। उसके लिए आवश्यक था पुल पर जाने के लिए पर्याप्त विश्वास होना। जब किसी ने हडसन टायलर से कहा कि उसे महान विश्वास रखने वाला व्यक्ति होना चाहिए, तो उन्होंने उत्तर दिया, "नहीं, मैं बहुत थोड़े विश्वास वाला व्यक्ति हूं जो अत्यंत महान परमेश्वर में वह थोड़ा विश्वास रखता है।"

जब मृत्यु का दूत फसह के पर्व की रात मिस्र से गुज़रा, तब परमेश्वर केवल एक ही बात की खोज में था – दरवाज़ों की चौखट पर लोहू। "मैं उस लोहू को देखकर छोड़ जाऊंगा।"[7] जो लोग घर के भीतर थे वे भयभीत होगें और कांपते होगें, परंतु उसे कोई फर्क नहीं पड़ता था क्योंकि लोहू लगाया गया था।

सीन एण्ड हर्ड नामक अपने जीवन चरित्र में, प्रवासी स्कॉटिश सुसमाचार प्रचारक जेम्स मॅकेन्ड्रिक जॉर्ज मायेस, के गौरवशाली उद्धार के बारे में बताते हैं, यह व्यक्ति मीलों दूर अपने जिले के सर्वाधिक घोर अपराधी के रूप में कुख्यात था। जब मॅकेन्ड्रिक कुछ समय बाद उस क्षेत्र में लौट आएं जहां मायेस रहता था, तब उन्होंने उसे परेशान मनःस्थिति में पाया। *"मुझे वैसा महसूस नहीं हो रहा है जैसा मुझे होता था,"* जॉर्ज ने दुख के साथ कहा। मॅकेन्ड्रिक ने कहा "जॉर्ज, यदि तुम्हारी जेब में एक शिलिंग होता और तुम अत्यंत आनंदित महसूस करते, तो क्या वह शिलिंग की कीमत पंद्रह पेन्स होती क्योंकि तुम खुश महसूस करते?" *"नहीं,"* जॉर्ज ने कहा। "उसकी कीमत कितनी होती?" *"मात्र बारह पेन्स,"* उसने उत्तर दिया। "और मान लो, यदि तुम दुखी होते और तुम्हारी जेब में एक शिलिंग होता, तो क्या यह मात्र नौ पेन्स कीमत का न होता क्योंकि तुम दुखी थे?"

फिर जॉर्ज ने उत्तर दिया, *"नहीं।"* मॅकेन्ड्रिक ने पूछा "तो कितना?" *"मात्र बारह पेन्स,"* जॉर्ज ने कहा। "क्या तुम देख रहे हो कि तुम्हारा आनंद शिलिंग की कीमत नहीं बढ़ाता, न ही तुम्हारा दुख उसकी कीमत कम करता है, और तुम्हें चाहे जैसा महसूस हो, उसकी कीमत बारह पेन्स ही है?" *"जी हां, यही मैं भी मानता हूं,"* जॉर्ज ने उत्तर दिया। "फिर मुझे बताओ – क्या तुम्हारी आनंद की भावनाएं तुम्हारे पापों को दूर करती है या मसीह का लोहू?" *"मसीह का लोहू,"* जॉर्ज ने उत्तर दिया। "फिर, क्या आप यह

नहीं देख रहे कि जब आप खुश होते हैं, तो ज्यादा सुरक्षित नहीं होते, और जब आप अप्रसन्न होते हैं, तो कम सुरक्षित नहीं होते? मसीह के लोहू ने तुम्हारे पापों को दूर किया है, और यही बात तुम्हें सुरक्षित करती है, और पूरे वर्षभर तुम्हें सुरक्षित रखती है" मॅकेन्ड्रिक ने यह कहकर समाप्त किया। इस बात के लिए हम केवल कह सकते हैं, "हालेलुय्याह!"

मैं प्रेम के शब्दों को सुनता हूं,
मैं लोहू की ओर ताकता हूं,
मैं बड़े बलिदान को देखता हूं,
और परमेश्वर के साथ मेरा मेल है।

यह अनंतकालिक मेल है!
यहोवा के नाम जैसा निश्चित;
यह उसके दृढ़ सिंहासन जैसा स्थिर है,
सदा के लिए एक साथ।

बादल जाएंगे और आएंगे,
आसमान में तूफान घुमड़ता रहेगा –
यह लोहू की मुहर–छाप मित्रता बदलेगी नहीं;
क्रूस सदा निकट है।

– होरेशियस बोनर

मसीही, क्या आप विश्वास के लिए *अपने भीतर* देख रहे हैं? आपको वह कभी नहीं मिलेगा! समुद्री जहाज के बड़े बड़े लंगरों को भी उनकी खोल में रख दिया जाए, तो उनसे कोई लाभ नहीं होगा। उन्हें जहाज के बाहर रखना होगा! अपने लंगर को यीशु मसीह पर डाल दें! अपना पूरा भरोसा उसमें रखें! केवल उसकी धार्मिकता आपका भरोसा और आपकी आशा है।

धर्मी ठहराने का अर्थ है 'धर्मी घोषित करना'

धर्मी ठहराने का अर्थ 'धर्मी घोषित करना' है; उसका अर्थ धर्मी बनाना नहीं है। जब परमेश्वर हमें धर्मी ठहराता है, तब वह इस बात की *घोषणा करता है* कि 'बाहर में'

(अर्थात वस्तुपरक तौर पर) हमारे विषय में कुछ सच है; वह घोषणा करता है कि हम उसकी व्यवस्था की दृष्टि में धर्मी ('सही') हैं। धर्मी ठहराया जाना हमें अंदर से अच्छा नहीं बनाता। (परमेश्वर हमें अंदर से 'अच्छा' बनाता है, परंतु इसका संबंध नए जन्म से है – नया मनुष्य *धार्मिकता* के साथ और सत्य की पवित्रता में *सृजा गया*"[8]) इसके विपरीत, धर्मी ठहराना एक कथन है (न्यायिक घोषणा है) जो परमेश्वर की व्यवस्था की दृष्टि में हमारे स्थान से संबंधित है।

यह सच्चाई की धर्मी ठहराया जाना हमारे पक्ष के संबंध में घोषणा है, इस बात से स्पष्ट किया जाता है कि "धर्मी ठहराए जाने" का विरूद्ध शब्द है "दोषी ठहराना" : "परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा'? परमेश्वर वह है जो उनको धर्मी ठहराने वाला है।"[9] जब न्यायाधीश मनुष्य को "दोषी ठहराता है," तो वह मनुष्य को अंदर से नहीं बदलता, बल्कि "उसके विरोध में आरोप लगाता है।" वह उसे कानून के नज़रों में *दोषी* घोषित करता है। उसी तरह, जब न्यायाधीश किसी व्यक्ति को "धर्मी ठहराता है" तब वह मनुष्य अंदर से जैसा है उसे नहीं बदलता, परंतु उसे कानून की नज़र में *सही* घोषित करता है।

धर्मी ठहराए जाने के कोई क्रम या अंक नहीं होते

मनुष्य या तो सौ प्रतिशत धर्मी होता है, या वह दंड़ित होता है। यदि हत्यारे पर सात हत्याओं के लिए आरोप लगाया गया है और केवल एक से उसे दोषमुक्त किया गया है, तौभी वह दंड़ित व्यक्ति है! पाठकों, यदि आपके पास, यदि *एक पाप* भी है जिसके लिए आपको खुद कीमत अदा करना है, तो आप हमेशा के लिए नर्क में होगें! मसीही व्यक्ति के लिए, दंड की आज्ञा *नहीं* है। बिल्कुल भी नहीं! "इसलिए अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं।"[10] यदि आप मसीह के हैं, तो आप उसमें *सौ प्रतिशत धर्मी ठहराए गए हैं*; आपके विरोध में *शून्य* दंड की आज्ञा है। परमेश्वर की व्यवस्था की दृष्टि में जो धार्मिकता आपके पास है, वह मात्र अच्छी नहीं है; वह मसीह की धार्मिकता है; वह "परमेश्वर की धार्मिकता" है! "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।"[11]

धर्मी ठहराए जाने को कोई क्रम नहीं है! हे मसीही, इस सत्य को थाम ले! शैतान तेरे मन में यह विचार डालने का प्रयास करेगा कि तू परमेश्वर की व्यवस्था की दृष्टि में कम–से–कम *बिल्कुल थोड़ा–सा* दोषी है। तू बिल्कुल दोषी नहीं है! अद्भुत! प्रेरित

पौलुस परमेश्वर को हमसे बेहतर जानता था, परंतु वह हमसे *बिल्कुल भी* अधिक धर्मी नहीं था! न ही *स्वयं प्रभु यीशु* हमसे अधिक धर्मी है, क्योंकि उसकी धार्मिकता हमारी धार्मिकता है! हमारा धर्मी ठहराया जाना *सिद्ध और परिपूर्ण है।*

यीशु तेरा लोहू और धार्मिकता मेरी सुंदरता है,
और मेरी महिमामय पोशाक;
धधकते संसार के मध्य, यह पहनकर, आनंद के साथ
मैं अपना सिर उठाऊंगा!

यह निष्कलंक वस्त्र प्रकट होगा, जब विनष्ट स्वभाव
उम्र में बढ़ता जाएगा;
उम्र उसके महिमामय रंगों को नहीं बदल सकती, मसीह की
पोशाक सदा नई है।

— निकोलस वॉन ज़िन्ज़ेडॉर्फ

धर्मी ठहराया जाना क्षमा से अधिक है

कई सरकारों में अध्यक्ष या राज्यपाल के पास अपराधियों को *क्षमा करने* की सामर्थ होती है। इसे "executive clemency." कहा जाता है। जाना जाता है कि राष्ट्रों ने पूर्व राष्ट्राध्यक्षों को क्षमा की है, और राज्यपालों ने अपने पद के अंतिम कार्य के रूप में ऐसे सारे अपराधियों को क्षमा की है जिन्हें मृत्युदंड घोषित किया गया था। कुछ सवाल उठते हैं, "जब इन लोगों को क्षमा की गई, तब *क्या उनके अपराधों की कीमत चुकाई गई?* उत्तर है, "नहीं!" *"क्या व्यवस्था या कानून का डरावना दंड पूरा हुआ?"* "फिर से, नहीं!" *"क्या न्याय को सन्तुष्ट किया गया?"* "नहीं! ये सारे नकारात्मक उत्तर इस सत्य से प्रवाहित होते हैं कि क्षमा पाप के भुगतान के आधार पर नहीं मिलती। क्षमा अपराधी को 'मुक्त कर देती है।' कानून का विधान कभी पूरा नहीं किया जाता।" *क्षमा राज्यपाल द्वारा अधिकार का कार्य है।*

इसके विपरीत, *धर्मी ठहराया जाना न्यायाधीश की घोषणा है,* वह न्याय के आधार पर आगे बढ़ती है। हे मसीही, जब परमेश्वर तुझे धर्मी ठहराता है, तब वह तुझे तेरे पाप अब भी मध्य आकाश में "खुंटी से लटकए हुए" नहीं रखता है। वह यह *बहाना* नहीं बनाता कि तेरे पापों का भुगतान हो चुका है। बल्कि वह देखता है कि मसीह द्वारा

सचमुच तेरे पापों का भुगतान किया गया है, और उस तथ्य के आधार पर वह *घोषणा* करता है। वह सब कुछ वास्तव में जैसा है उसके विषय में घोषणा करता है। यदि यह सच न होता, तो कोई रास्ता नहीं है कि कोई विश्वासी अपना सिर उठाकर चलें। कॅरेल एव्हरेट, पूर्व गर्भपात करवाने वाली के विषय में सोचें, जो दस हज़ारों मौतों के लिए जिम्मेदार थी। डेविड बर्कोविज, पूर्व "सॅम के पुत्र" सीरियल हत्यारे के विषय में सोचें, जो अब मसीह में विश्वासी है। खुद के विषय में सोचें!

पश्चातापी पापी केवल एक ही तरह से *अपना सिर ऊंचा रख सकता है,* यह जानने के द्वारा की उसके पापों का वास्तव में भुगतान हो चुका है! यदि वह सोचता है कि उसे केवल "खुंटी से छोड़ दिया है," तो पश्चातापी पापी अपने पिछले अपराधों के लिए दोषभावना के साथ जीने के बजाय नर्क में न्याय को संतुष्ट करना अधिक पसंद करेगा। प्रिय मसीही, आपके पापमय अतीत में कुछ भयानक यादें होगी, परंतु आप इस विषय में निश्चित रह सकते हैं कि: वो पाप अब बीच हवा में नहीं लटक रहे हैं। वे प्रभु यीशु मसीह पर *उतर आए हैं!*[12] और उसने *वास्तव में* उनका भुगतान किया है! उसने क्रूस पर अपने शरीर में आपके पापों को *उठा लिया।*[13]

धर्मी ठहराया जाना सकारात्मक भी है और नकारात्मक भी

धर्मी ठहराया जाना सकारात्मक भी है और नकारात्मक भी। हम इस सत्य को रोमियों 4:6–8 में स्पष्ट रूप से देखते हैं :

> *जिसे परमेश्वर बिना कर्मों के धर्मी ठहराता है, उसे दाऊद भी धन्य कहता है, कि धन्य वे हैं, जिनके अधर्म क्षमा हुए, और जिनके पाप ढांपे गए। धन्य हैं वह मनुष्य जिसे परमेश्वर पापी न ठहराए।*

सबसे पहले, धर्मी ठहराए जाने का एक *नकारात्मक* पक्ष है : परमेश्वर हमारे पाप हम पर "*नहीं* लादता।" हमारे पाप "ढांप दिए गए हैं," और वह "उनकी गिनती नहीं करता" (वचन 7–8)। परमेश्वर ऐसा केवल इसलिए कर सकता हैं क्योंकि हमारे पाप का कर्ज़ मसीह पर लादा गया और उसने उसका भुगतान किया। हम प्रभु यीशु मसीह की शिक्षा से सिखते हैं कि पाप की तुलना पैसों के कर्ज़ से उचित रीति से (कुछ बातों में) की जा सकी है : "और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही आप भी हमारे अपराधों को क्षमा करें।"[14] हम में से प्रत्येक परमेश्वर के न्याय के प्रति अत्यंत बड़ा

कर्ज़ रखता है। यह कर्ज़ कितना बड़ा है? मत्ती के 18वें अध्याय में, यीशु परमेश्वर के प्रति हमारे कर्ज़ की तुलना करते हुए उस व्यक्ति का दृष्टांत बताता है जिस पर राजा का दस हज़ार तोड़ों का कर्ज़ था। यह साधारण मज़दूर के *164,000 वर्षों* के काम के बराबर है, जिसमें उसे रविवार के दिन या अन्य छुट्टियां नहीं मिलेगी! परमेश्वर के न्याय के प्रति हमारा कर्ज़ सचमुच *अत्यंत* बड़ा है, परंतु मसीह क्रूस पर अपने लोगों के लिए उस कर्ज़ का भुगतान करता है। यह वापस हमें शून्य की ओर ले आता है; हमारा कोई कर्ज़ नहीं है; परंतु उसी समय, हमारे पास बैंक में कोई पैसा भर नहीं है।

परंतु धर्मी ठहराए जाने का एक *सकारात्मक* पक्ष भी है : परमेश्वर अपने खाते से "धार्मिकता लेकर" हम पर अपनी "आशीष" रखता है। (वचन 6) दूसरे शब्दों में, मसीह ने न केवल हमारा कर्ज़ अदा किया है; परंतु वह हमारे लिए बैंक में बड़ा धन भी रखता है। मनुष्य के रूप में उसकी सिद्ध आज्ञाकारिता के द्वारा, वह परमेश्वर की दृष्टि में एक सकारात्मक धार्मिकता पूरी करता है जो हमारे खाते में जमा की गई है। मसीह ने "अंतिम आदम"[15] के रूप में हमारा स्थान लिया और बिल्कुल वही सफल हो गया जहां पहला आदम असफल हो गया : "क्योंकि जैसे एक मनुष्य के *आज्ञा न मानने* से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के *आज्ञा मानने* से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे।"[16]

इसका अर्थ समझने के लिए, हमें यह समरण रखना है कि व्यवस्था का सकारात्मक पक्ष भी है और नकारात्मक पक्ष भी। एक और, व्यवस्था यह डर दिखाती है कि "जो प्राणी पाप करेगा वह मर जाएगा।"[17] परंतु दूसरी और, व्यवस्था यह प्रतिज्ञा करती है कि "जो उनको मानेगा, वह उनके कारण जीवित रहेगा।"[19] "जीवन" की इस प्रतिज्ञा का यहूदियों के लिए *अस्थायी संसारिक* उपयोग भी है, जब तक कि उन्होंने मूसा की व्यवस्था की बाहरी आज्ञाओं का पालन किया, वे परमेश्वर द्वारा उन्हें दिए गए देश में "जीवित रहते।" परंतु प्रतिज्ञा का गहरा अर्थ भी है – उसका संबंध न केवल "देश के जीवन" से है, परंतु *अनंत* जीवन से भी है। प्रभु यीशु ने एक से अधिक अवसरों पर इस बात को स्पष्ट किया है : "और देखो, एक व्यवस्थापक उठा और यह कहकर, उसकी परीक्षा करने लगा कि हे गुरु, *अनन्त जीवन* का वारिस होने के लिए मैं क्या करूं? उसने उससे कहा, "व्यवस्था में क्या लिखा है? तू कैसे पढ़ता है?" उसने उत्तर दिया, "तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।" उसने उससे कहा, "तू ने ठीक उत्तर दिया; यही कर, तो तू *जीवित रहेगा*।"[19]

उसी तरह, जब "धनवान व्यवस्थापक" ने यीशु से पूछा "उसने उससे कहा, "तू मुझसे भलाई के विषय में क्यों पूछता है? भला तो एक ही है, पर यदि तू जीवन में प्रवेश करना चाहता है, तो आज्ञाओं को माना कर।"[20] इसका अर्थ यह है कि जो लोग सिद्ध रूप से व्यवस्था का पालन करते हैं वे व्यवस्था की दृष्टि में अपनी धार्मिकता को पूरी करने के द्वारा अनंत *जीवन कमा* सकते हैं या उसके *योग्य* बन सकते हैं।[21] "क्योंकि मूसा ने यह लिखा है, कि जो मनुष्य उस धार्मिकता पर जो व्यवस्था से है, *चलता है,* वह इसी कारण *जीवित* रहेगा।"[22] मानव इतिहास में केवल एक व्यक्ति ने ऐसा किया; बाकी सब बुरी तरह से चूक गए। केवल प्रभु यीशु मसीह ने सारी धार्मिकता को पूरा किया।[23] उसने न केवल हमारे पापों की कीमत चुकाई; बल्कि उसने सिद्ध धार्मिकता का जीवन भी बिताया जो हमारे खाते में जोड़ा गया है, और उसकी *धार्मिकता* का "वरदान" पाकर, हम *जीवन* के हकदार हो गए हैं![24] न केवल *हमारा* श्राप उस पर पड़ा, बल्कि *उसकी आशीष* हमें मिली।

पौलुस रोमियों 5:1–2 में धर्मी ठहराए जाने के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों परिणामों को व्यक्त करता है : रोमियों 5:1–2 : "इसलिए जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें, जिसके द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक, जिसमें हम बने हैं, हमारी पहुंच भी हुई; और *परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमण्ड करें।*" धर्मी ठहरा जाने का पहला परिणाम नकारात्मक है : अब हम श्राप के अधीन नहीं है। *हमारा परमेश्वर के साथ मेल हुआ है* – केवल हमारी ओर से मेल नहीं, परंतु परमेश्वर की ओर से मेल। जब अपराधी अपनी बंदूक नीचे रख के आत्म समर्पण करता है, तब उसका पीछा करने वाली पुलिस ऐसा नहीं करती। वह तब तक अपने हथियार को अपराधी पक्ष के लिए सुसज्जित रखता है जब तक कि वह सुरक्षित रूप से कैद न कर लिया जाए और अंततः न्याय संतुष्ट न हो जाए। केवल तब वह अपने हथियारों को नीचे रखता है। धर्मी ठहराए जाने की महिमा यह है कि *परमेश्वर* अब हमारा शत्रु नहीं है – न्याय की मांग पूरी हो चुकी, हमारे पापों का दंड अदा कर दिया गया और परमेश्वर अब आदर के साथ "अपनी बंदूक नीचे रखता है।" *वह* हमारे साथ मेल करता है।

धर्मी ठहराए जाने का दूसरा परिणाम सकारात्मक है : *हम इसी समय परमेश्वर की महिमा* (स्वर्ग) *की आशा* (भरोसे के साथ अपेक्षा) *में आनंद मना सकते हैं।* अब हम श्राप के अधीन नहीं हैं; इतना ही नहीं, हमारे पास अनंत जीवन है – इसी समय। अनंत

जीवन ऐसी बात नहीं है जो हमें किसी दिन मिल *सकती* है, परंतु वर्तमान संपत्ति है। "मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, *परन्तु वह मृत्यु के पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।*"[25] परमेश्वर को महिमा मिले! मसीह द्वारा जो महिमा *कमाई गई,* वह हमें *दी गई* है।

धर्मी ठहराया जाना हमेशा के लिए है

"इसलिए जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।"[26] धर्मी ठहराया जाना हमेशा के लिए है, भूतकाल में पूरी की गई घटना है उसके परिणाम हमेशा तक बने रहते हैं। मनुष्य पहले धर्मी ठहराया जाकर फिर दंड़ित ठहराया नहीं जाता, और फिर से धर्मी ठहराया नहीं जाता। धर्मी ठहराया जाना हमेशा के लिए है। इसका अर्थ यह है कि *धर्मी ठहराया जाना हमें परमेश्वर में नए स्थान, स्थिति या दर्जे में लाकर रखता है।* "जिसके द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक, जिसमें हम बने हैं, हमारी पहुंच भी हुई; और परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमण्ड करें।"[27] मसीहियों के पास पूर्ण रूप से नया स्थान है, और यह नया स्थान *अनुग्रह* में है।

हमेशा के लिए एक बार धर्मी ठहराए जाने का चमत्कार और अनुग्रह में हमारा नया स्थान इस प्रकार समझाया जा सकता है : मान लीजिए कि एक मसीही पति नींद से उठता है और अपनी पत्नी के साथ निर्दयता का व्यवहार करता है, परंतु दूसरे दिन तक उसे अपने पाप का एहसास नहीं होता। फिर उसे ध्यान में आता है कि उसने क्या किया है, वह परमेश्वर से क्षमा मांगता है और उसकी पत्नी से क्षमा मांगता है। उसका पिछला कार्य सचमुच *पाप* था, भले ही उस समय उसे उसका पूर्ण एहसास नहीं था। अब आगे मान लीजिए कि यह मनुष्य अपने पाप का एहसास होने और उसे अंगीकार करने से पहले मर जाता है। तो क्या वह नर्क जाएगा? अवश्य ही नहीं! उसके पापों का एहसास होने के बाद अंगीकार के उसके पहले शब्द दिखाते हैं कि परमेश्वर के साथ उसका स्थान पूरे समय *पुत्रत्व* का था :*"पिता,* मेरे निर्दयता के लिए मुझे क्षमा कीजिए।" कई लोग इस विश्लेषण से सहमत होते हैं, परंतु बहुत कम लोगों ने उसका अर्थ क्या है इसका एहसास रखना बंद कर दिया है। इसका अर्थ यह है कि मसीही व्यक्ति *धर्मी अवस्था में बना रहता है,* उस समय के दौरान भी जो पाप करने और उस पाप का

अंगीकार के बीच बीत जाता है! दूसरे शब्दों में, पाप करने और उसके अंगीकार के बीच *पाप उसके लेखे में गिना नहीं जाता।*

इस मामले का दावा और मज़बूती से किया जा सकता है। मान लीजिए कि यह मसीही पति सुबह उठता है और अपनी पत्नी के साथ विवाद करता है, और *जानता* है कि उसने उसके साथ निर्दयता का व्यवहार किया है। अपना पाप कबूल करने के बजाय, वह गुस्से में काम पर चला जाता है। पूरी सुबह वह दुखी रहता है। अंत में, उससे सहा नहीं जाता, वह अपना सिर झुकाता है और परमेश्वर से क्षमा मांगता है, फिर अपनी पत्नी को फोन लगाता है और उससे क्षमा मांगता है। मान लीजिए कि क्षमा मांगने से पहले यह व्यक्ति मर गया होता तो क्या वह नर्क गया होता? फिर से, उत्तर है, "अवश्य ही नही!" वह पूरी सुबह क्यों दुखी था, क्या इसलिए नहीं कि उसके विद्रोह के *पूरे* समय वह नवीनीकरण प्राप्त *परमेश्वर की संतान नहीं था?*

यह कहने का अर्थ, मात्र यह कहना है कि सच्चा मसीही हर समय *धर्मी अवस्था में बना रहता है।* क्यों? क्योंकि परमेश्वर के साथ उसका संपूर्ण नया स्थान होता है। मसीही व्यक्ति अब अपराधी नहीं है जो परमेश्वर के क्रोध के अधीन रहे; वह पुत्र है जो प्रेमी पिता की देखभाल के अधीन है।[28] जैसा कि किसी भी प्रेमी पिता के साथ होता है, परमेश्वर को कभी–कभी अपने बच्चों को ताड़ना देना पड़ता है, परंतु *ताड़ना* न्यायिक दंड से भिन्न है। कठोर शब्दों में, तो दंड न्याय की संतुष्टि के लिए लादा गया क्लेश है। दूसरी ओर, ताड़ना अपराध करने वाले की भलाई के लिए लादा गया क्लेश है। दोनों के बीच बहुत बड़ा अंतर है!

धर्मी ठहराया जाना हमेशा के लिए है। यदि यह सच न होता, तो हम जितनी बार एक भी पाप करते, तो हम हमारा उद्धार खो बैठते, और हम सनातन दंड के लायक हो जाते, जब तक कि हम उस पाप को कबूल करने के क्षण में नहीं पहुंचते और फिर से धर्मी नहीं ठहराए जाते (और उद्धार नहीं पाते)! यह धर्मी ठहराए जाने का, या मसीही जीवन का स्वरूप नहीं है।

हमेशा के लिए धर्मी ठहराए जाने को इब्रानियों 10:1–4 के लेखक ने स्पष्ट रूप से समझाया है :

> *क्योंकि व्यवस्था जिसमें आनेवाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है, पर उनका असली स्वरूप नहीं, इसलिए उन एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा, जो प्रति वर्ष अचूक चढ़ाए जाते हैं, पास आनेवालों को कदापि सिद्ध नहीं कर सकती।*

नहीं तो उनका चढ़ाना बन्द क्यों न हो जाता? इसलिए कि जब सेवा करनेवाले एक ही बार शुद्ध हो जाते, तो फिर उनका विवेक उन्हें पापी न ठहराता। परन्तु उनके द्वारा प्रति वर्ष पापों का स्मरण हुआ करता है। क्योंकि अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे।[29]

यहां पर जो विवाद प्रस्तुत किया गया है उस पर ध्यान दें। "हम जानते हैं कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को उठा नहीं सकता क्योंकि उन्हें हर साल बार–बार बलिदान किया जाता था।" कभी–कभी हम यह कहकर प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकते हैं, "इससे क्या साबित होता है? हर साल उन्हें बलिदान चढ़ाना पड़ता था क्योंकि हर साल नए पाप किए जाते थे। हर साल के पाप नया दंड ले आते थे।" परंतु इब्रानियों की पत्री के अनुसार, इस प्रकार के उत्तर से धर्मी ठहराए जाने के सच्चे स्वरूप के विषय में गलतफहमी उत्पन्न होती है। जब आराधक "एक बार शुद्ध हो गया," तो अब "पापों का और एहसास" (इब्रानियों 10:2) नहीं है। जब मसीह का लोहू लगाया जाता है, तो हम "हमेशा के लिए सिद्ध किए जाते हैं!" "क्योंकि उसने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सर्वदा के लिए सिध्द कर दिया है। और पवित्र आत्मा भी हमें यही गवाही देता है; क्योंकि उसने पहले कहा था"[30] दूसरे शब्दों में, नई वाचा की प्रतिज्ञा की परमेश्वर "हमारे पापों को अब कभी स्मरण नहीं करेगा" का अर्थ है, जहां तक व्यवस्था और न्याय के संतुष्ट किए जाने की बात है,*परमेश्वर की दृष्टि से "पापों का सारा वर्ग हमेशा के लिए मिट गया।* विश्वासी उनके विवेक[31] में "सिद्ध किए गए" हैं और अब उन्हें परमेश्वर के क्रोध के संबंध में "पाप का एहसास"[32] नहीं रखना है! इस अर्थ से, नई वाचा में, "पाप का कोई स्मरण नहीं है।"[33] "और जब इनकी क्षमा हो गई है, तो फिर पाप का बलिदान नहीं रहा।"[34]

"हम यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं।"[35]

इन सारी बातों का प्रतिदिन के जीवन में क्या अर्थ है? इसका अर्थ यह है कि मसीह होने के नाते, मैं नींद से जाग सकता हूं और जान सकता हूं कि मैं मसीह में *स्वीकार किया गया* हूं। परमेश्वर अपनी संतान के रूप में मुझमें *आनंदित होता है,* और मेरे पापों का दोष हमेशा के लिए मिट गया। यदि मैं पाप करता हूं, तो मुझे *बालक* के रूप में मेरे पाप का "एहसास" है, *दोषमुक्त व्यक्ति के* रूप में नहीं, और मैं परमेश्वर के सामने अपना पाप वैसे ही कबूल करता हूं, जैसे पुत्र पिता के सामने कबुल करता है,

अपराधी न्यायाधीश के सामने कबूल करता है उस प्रकार नहीं। मैं *यीशु के लोहू के द्वारा* इस पवित्र स्थान में *हियाव* के साथ आता हूं।[36] "परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा? परमेश्वर वह है जो उनको धर्मी ठहरानेवाला है। फिर कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा? मसीह वह है जो मर गया, वरन् मुर्दों में से जी भी उठा, और परमेश्वर की दाहिनी ओर है, और हमारे लिए निवेदन भी करता है। कौन हमको मसीह के प्रेम से अलग करेगा?"[37]

धर्मी ठहराया जाना विश्वास से ग्रहण किया जाता है

"इसलिए जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।"[38] मसीह का लोहू धर्मी ठहराए जाने का *आधार* है, परंतु विश्वास वह *ज़रिया* या माध्यम है जिसके द्वारा हम "धार्मिकता का वरदान" पाते हैं।[39] *"उध्दार पाने के लिये मै क्या करू'?* उन्होंने कहा, "प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा"[40]

विश्वास क्या है? विश्वास कोई *बल* या *सामर्थ* नहीं है जिसका हम इस्तेमाल करते हैं जो हाथ बढ़ाकर काम पूरा करें। न ही कोई "अपने विश्वास को मुक्त करता है," जब कि झूठे भविष्यद्वक्ता हमें ऐसा करने हेतु प्रोत्साहित करते हैं। विश्वास इस प्रकार की गलत धारणाओं के विपरीत है। धर्मी ठहराने वाला विश्वास कुछ "करना" नहीं है, बल्कि, वह *कुछ भी करना छोड़ना है* और केवल परमेश्वर की दया पर निर्भर रहना है। इस बात को एक बहन की गवाही में समझाया गया है, मसीह में विश्राम पाने से पहले वह बहुत संघर्ष से गुजरी। अपनी खोई हुई दशा का उसे एहसास था और खुद को नर्क जाने से बचाने के लिए उसने सब कुछ करने का प्रयास किया, और उसने पाया कि वह हार रही है : "मुझे ऐसा लगा मानो मैं अपनी उंगलियों के सहारे खड़ी चट्टान के किनारे के सहारे से लटक रही हूं। मेरे नीचे नर्क था मैं नर्क नहीं जाना चाहती थी और नर्क जाने से खुद को रोकने का प्रयास करते–करते मैं बहुत थक चुकी थी। अंत में, मुझे पकड़े रहना मुश्किल हो गया। *मैंने हाथ छोड़ दिया और गिर गई...सीधे यीशु की प्रेमी बाहों में।"* यही विश्वास है!

यह भी देखें कि हमारा उद्धार *कुल तौर पर विश्वास* से नहीं हुआ; हम *मसीह में विश्वास* के द्वारा बचाए गए हैं। कुछ लोग पिछले 'निर्णय' पर विश्वास करते हैं, परंतु 'निर्णय' पाप का दाम नहीं चुकाएगा! कुछ लोग बपतिस्मा, पिछला भावनात्मक अनुभव,

या उनके तथाकथित 'विश्वास' में भरोसा रखते हैं। एक बुजुर्ग व्यक्ति के जीवन में सच्चे उद्धार का कोई प्रमाण दिखाई नहीं दे रहा था। उससे पूछा गया कि क्या वह अनंत काल के विचार से परेशान होता है, तब उसने उत्तर दिया, 'नहीं, मैं बिल्कुल परेशान नहीं होता, क्योंकि बाइबल कहती है कि यदि तुम्हारे पास विश्वास है, तो तुम्हारा उद्धार होगा, और *मेरे पास बहुत विश्वास है।* यह व्यक्ति किस बात में भरोसा कर रहा था? मसीह में या उसके लोहू में नहीं, परंतु उसके अपने 'विश्वास' में। मसीही व्यक्ति का भरोसा पूर्णतया भिन्न होता है। यदि इस क्षण अचानक हमारे पांव के तले से ज़मीन खिसक जाती है, तो प्रत्येक मसीही पुकारेगा, "प्रभु यीशु!" कोई यह नहीं चिल्लाएगा, "मेरा विश्वास!"

विश्वास वह आंख है जो खुद की ओर नहीं देख सकती। विश्वास उसके विषय के साथ केंद्रित हो जाता है, और वह विषय है प्रभु यीशु मसीह। "और जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊंचे पर चढ़ाया जाए, ताकि जो कोई विश्वास करे, उसमें अनन्त जीवन पाए।"[41] यहां यीशु हमें बताता है कि खम्भे पर लटका सांप वास्तव में क्रूस पर उसकी पूर्व छाया दिखाता था। सांप के संबंध में लोग कैसे बचाए गए? "यहोवा ने मूसा से कहा, एक तेज विषवाले सांप की प्रतिमा बनवाकर खम्भे पर लटका; तब जो सांप से डसा हुआ उसको देख ले वह जीवित बचेगा।"[42] उसे क्या विश्वास करना है? विश्वास करने का अर्थ है "देखना!" देखो और जीवित रहो! आपका पूरा भरोसा यीशु मसीह पर रखें और उद्धार पाएं।

'देखो और जिओ', मेरे भाई जिओ, यीशु को देखो
अब और जिओ!
'उसके वचन में लिखा है, हालेलुय्याह!' केवल यह कि
तू 'देख और जीवित रह।'

— डब्ल्यू. ए. ऑग्डेन

शास्त्रसंदर्भ

1 मत्ती 1:21.

2 1पतरस 2:24;

3 2कुरिन्थियों 5:21;

4 यूहन्ना 14:6;
5 1तिमुथियुस 2:5–6;
6 प्ररितों के काम 4:12;
7 रोमियों 5:9;
8 1यूहन्ना 1:7.
9 निर्गमन 12:3.
10 इफिसियों 4:24;
11 रोमियों 8:33:34;
12 रोमियों 8:1;
13 2कुरिन्थियों 5:21.
14 यशायाह 53:6;
15 1पतरस 2:24;
16 मत्ती 6:12
17 12कुरिन्थियों 15:42;
18 रोमियों 5:19;
19 यहेजकेल 18:4;
20 गलातियों 3:12;
21 लैव्य 18:4;
22 लुक 10:25–28 (तुलना करें लैव्य 18:4);
23 मत्ती 19:16–17;
24 फिलिप्पियों 3:9;
25 रोमियों 10:5;
26 मत्ती 3:15;
27 रोमियों 5:1.
28 यूहना 5:24;
29 रोमियों 5:1;
30 रोमियों 5:1–2
31 गलातियों 4:4–7.
32 इब्रानियों 10:1–4;
33 इब्रानियों 10:14–17;
34 इब्रानियों 9:9, 13–14;

35 इब्रानियों 10:1–2;
36 इब्रानियों 10:3;
37 इब्रानियों 10:18;
38 इब्रानियों 10:10.
39 इब्रानियों 10:19–22;
40 रोमियों 8:33–35;
41 रोमियों 5:17;
42 प्रेरितों के काम 16:30–31.
43 यूहन्ना 3:14–15;
44 गिनती 21:8.

अध्याय – 4

नया जन्म

सब कुछ नया

हमने देखा कि पाप मानवजाति की परम और एकमात्र समस्या है, और पाप के साथ मनुष्य की समस्या के दो पक्ष हैं, एक अंदरूनी और दूसरा बाहरी। आदम के प्रत्येक पतीत संतान का न केवल *बुरा हृदय* है, बल्कि परमेश्वर की व्यवस्था की दृष्टि में उसका *बुरा लेखा* भी है। पाप उसे *दूषित करता है* और उसे *दोषी ठहराता है;* उसकी *सामर्थ* उसमें राज करती है और उसका *दंड* उस पर रहता है। मनुष्य *असहाय* भी है और *आशारहित* भी है – उसकी दशा सचमुच *असंभव* है। इस अंधकार और निराशा की परिस्थिति में एक बड़ी ज्योति चमक उठी है।[1] *यीशु* आया है। वह *अपने लोगों को* पापों के दंड से और उनके पापों की सामर्थ से *बचा सकता है।* वह उसे *धर्मी ठहराकर* दंड से छुड़ाता है; और *नया जन्म देकर* वह उसे पाप की सामर्थ से छुड़ाता है।

दूसरे और तीसरे अध्यायों में, हमने धर्मी ठहराए जाने के बाइबल के महान सिद्धांत पर विचार किया। अब हम नए जन्म के विषय पर सोचेंगे। धर्मी ठहराया जाना *स्वर्ग* में है, परमेश्वर की अदालत में। दूसरी ओर, नया जन्म *पृथ्वी* पर होता है, मनुष्य के हृदय

में। धर्मी ठहराया जाना न्यायाधीश द्वारा *घोषणा* है; नया जन्म सर्वशक्तिमान सृजनहार की ओर से *रचना का कार्य* है।

विश्वविद्यालय से दृष्टांत

हर एक कॉलेज या विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रम के अंत में "A" हासिल करने के लिए विद्यार्थी परिश्रम करते हैं। जब मैं विद्यार्थी था, तब मैं भी ऐसा ही करता था। परंतु एक कक्षा थी जो अलग थी। यह ऊंचे दर्जे का पाठ्यक्रम था जो केवल भौतिक विज्ञान और रसायन विज्ञान लेने वाले विद्यार्थी पढ़ते थे, और इस कक्षा में केवल 4 या 5 विद्यार्थी थे। व्याख्यानों के पहले दिन, अध्यापक ने यह घोषणा करके हमें अचंभित कर दिया : "इस पाठ्यक्रम में तुम्हारे अंक के विषय में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है – तुम सबको "A" मिलेगा। अब हम बैठकर केवल इस सामग्री का आनंद उठाएंगे।"

परमेश्वर हमे धर्मी ठहराने में यही करता है। परमेश्वर हमें मसीह जीवन के आरंभ में "A" देता है! हम हमारे पाठ्यक्रम के अंत में अनंत जीवन के लायक बनने के लिए परिश्रम नहीं करते; हमारे *पास* अनंत जीवन है।[3] हम *इस समय* आनंदित होते हैं कि हृदय की कुछ और धड़कनों के बाद ही, हम स्वर्ग में होंगे![4]

खोए हुए धार्मिक लोगों के पास इस शिक्षा के प्रति दो प्रकार की प्रतिक्रियाएं होती हैं। एक ओर, *विधीवादी* उससे घृणा करते हैं। यह खुद को धार्मिक समझने वाला फरीसी केवल "अच्छे काम" करता है क्योंकि वह अपने जीवन के अंत में "A" प्राप्त करने की कोशिश करता है। यदि वह उसे मिल पाता, तो वह पाप में जीवन जीना पसंद करता, और वह इस बात से अप्रसन्न रहता है कि उसे यह करने नहीं मिलता। उसका आक्षेप है : "यदि परमेश्वर मनुष्यों को मसीही जीवन के आरंभ में अनंत जीवन देता है, तो कौन–सी बात उन्हें पाप में बने रहने से रोकेगी? यदि वह मनुष्यों को पाठ्यक्रम के आरंभ में "A" देता है, तो कोई उस सामग्री का अध्ययन नहीं करेगा।"[5]

दूसरी ओर, *व्यवस्था विरहित* धार्मिकजन विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने की शिक्षा *पसंद करता* है। "मुझे पहले ही "A" मिल गया! अब मैं अपनी पुस्तकें कचरें में फेंक सकता हूं, मुझे अध्यापक की ओर ध्यान देने की ज़रूरत नहीं है, और मैं मनमानी कर सकता हूं।" ऐसे लोग "परमेश्वर के *अनुग्रह* को लुचपन में बदल देते हैं।"[6] वे "विनामूल्य अनुग्रह" को "पाप करने की *सहूलियत*" में बदल देते हैं। "आसान विश्वासवाद" के इन

दिनों में देशभर की कलीसियाएं ऐसे ही परिवर्तन न पाए हुए लोगों से भरी पड़ी है – खोए हुए लोग जो खुद को "शारीरिक मसीही" सोचना पसंद करते हैं।

विधीवादी और लमपट लोगों के तर्क में गलती क्या है? क्या परमेश्वर हमारे पाठ्यक्रम के आरंभ में हमें केवल यह संभव बनाने के लिए "A" देता है कि हम कक्षा में न जाए और फिर भी अच्छे अंक प्राप्त करें? क्या वह धर्मी ठहराए जाने में *कानुनी तौर पर* अपराधी के अपराधों का भुगतान करता है, केवल इसलिए कि अपराधी हत्या करता रहे, बलात्कार करता रहे और लूट–पाट करता रहे, केवल अब दंड से प्रतिरक्षा के साथ? बिल्कुल नहीं! परमेश्वर क्या करता है? *जिस समय वह हमारे पाठ्यक्रम के आरंभ में हमें ""A" देता है, उसी समय वह हमें अंदर से बदल देता है ताकि हम सामग्री का अध्ययन करना पसंद करेंगे!* दूसरे शब्दों में, जब परमेश्वर मनुष्य को धर्मी ठहराता है, तब वह उसे नया जन्म भी देता है। नया जन्म धर्मी ठहराए जाने से अलग है, और धर्मी ठहराया जाना उसके बगैर कभी नहीं हो सकता। और उसकी शिक्षा मनुष्यों को "पाप करते रहने" की ओर प्रेरित करेगी यह दावा करने वाले यहूदी विधीवादियों के लिए और उन लमपट लोगों के लिए जो उसकी शिक्षा का उपयोग उनकी कामुक्ता के लिए अवसर के रूप में करना चाहते थे, दोनों के लिए पौलुस का यह उत्तर है। "तब हम क्या कहे? क्या हम पाप करते रहें ताकि अनुग्रह बढ़ता जाए?" ऐसा कभी न हो! *हम जो पाप के लिए मर गए फिर भी उसमें कैसे जी सकते हैं?* [7] पौलुस के अनुसार, प्रत्येक मसीह ने आमूल परिवर्तन पाया है जो उसके लिए पाप में बने रहना असंभव बनाता है। यह परिवर्तन नए जन्म में होता है। सच्चा "अनुग्रह" हमेशा "हमें अधर्म और संसारिक इच्छाओं का इन्कार करने की और बुद्धिमानी के साथ, नीतिमत्ता के साथ और भक्तिमानता के साथ जीने की शिक्षा देता है।"[8] जिसने परमेश्वर के साथ सच्ची शांति प्राप्त की है उसका अपरिवतनीय चिन्ह् यह है कि वह तुरंत उस परमेश्वर को, जिससे वह प्रेम करता है, जानने और उसका अनुसरण करने की आजीवन खोज आरंभ करता है।[9] (दूसरी ओर, जिस व्यक्ति ने झूठी शांति पाई है, वह जैसे ही नरक के खतरे से खुद को सुरक्षित महसूस करता है, अपनी स्वार्थपूर्ण अभिरूचियों की ओर लौट जाता है।) सच्चा मसीही कभी अनुग्रह का उपयोग "पाप करने की छूट" के रूप में नहीं करेगा; *वह जितना चाहता है उससे पहले ही अधिक पाप करता है।*

मसीही लोग अच्छे काम करते हैं, इसलिए नहीं कि परमेश्वर की ओर से "A" प्राप्त करें, परंतु इसलिए क्योंकि उन्हें नए हृदय दिए गए हैं जो 'सामग्री का अध्ययन करते

हैं।' यह हमारे मन में कुछ अन्वेषक प्रश्न उत्पन्न करता है : क्या मैं इसलिए बाइबल पढ़ता हूं क्योंकि मुझे *पढ़ना* है? क्या मैं ठगा ठगा सा महसूस करता हूं कि मैं संसार के बाकी लोगों के समान पाप नहीं कर सकता? क्या मुझमें ऐसा कुछ है जो परमेश्वर जो वह है उसके लिए *प्रेम करता है* ओर उसकी भलाई जो है उसके लिए *प्रेम करता है?* क्या परमेश्वर की बातों में कोई *आनंद* है? ऐसे प्रश्नों के उत्तर हमारे प्राणों की दशा के विषय में हमें बहुत कुछ बतायेंगे।

नये जन्म के बाइबल-सम्मत वर्णन

बाइबल में नए जन्म के विषय में कहने के लिए बहुत कुछ है। आगे के पृष्ठों में हम इस महान चमत्कार के बाइबल आधारित नौ उदाहरणों का वर्णन करेंगे। (अन्य दो का सारांश संक्षिप्त रूप में परिशिष्ट अ में दिया गया है।) प्रत्येक एक भिन्न दृष्टिकोण से समान महिमामय सच्चाई को देखता है, परंतु उसके भिन्न पहलुओं को प्रकाशित करता है। जब हम नए जन्म के बाइबल आधारित विभिन्न वर्णनों पर विश्वास करते हैं तब हमारे लिए यह ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि जिस अदृश्य क्षेत्र का वह वर्णन करते हैं, वे भी उतने ही वास्तविक हैं जितना कि दृश्य और अस्थायी संसार जिसे हम अपनी भौतिक आंखों से देखते हैं। वस्तुतः, अदृश्य संसार दृश्य संसार से *अधिक वास्तविक* हैं क्योंकि आत्मिक क्षेत्र की बातें स्थायी और सनातन हैं।[10]

शास्त्रसंदर्भ

1 मत्ती 4:16;
2 मत्ती 1:21;
3 यूहन्ना 5:24;
4 रोमियों 5:2.
5 रोमियों 6:1;
6 यहूदा पद 4;
7 तीतुस 2:11–12.
8 फिलिप्पियों 3:10;
9 2कुरिन्थियों 4:18.

अध्याय – 5

नई सृष्टि

नया जन्म क्या है? बाइबल के अनुसार, वह *नई सृष्टि* है। जब परमेश्वर किसी मनुष्य को नया जन्म प्रदान करता है, तब यह उसी प्रकार का चमत्कार है जब उसने विश्व की रचना की![1] वस्तुतः, *नैतिक दृष्टि से कहा जाए तो* यह उससे भी बड़ा, बहुत बड़ा चमत्कार है। नया जन्म परमेश्वर का *रचनात्मक* कार्य है।

प्रत्येक मसीह नई सृष्टि है

> *"इसलिए यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है। पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गई। और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल मिलाप कर लिया, और मेल मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है।"*
>
> – 2 कुरिन्थियों 5:17–18

यहां पर हम देखते हैं कि मसीही व्यक्ति का वर्णन *नई सृष्टि* के रूप में किया गया है। दूसरे शब्दों में, जब परमेश्वर मसीही व्यक्ति को बनाता है, तब वह कुछ नया बनाता है, *शून्य से,* जो पहले अस्तित्व में नहीं था! इसके अतिरिक्त, नए जन्म में *हमेशा* यह

रचनात्मक चमत्कार होता है – "यदि *कोई* व्यक्ति," *कहीं पर भी* मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है। इसमें कोई अपवाद *नहीं* हैं, कि यदि मनुष्य नई सृष्टि नहीं है तो वह "मसीह में" नहीं है! यह मात्र एक प्यारा सा चित्र नहीं है, परंतु *वास्तविकता* है: "पुरानी बातें बीत गई, देखो, सबकुछ नया हो गया।" "पुरानी व्यवस्था मिट गई, नई व्यवस्था पहले ही आरम्भ हो चुकी है।" मसीही व्यक्ति के लिए *प्रत्येक बात* नई है; वह संसार की ओर एक सम्पूर्ण नए प्रकाश के साथ देखता है – सड़क के किनारे पड़ी गिट्टी ओर कचरों में पड़ी शराब की बोतलें भी!

ऊपर स्वर्ग नीला है,
नीचे धरती हरियाली है,
हर रंगों में कुछ है,
जो मसीह रहित आंखों ने कभी नहीं देखा।

– जी. वेड रॉबिन्सन

इस चमत्कार या आश्चर्यकर्म को पूरा करने में हमारा कोई भाग नहीं है। (वस्तु खुद को बना नहीं सकती!) परमेश्वर सबकुछ करता है! "यह सबकुछ परमेश्वर की ओर से है।" (वचन 18) यह कैसा सामर्थी काम है! बाइबल इसे बार–बार "सृष्टि" कहकर उल्लेख करती है।

भले कामों के लिए सृजे गए

क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है, और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे। क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए हैं जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।

– इफिसियों 2:8–10

यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि जब पौलुस उद्धार के विषय में, हमारे "विश्वास द्वारा अनुग्रह से बचाए जाने" के विषय में सोचता है, तो वह परमेश्वर के रचनात्मक कार्य के संदर्भ में सोचता है। मसीही लोगों को विशिष्ट रूप से परमेश्वर के "हाथों की रचना" कहा गया

है! यदि उद्धार की हमारी संकल्पना केवल यह है कि मनुष्य "निर्णय लेता है" – उन लोगों की पंक्ति से बाहर निकल जाता है जो नर्क के मार्ग पर हैं और उन लोगों की कतार में खड़ा हो जाता है जो स्वर्ग के मार्ग पर हैं – तो उद्धार के विषय में हमारा दृष्टिकोण अत्यंत दोषपूर्ण है। मसीही लोग "मसीह यीशु में सृजे गए हैं!"

इस रचनात्मक कार्य का स्वरूप क्या है? सबसे पहले, यह "मसीह यीशु में" है। अर्थात्, यह *मसीह के साथ एक होने* के क्षेत्र में होता है। यह पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 5:17 में कहा उसके समानांतर है, "इसलिए यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है।" दूसरा, यह "भले कामों के लिए" है। इस रचनात्मक कार्य का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि भले काम उसका फल होंगे। ये काम हमारे लिए "पहले से तैयार किए गए" कि हम उनमें चलें, और मसीही विश्वासी उनमें चलते हैं, क्योंकि नई सृष्टि के रूप में उन्हें विशेष रूप से परमेश्वर द्वारा ऐसा करने हेतु बनाया गया, रचा गया, और उत्पन्न किया गया है!

कलीसिया नई सृष्टि है

"कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे।"

– इफिसियों 2:15

इस महत्वपूर्ण वचन से हम सीखते हैं कि पौलुस मात्र व्यक्तिगत् विश्वासियों के अस्तित्व का वर्णन करने के लिए नहीं, परंतु सम्पूर्ण कलीसिया का वर्णन करने के लिए "सृष्टि" की भाषा का उपयोग करता है। कलीसिया संस्था नहीं है; यह एक *सृष्ट* जीव है – जीवित वस्तु और "नई" वस्तु है। मसीह ने दो पूर्ण रूप से भिन्न समूहों (यहूदी और अन्यजातियों) को लिया और दोनों को "स्वयं उसमें" "एक नया मनुष्य" – "मसीह की देह" के रूप में *उत्पन्न कर दिया।* इस जीवित देह में एक ही आत्मा वास करता है – पवित्र आत्मा,[2] और उनका एकसमान जीवन है – मसीह का जीवन।[3]

संपूर्ण कलीसिया (मसीह की संपूर्ण देह) और स्थानीय प्रकाशन में कलीसिया (विश्वासियों की व्यक्तिगत मण्डलियां) परमेश्वर के अद्भुत रचनाएं हैं। कोई भी व्यक्ति "कलीसिया शुरू" नहीं कर सकता; परमेश्वर को ही यह असंभव कार्य करना होगा और कलीसिया को अस्तित्व में लाने के लिए *शून्य* में से *कुछ* उत्पन्न करना होगा। ऐसा

वह कई व्यक्तिगत विश्वासियों को "उत्पन्न करके" करता है, जो उनके साझा जीवन के कारण *एक* बनाए गए हैं।

कलीसिया की नींव है
यीशु मसीह उसका प्रभु :
वह उसकी नई सृष्टि है,
आत्मा और वचन के द्वारा।

स्वर्ग से वह आया और उसे खोज निकाला,
ताकि वह उसकी पवित्र दुल्हन हो;
अपने ही खून से उसने उसे खरीदा,
और उसके जीवन के लिए वह मर गया।

– सैम्यूएल जे. स्टोन

धार्मिकता और पवित्रता में सृजी गई

कि तुम अगले चालचलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमानेवाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो; और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ। और नये मनुष्यत्व को पहन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है। इफिसियों 4:22–24

पौलुस के अनुसार, कलीसिया जो संपूर्ण है न केवल "एक नया मनुष्यत्व" है, बल्कि प्रत्येक व्यक्तिगत मसीही भी नया मनुष्य है। यहां पर एक महत्वपूर्ण बात पर ध्यान देना है, कि वह यह है कि इस मनुष्य के विषय में फिर से इस प्रकार कहा गया है जो *सृजा गया है।* वह कैसा है? वह "परमेश्वर के स्वरूप में...सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में" सृजा गया है। इस "नई सृष्टि" की ये विशेषताएं हैं। इस प्रकार का वर्णन हमें यह एहसास दिलाने पाए कि यह सृजनात्मक कार्य कितना *वास्तविक* है : यह नया मनुष्यत्व धार्मिकता और पवित्रता में परमेश्वर की समानता में सृजा गया है! पौलुस की भाषा यहां कवि की कल्पना नहीं है, परंतु ठोस वास्तविकता की भाषा है! इस रचनात्मक कार्य का समानांतर वर्णन कुलुस्सियों 3:9–11 में पाया जाता है:

एक दूसरे से झूठ मत बोलो क्योंकि तुमने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है, और नए मनुष्यत्व को पहन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिए नया बनता जाता है। उसमें न तो यूनानी रहा, न यहूदी, न खतना, न खतनारहित, न जंगली, न स्कूती, न दास और न स्वतंत्र; केवल मसीह सब कुछ और सब में है।

हम इस अनुच्छेद में फिर से पाते हैं कि नया *मैं* (अर्थात मनुष्यत्व) *परमेश्वर के प्रतिरूप में* 'सिरजा गया है। इसलिए, जिन्होंने "नए मनुष्यत्व को पहन लिया है" ऐसे लोगों के रूप में, परमेश्वर की दृष्टि में, मसीही *"पवित्र और प्रिय"* हैं (पद 12)। "मैं कौन हूं" इस प्रश्न के उत्तर के रूप में, प्रत्येक मसीही को उत्तर देना चाहिए, "मैं मसीह में नई सृष्टि हूं, धार्मिकता, और पवित्रता में सिरजा गया हूं परमेश्वर की दृष्टि में पवित्र और प्रिय हूं।"

और कुछ महत्वपूर्ण नहीं है

क्योंकि न खतना, और न खतनारहित कुछ है, परन्तु नई सृष्टि। गलातियों 6:15

इन सारी बातों से उपर्युक्त वचनों में कहा गया है कि इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि पौलुस नई सृष्टि को अत्यंत महत्वपूर्ण समझता है। *परमेश्वर के इस रचनात्मक कार्य के अलावा और कुछ महत्व नहीं रखता!* यदि नई सृष्टि उपस्थित नहीं है, तो न तो खतना, न बपतिस्मा, न और कोई बाहरी मानव क्रिया या धार्मिक रस्म "कुछ" है। दूसरी ओर, यदि परमेश्वर ने हमें नई सृष्टि बनाया है, तो खतने का न होना, या बपतिस्मा का न होना, या और किसी धार्मिक रस्म का न होना भी "कुछ" नहीं है! हम में से किसी के लिए भी केवल एक ही बात मायने रखती है : "क्या मैं नई सृष्टि हूं, या क्या मैं वही व्यक्ति हूं जो मैं हमेशा से था?" यदि मैं वही व्यक्ति हूं जो मैं हमेशा से था, तो मैं मसीही नहीं हूं, चाहे कलीसिया में मेरी कितनी ही उपस्थिति क्यों न रही हो, प्रार्थना विधी, धार्मिक संस्कार, "निमंत्रण मिलने पर आगे जाना," या "यीशु को ग्रहण करना" कोई अर्थ नहीं रखता। नया जन्म क्या है? वह नई सृष्टि है! संक्षिप्त में, यह चमत्कार है, "निर्णय" नहीं, या किसी प्रकार का मानवीय कार्य नहीं है।

शास्त्रसंदर्भ

1 2कुरिन्थियों 4:6.

2 1कुरिन्थियों 12:12–13;

3 यूहन्ना 15:4–5

अध्याय – 6

एक नया मनुष्य

"कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे....."

– इफिसियों 2:15

कि तुम पिछले चालचलन के पूराने मूनष्यत्व को उतार डालो जो भरमाने वाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है। और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नए बनते जाओ, और नए मनुष्यत्व को पहिन लो जो परमेश्वर के अनुरुप सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है।

– इफिसियों 4:22–24

एक दूसरे से झूठ मत बोलो, क्योंकि तुमने अपने पुराने मनूष्यत्व को उसके बुरे कार्यों सहित त्याग दिया है, और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृष्टिकर्ता के स्वरुप के अनुसार सत्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए नया बनता जाता हैं। इसमें युनानी और यहुदी, खतना और ख़तनारहित, बर्बर, स्कूती, पराधीन, और स्वाधीन में, कोई भेद नहीं, परन्तु मसीह सब कुछ और सब में है।

– कुलुस्सियों 3:9–11

जैसा हमने अध्याय पांच में देखा, परमेश्वर के रचनात्मक कार्य के रूप में पुनरूज्जीवन का वर्णन करने में उपर उदधृत किये अंशों में से हर अंश बहुत ही महत्वपूर्ण है। परंतु इन पदों में पुनरूज्जीवन का दूसरा पहलू भी स्पष्ट किया गया है: पुनरूज्जीवन *एक नये मनुष्य* की रचना है।

केवल चर्च ही संपूर्ण रूप में ''एक नया मनुष्य'' का स्वरूप लिये हुए नहीं है (इफिसियों 2:15), परंतु प्रत्येक वैयक्तिक मसीही जन भी एक नया मनुष्य है! यह जानना अत्यंत आवश्यक है कि पौलुस के मतानुसार मसीही जन ''पुराना मनुष्य'' और ''नया मनुष्य'' *दोनों* नहीं है। न ही एक नया मनुष्य ''उसके भीतर'' रहता है। न ही एक पुराना मनुष्य और नया मनुष्य *दोनों* उसके भीतर रहते हैं। मसीही जन नया मनुष्य है।

विश्वासी जन के मसीही अनुभव का एक प्रचलित उदाहरण बताता है कि उसके भीतर एक ''काला श्वान'' और ''सफेद श्वान'' दोनों रहते हैं। ये दोनों श्वान निरंतर एक दूसरे से लड़ते रहते हैं और ''जिसका पोषण हम सबसे अधिक करते हैं, वही जीतता है।'' ऐसा दृष्टिकोण प्रामानिक हो सकता है, परंतु यह एक दोषी धर्मविज्ञान पर आधारित है। मसीही जन के भीतर मात्र कुछ नया नहीं *है* जो उसके पास पहले कभी नहीं था; पंरतु वह वैसा कुछ बन जाता *है* जो वह पहले कभी नहीं था। मसीही जन एक नया मनुष्य है।

''यह मैं नहीं है!''

इसे अगस्तिन ऑफ हिप्पों से संबंधित एक विवरण द्वारा बहुत अच्छे से समझाया गया है, जो अपने परिवर्तन से पूर्व एक अधर्मी जीवनशैली जीता था। उसके परिवर्तन के बाद, वह अपनी पुरानी महिला मित्रों में से एक के द्वारा देखा गया, जिसने उसका ध्यान आकर्षित करने के लिये उसे पुकारा, ''अगस्तिन, अगस्तिन, यह मैं हूं।'' ''हां,'' अगस्तिन ने दुखी होकर उत्तर दिया, ''परंतु मैं वह नहीं हूं!'' हर मसीही जन की ऐसी स्वीकारोक्ति होनी चाहिये।

परिवर्तन के बाद, प्रत्येक मसीही जन एक नयी पहचान धारण करता है। शाउल पौलुस हो जाता है; शिमौन पतरस बन जाता है। पहली चुनौतियों में से एक, जिसका सामना नये विश्वासी को तब करना पड़ता है, जब वह अपने परिवार और पूर्व पहचान वालों के बीच लौटता है, तब हरेक व्यक्ति उसे उसके पुराने नाम से पुकारे जाने पर जोर देता है: ''हैलो, शिमौन।'' नये बदले जन को जिस आश्चर्यकर्म ने उसके जीवन को

बदल दिया, उसके लिये एक दृढ़ निश्चय करना चाहिये और समझाना चाहिये, "मैं अब उन चीजों से प्रेम नहीं रखता हूं, जिनसे पहले प्रेम किया करता था; मैं अब उन चीजों को नहीं करता हूं, जिन्हें पहले किया करता था। मैं अब शिमौन नहीं रहा; मैं पतरस हूं। मैं एक नया मनुष्य हो गया हूं!"

वह बनो जो तुम हो

मसीही जन एक नया मनुष्य है। वह उसकी आवश्यक पहचान है। और चूंकि वह एक नया मनुष्य है, उसे नये मनुष्य के *स्वरूप में रहने* की बुलाहट मिली है। चूंकि पुराना मनुष्यत्व पहले ही "एक ओर रख दिया" गया है और नया मनुष्यत्व "धारण कर लिया"[1] गया है, उसे प्रोत्साहित किया जाता है कि वह इस तथ्य पर *विश्वास* करे (ताकि "मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जायें" 2) और जीवन को "पुराने मनुष्यत्व को एक ओर रखकर" *जिये* (अर्थात, उसके *कार्य* – "तुम्हारा जीवन जीने का पुराना तरीका"[3]) और (व्यवहार में) "नये मनुष्यत्व को पहिन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है।"[4] अनुग्रह में वृद्धि को सिखाने के लिये यह नये नियम की पद्धति है: *"यह जानो कि तुम वास्तव में कौन हो,* और तब *जो हो वही बने रहो।" विश्वासियों को यह बुलाहट नहीं दी गयी है,* "वह बनने का प्रयास करो, जो तुम नहीं हो," जैसा कि कई मसीही जन यह मानते हैं, परंतु इसके बजाय, "जो तुम हो वह बने रहो!"

हे मसीही जन, यह बात बहुत महत्व रखती है कि आप स्वयं को एक विश्वासी के रूप में कैसे देखते हैं। अगर आप सहमत है कि आप अभी भी आवश्यक रूप में *बुरे* हैं जबकि आप मसीही बन चुके हैं, तब *आप जो आप नहीं हैं व्यर्थ में वह होने के संघर्ष की* जीवनपर्यंत संभावना में अपने आप से कहीं आगे हैं, क्यों कि आप मसीही जीवन जीने का प्रयास करते हैं। दूसरी तरफ, अगर आप सहमत हैं कि अपने हृदय के मूल में आप *अच्छे और बुरे दोनों* हैं, तब बुराई आपके हृदय और जीवन में वैध स्थान लेने लगती है। आप के अंर्ततम भाग में, आप *सचमुच में* बुराई चाहते हैं और इसे "हां" कहना, कुछ सच्चे अर्थो में, आपकी गहरी इच्छाओं को "हां" कहना कहलायेगा। इनमें से कोई भी मत बाइबल आधारित नहीं है। हर मसीही जन के बारे में आवश्यक सच्चाई यह है कि वह एक नया मनुष्य है। अपने स्वभाव के मूल में वह "धार्मिकता और पवित्रता में रचा गया है।"[5] जब वह पाप को "नहीं" कहता है, वह अपने सच्चे स्वरूप को "हां" कह रहा है।

शारीरिक

हरेक मसीही जन के लिये *अंततः* सच्चाई है कि वह एक नया मनुष्य है, परंतु *केवल* यही एक सच्चाई नहीं है। यद्यपि मसीही जन अपने अंर्ततम भाग में नया मनुष्य बन चुका है, परंतु उसने अभी तक *पूर्णतः* छुटकारा नहीं पाया है। पाप अभी भी उसके ''मरणहार शरीर'' में ''राज्य करने''[6] की चेष्टा करता है। मसीही व्यक्तित्व के इस अधिकांश सतही पहलू को नये नियम में ''शारीरिक'' कहा गया है, एवं आने वाले अध्यायों में इस पर चर्चा की जायेगी। इस बिंदु पर पहुंचकर इतना कहना पर्याप्त होगा कि मसीही जन ''सचमुच में'' कौन है, शारीरिक, इसका वर्णन नहीं करता, और मसीही जन के उपर राज्य करने की शरीर की सामर्थ समाप्त हो चुकी है।[7] जब हमारे मरणहार शरीर अंततः ''छुटकारा''[8] पायेंगे, तब पाप के उत्तरजीवियों का एक एक चिंन्ह सदा के लिये मिट जायेगा, और हम अंत में सिद्धता के साथ वह ''बन जायेंगे जो हम सचमुच में हैं।''

एक नयी पहचान

मसीही जन की नयी पहचान का सच, शेष रहे पाप के अवशेषों के उपरांत, एक नयी खरीदी फैक्ट्री का संदर्भ लेकर बहुत अच्छी तरह से समझाया गया है। मान लीजिये कि एक आक्सीजन कंपनी ने जीवन दायिनी आक्सीजन उत्पन्न करने के उद्देश्य से एक विषैली गैस फैक्ट्री खरीदी। जैसे ही फैक्ट्री का स्वामित्व नये हाथों में पहुंचता है, इसकी पहचान बदल जाती है। नया मालिक ''आक्सीजन फैक्ट्री'' का बोर्ड लगा देता है। अध्यक्ष के आफिस में, एक नया प्रबंधक मेज पर बैठने लगता है। कंपनी को नियंत्रित करने के उनके संघर्ष के दौरान, पुराने अध्यक्ष और नये अध्यक्ष आफिस को साझा नहीं करते हैं। पुराना अध्यक्ष जा चुका है। वास्तव में, पुरानी *फैक्ट्री* जा चुकी है। एक आक्सीजन फैक्ट्री ने इसका स्थान ले लिया है, यद्यपि, इसमें समय लग सकता है जब तक पुराने सारे उपकरणों को अदला बदली करके नयी क्षमता में पूर्णतः कार्य करने योग्य न बना लिया जाये।

पुनरूज्जीवन के क्षण में, प्रत्येक मसीही जन मूलतः उसके स्वभाव से ही ''नया'' बनाया जाता है। परमेश्वर उसके जीवन के सामने ''संत''[9] नामक चिंन्ह रख देता है। विश्वासी के अनुभव के हरेक पक्ष में इस आवश्यक और केंद्रीय परिवर्तन का स्वतः कार्य करना तय रहता है। न्यूयार्क सिटी के गैंग के सदस्य, निकी क्रूज, इस आश्चर्य के अदभुतपन की घटना का वर्णन करते हैं। अपनी रक्त पिपासा और मार–धाड़ के लिये

कुख्यात निकी का जीवन अचानक परमेश्वर द्वारा स्पर्श किया गया। अपने परिवर्तन से कुछ घंटे पहले दर्पण के सामने खड़े होकर – उस समय उसकी रिवाल्वर और चाकू अभी भी उसके साथ ही था– निकी ने स्वयं को देखा और कहा, ''तो अब निकी एक स्वर्गदूत होने जा रहा है!'' ऐसा ही प्रत्येक मसीही जन के साथ होता है! एक बार नये मनुष्य की रचना हो जाती है, तो यह होना तय हो जाता है कि पाप की ''बंदूकें और चाकू'' जो हमारे जीवन से अभी भी जुड़े हुए हैं, अनिवार्यतः गिर जायेंगे। हैल्लेलुयाह!

शास्त्रसंदर्भ

1 कुलुस्सियों 3:9–10;
2 इफिसियों 4:23;
3 इफिसियों 4:22;
4 इफिसियों 4:22,24.
5 इफिसियों 4:24;
6 रोमियों 6:12;
7 गलातियों 5:16;
8 रोमियों 6:6–7;
9 रोमियों 8:23;
10 1कुरिन्थियों 1:2;
11 इफिसियों 5:3.

अध्याय – 7

एक नया हृदय

जहां *धर्मी ठहराया जाना* एक धर्मी न्यायी के द्वारा की गयी *अधिकारपूर्ण घोषणा* है, पुनरूज्जीवन परमेश्वर सृष्टिकर्ता द्वारा किये जाने वाला एक *सामर्थशाली रचनात्मक कार्य* है। यह रचनात्मक कार्य बाइबल में अलग अलग सच्चाईयों के संदर्भ में वर्णित है, उनमें से प्रत्येक पुनरूज्जीवन के अलग अलग पक्षों को सामने रखती है। हम पहले ही ध्यान दे चुके हैं कि पुनरूज्जीवन धर्मशास्त्र में *एक नयी रचना* और *एक नये मनुष्य* दोनों के रूप में चित्रित है। एक तीसरे तरीके से भी इसका वर्णन किया गया है; इसका वर्णन *नये हृदय* के दिये जाने से भी किया गया है।

एक नये हृदय की प्रतिज्ञा

> *तब मैं तुम पर शुद्ध जल छिड़कूंगा और तुम शुद्ध हो जाओगे; मैं तुम्हें तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूर्तियों से शुद्ध करुंगा। और फिर मैं तुम्हें एक नया हृदय दूंगा और तूम्हारे भीतर एक नई आत्मा उत्पन्न करुंगा और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुम्हें मांस का हृदय दूंगा। और मैं अपना आत्मा*

तुम में डालुंगा और तुम्हें अपनी विधियों पर चलाऊंग और तूम मेरे नियमों का सावधानी से पालन करोगे। और जो देश मैंने तूम्हारे पूर्वजों को दिया था तुम उसमें बस जाओगे; तब तुम मेरी प्रजा होगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊंगा। फिर मैं तुम्हें तुम्हारी सारी अशुद्धता से छुड़ाऊंगा, और अन्न को बुलाकर अत्यधिक बढ़ाऊंगा, और मैं तूम्हारे बीच अकाल न पड़ने दुंगा। और मैं वृक्षों के फल और खेत की उपज बढ़ाऊंगा जिस से कि जाति जाति के मध्य अकाल के कारण फिर तुम्हारी निन्दा न हो। तब तूम्हें अपना बुरा चालचलन और अपने बुरे कार्य स्मरण आएंगे, तुम्हें अपनी ही दृष्टि में अपने घृणित और अधर्म के कामों से घृणा होगी। तुम्हें यह मालूम हो, मैं यह तूम्हारे लिए नहीं कर रहा हूं, प्रभू यहोवा की यही वाणी है। हे इस्राएल के घराने, अपने चालचलन के लिए लज्जित और विस्मित होओ!

– यहेजकेल 36:25–32

सुसमाचार की सबसे अदभुत प्रतिज्ञाओं में से एक ''नये हृदय और नयी आत्मा की'' प्रतिज्ञा है। (पद 26) यह वह कुछ है जो परमेश्वर देता है (पद 26), और वह प्रत्येक मसीही जन को देता है। उत्पत्ति 6:5 में, हमें बताया गया है कि ''मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और.....उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है सो निरंतर बुरा ही होता है।'' पुनः यह कहा गया है कि ''मनुष्य के मन में बचपन से जो कुछ उत्पन्न होता है सो बुरा ही होता है।''[1] दूसरे स्थान पर हमें बताया गया है कि ''मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देने वाला होता है, उस में असाध्य रोग लगा है; उसका भेद कौन समझ सकता है?''[2] *मसीही जन के हृदय के विषय में ये बातें सच नहीं हैं।* मसीही व्यक्ति को एक नया हृदय दिया गया है। वह हृदय से ''शुद्ध हो चुका,''[3] है। ''*सचमुच* इजराएली, इस में *कपट नहीं*।''[4] ऐसे कथन उन लोगों के लिये नहीं दिये जा सकते जिनका हृदय ''अधिक धोखा देने वाला होता है, उस में असाध्य रोग'' पाया जाता है!

कदाचित मान लीजिये कि विश्वासी के पास एक पुराना और एक नया हृदय दोनों है, परमेश्वर विशेषकर कहते हैं, ''*मैं तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकाल कर* तुम को मांस का हृदय दूंगा'' (पद 26)। एक कठोर, ठंडे, असंवेदनशील हृदय के स्थान पर मसीही जन को एक कोमल, स्नेही और जीवित हृदय दिया गया है जो परमेश्वर की चीजों के प्रति संवेदनशील है।

समस्त मसीहियों का सजीव परिवर्तित जीवन

एक नया हृदय देने के संदर्भ में, परमेश्वर "अपनी आत्मा हमारे भीतर देने" और "हमें उसकी विधियों पर चलने" की प्रतिज्ञा देता है (पद 27)। पवित्र आत्मा के भीतरी कार्य का निश्चित परिणाम है कि प्रत्येक मसीही जन "परमेश्वर के नियमों (आज्ञाओं) को मानकर उनके अनुसार करेगा। इसका अर्थ है कि यह *बिल्कुल असंभव* है कि एक नया हृदय हो और फिर भी व्यक्ति पाप में निरंतर जीवन बिताता रहे।

हमारे दिनों में ऐसे कथन सुनाई पड़ना अनोखी बात नहीं है: *"वह व्यक्ति मसीही है, परंतु उसने अपना जीवन परमेश्वर की अनाज्ञाकारिता में बिताया।"* असंभव है! "मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर *ऐसा करूंगा* कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मान कर उनके अनुसार *करोगे*।"

"वह व्यक्ति कई सालों से मसीही है, परंतु वह कभी विकसित ही नहीं हुआ।" नामुमकिन! "मैं तुम को तुम्हारी *सारी* अशुद्धता और तुम्हारी *सारी* मूरतों से शुद्ध करूंगा. ....मैं तुमको तुम्हारी *सारी* अशुद्धता से शुद्ध करूंगा।" जब परमेश्वर "हमारे भीतर अच्छा कार्य आरंभ करता है,"[5] वह तब तक विश्राम नहीं करेगा जब तक हरेक मूर्ति को गिरा न दे और सारी अशुद्धता को हमारे जीवन से शुद्ध न कर दे! वह "हमारा परमेश्वर" होने के लिये दृढ़ प्रतिबद्ध है और वह हमें और किसी के साथ सहभागी नहीं होने देगा!

प्रतिज्ञायें, कोई उपदेश नहीं!

यहेजकेल 36 के कथनों को जानना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि वे *प्रतिज्ञायें* हैं जो बताती हैं कि *परमेश्वर क्या करेगा,* वे उपदेश नहीं हैं जो ये बतायें कि *मसीहियों को क्या करना* चाहिये। ये प्रतिज्ञायें शर्तरहित हैं और *हमेशा हरेक* विश्वासी में पूर्ण होती हैं। परमेश्वर इन परिणामों को सुरक्षित रखता है, मनुष्य नहीं। ध्यान दे कि इन वचनों मे परमेश्वर क्या करने की प्रतिज्ञा कर रहे हैं :

- *मैं तुम पर शुद्ध जल छिड़कूंगा और तुम शुद्ध हो जाओगे।*
- *मैं तुम्हें तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूर्तियों से शुद्ध करुंगा।*
- *मैं तुम्हें एक नया हृदय दूंगा और तूम्हारे भीतर एक नई आत्मा उत्पन्न करुंगा।*
- *मैं तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुम्हें मांस का हृदय दूंगा।*

- *मैं अपना आत्मा तूम में डालुंगा और तुम्हें अपनी विधियों पर चलाऊंग और तुम मेरे नियमों का सावधानी से पालन करोगे।*
- *मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊंगा।*
- *मैं तुम्हें तुम्हारी सारी अशुद्धता से छुड़ाऊंगा।*

ऐसी ''बहुमूल्य और भव्य प्रतिज्ञाओं'' के प्रति प्रतिक्रिया स्वरूप, हरेक मसीही जन को परमेश्वर की प्रशंसा करना चाहिये।[6]

नयी वाचा

> *''देखो, ऐसे दिन आनेवाले है,'' यहोवा की यह वाणी है, ''जब मैं इस्राएल के घराने और यहूदा के घराने से एक नई वाचा बान्धुंगा, उस वाचा के समान नहीं जिसे मैंने उनके पूर्वजों से उस दिन बान्धी थी जब मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र देश से बाहर निकाल लाया था, यद्यपि मैं उनके लिए पति समान था फिर भी उन्होंने मेरी उस वाचा को तोड़ा था।'' यहोवा की यही वाणी है। ''परन्तू जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने के साथ बान्धूंगा वह यह है,'' यहोवा कहता है, ''मैं अपनी व्यवस्था उनके मनों में डालूंगा और उसे उनके हृदयों पर लिखूंगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरुंगा तथा वे मेरी प्रजा ठहरेंगे। तब उन्हे अपने अपने पडोसी और अपने अपने भाई को फिर यह सिखाना न पडेगा कि यहोवा को जानो, क्योंकि छोटे से लेकर बडे तक सब मुझे जान जायेंगे क्योंकि मैं उनके अधर्म को क्षमा करूंगा और उनके पापों को फिर स्मरण न करूंगा,'' यहोवा की यही वाणी है।*
>
> – यिर्मयाह 31:31–34

ये भव्य प्रतिज्ञायें नये नियम में ''नयी वाचा'' के संदर्भ में उदधृत की गयी हैं जिसमें प्रत्येक मसीही जन एक सहभागी है।[7] ध्यान दीजिये कि नयी वाचा की प्रतिज्ञा की गयी आशीषों में *धर्मी ठहराया जाना* एक आशीष हैः ''क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा'' (पद 34)। परंतु *धर्मी ठहराया जाने* के साथ *पुनरूज्जीवन* की प्रतिज्ञा भी की गयी है जो उससे अभिन्न रूप में बंधी हुई हैः ''मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समाऊंगा और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा'' (पद 33)। नयी वाचा में *धर्मी ठहराया जाना* और *पुनरूज्जीवन* सदा के लिये बंधे हुए हैं। वे सब जो

अपनी तथाकथित *धर्मी ठहराया जाने* को पाप करते रहने के लिये उपयोग करते हैं, वे केवल ये सिद्ध करते हैं कि वे नयी वाचा में सहभागी नहीं हैं। एक बार फिर हम देखते हैं कि परमेश्वर कभी भी किसी को उसके मसीही जीवन के आरंभ में ही उसे संसार के लिये प्रेम दिये बिना "A" श्रेणी नहीं प्रदान करता है।

भीतरी धार्मिकता

पुरानी वाचा में, आज्ञा मनुष्यों के हृदयों में न लिखी जाकर पत्थर की पटियाओं पर लिखी जाती थी।[8] व्यवस्था और अपुनरूत्थित मनुष्य के मध्य हमेशा यह संबंध हुआ करता है। व्यवस्था "बाह्य रूप से" मिलती है और उस पर ऐसे मापदंड लागू करती है जिनसे वह घृणा करता है।[9] व्यवस्था उसे बताती है कि उसे क्या करना चाहिये, परंतु ऐसा करने के लिये उसे न तो *इच्छा* और न ही *सामर्थ* प्रदान करती है। अधिक से अधिक, व्यवस्था केवल बाह्य धार्मिकता प्रदान कर सकती है, जो शास्त्रियों और फरीसियों के समान धार्मिकता थी। यीशु ने कहा कि वे केवल कटोरे के समान थे जिन्हें केवल बाहरी तौर से साफ किया जाता था– "चूने से पुती हुई कब्रों के समान है जो उपर से तो सुंदर दिखाई देती हैं, परंतु भीतर मुर्दो की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं।"[10]

इसके विपरीत, नयी वाचा एक भीतरी धार्मिकता की प्रतिज्ञा करती है: "मैं अपनी व्यवस्था उनके *मन में* समाऊंगा और उसे *उनके हृदय पर* लिखूंगा।" इसके उपर चिंतन करने पर, यह स्पष्ट हो जाता है कि यह यहेजकेल 36:26 के समान प्रतिज्ञा दी गयी है, एक नये हृदय की प्रतिज्ञा जो परमेश्वर से *प्रेम करता* और उसकी आज्ञा मानना चाहता है। सारे फरीसियों के बाहरी धर्म से अलग हटकर सच्ची मसीहत कितनी भिन्न है! सच्चा मसीही जन परमेश्वर का अनुसरण करता है क्योंकि उसके पास एक नया हृदय है, जो परमेश्वर की व्यवस्था के गुण के साथ मिला हुआ है– परमेश्वर से और मनुष्य से प्रेम करों[11]– इसके उपर लिखा हुआ है![12]

तीन महान निश्चयताएं

> *और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा; और मैं उनको एक ही मन और एक ही मार्ग दूंगा कि वे सदा मेरा भय मानते रहे जिससे स्वयं उनका और उनके पश्चात् उनके वंशजों का भी भला हो। और मैं उनके साथ अनंतकाल की यह वाचा बान्धुगा कि उनकी भलाई करने से कभी न फिरूंगा*

> *और मैं अपना भय उनके हृदयों में डालुंगा जिससे वे मुझ से कभी विमुख न हो। और मैं आनन्दपूर्वक उनकी भलाई करूंगा, और अपने सम्पूर्ण मन और सम्पूर्ण प्राण से सचमुच उन्हें इस देश मे स्थापित करूंगा।*
>
> – यिर्मयाह 32:38–41.

इन पदों में परमेश्वर पुनः "सनातन वाचा"[13] के बारे में बोलता है, जो वह अपने लोगों के साथ बांधेगा। इस वाचा की प्रतिज्ञायें बहुत महिमादायी और शब्दों से परे हैं। उनमें से प्रत्येक के विषय में बहुत कुछ कहा जा सकता है, परंतु इन पर विशेष रूप में ध्यान दीजियेः

- *मैं उनको एक ही मन और एक ही मार्ग दूंगा कि वे सदा मेरा भय मानते रहे जिससे स्वयं उनका और उनके पश्चात् उनके वंशजों का भी भला हो।*
- *मैं उनके साथ अनंतकाल की यह वाचा बान्धुगा कि उनकी भलाई करने से कभी न फिरूंगा*
- *मैं अपना भय उनके हृदयों में डालुंगा जिससे वे मुझ से कभी विमुख न हो।*

समस्त मसीहियों का एक हृदय होता है

समस्त मसीहियों का एक हृदय होता है। यह इस तथ्य से बिल्कुल निश्चित किया जा सकता है कि परमेश्वर इस हृदय को *उपहार स्वरूप* देने की *प्रतिज्ञा करता* हैः "मैं उन्हें एक हृदय *दूंगा*।" मसीहियों को यह नहीं बताया गया है कि उनके पास एक हृदय *होना चाहिये;* उन्हें उपहार स्वरूप एक हृदय देने की प्रतिज्ञा की गयी है।

समस्त मसीहियों के पास एक समान हृदय होता है! वे सब परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई से उपासना करते हैं और मसीह यीशु पर घमंड करते हैं और शरीर पर भरोसा नहीं रखते।"[14] वे सब प्रभु यीशु मसीह से प्रेम रखते हैं[15] और वे सब दूसरे मसीहियों से प्रेम रखते हैं।[16] इस "एक हृदय" का होना बताता है कि क्यों दो मसीही जन पहली बार हवाई जहाज या बस में मिल सकते हैं और तीस मिनिट के भीतर परस्पर सच्ची सहभागिता का अनुभव कर सकते हैं जैसा अनुभव वे अपने जीवन काल में बिछड़े हुए पारिवारिक जनों से मिलने पर कर सकते हैं।

समस्त मसीहियों का एक मार्ग होता है

समस्त मसीहियों का एक मार्ग होता है। पुनः, यह परमेश्वर की प्रतिज्ञा है। हमें यह नहीं बताया गया है कि सभी मसीहियों का एक समान मार्ग होना *चाहिये;* हमें बताया गया है

कि एक मार्ग उन्हें दिया जाएगा (पद 39)। सभी मसीही समान दिशा में आगे बढ़ रहे हैं– उपर की ओर एवं परमेश्वर की तरफ। कुछ दूसरों की तुलना में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं, और सभी अस्थाई विघ्न का सामना करते हैं। पर अपने जीवन की सामान्य गति में, सभी समान पथ पर यात्रा कर रहे हैं और समान लक्ष्य की और आगे बढ़ रहे हैं।

इसका अर्थ है कि कोई भी जो अलग पथ पर यात्रा करता है और अलग दिशा ले लेता है, वह बिल्कुल भी मसीही जन नहीं है। ''कोई जो कहता है, 'मैं उसे जान चुका हूं,' और उसकी आज्ञायें पूर्ण नहीं करता है, एक *झूठा व्यक्ति* है (''शारीरिक मसीही'' *नहीं*!), और उसके भीतर सच्चाई नहीं।''[17]

समस्त मसीही जन पवित्रता में दृढ़ बने रहते हैं

समस्त मसीही जन अंत तक पवित्रता में दृढ़ बने रहते हैं। यिर्मयाह 32 की प्रतिज्ञाओं पर एक बार और ध्यान दीजिये। न केवल परमेश्वर ने हमसे मुंह नहीं मोड़ने का वायदा किया है (''मैं कभी उनका संग छोड़ कर उनका भला करना न छोडूंगा''); उसने हमारे हृदय में कार्य करने का भी वायदा किया है जो यह निश्चित करता है कि हम उससे मुंह नहीं मोड़ेंगे (''अपना भय मैं उनके मन से ऐसा उपजाउंगा कि वे मुझ से अलग होना न चाहेंगे'')! पुनः यह एक *प्रतिज्ञा* है, और यह वह प्रतिज्ञा है जो *परमेश्वर* करता है। सभी मसीहियों के भीतर वह स्वयं का पवित्र भय भरता है जो उनके अंदर, उसके प्रति सदा बनी रहने वाली विश्वसनीयता को सुरक्षित करती है!

यह बाइबल पर आधारित सच्ची सुरक्षा है, और यह उस बकवास से बहुत भिन्न है जिसके अनुसार प्रचलित है कि ''जो एक बार बचाया जाता है, वह हमेशा के लिये बच जाता है।'' और यह हमारे दिनों में अक्सर सिखाया जाता है। सुरक्षा का ''बचाये जाने से'' कोई संबंध नहीं है, कि पाप का जीवन जीते रहें और तौभी स्वर्ग जाना तय हो। न ही इसका संबंध परिवर्तन हो जाने पर किसी ताले वाले कमरे में फेंक दिये जाने से है और बाहर नहीं निकलने देने से है, कि हम बच निकलने के लिये कितना ही दरवाजें को थपथपाते रहें। *बाहरी* कोई अंकुश नहीं है जो मसीही जन को उसके पूर्व जीवन में लौट जाने से रोकते हों: ''और जिस देश से वे निकल आए थे, यदि उस की सुधि करते *तो उन्हें लौट जाने का अवसर था*। पर वे एक उत्तम अर्थात स्वर्गीय देश के अभिलाषी हैं।''[18] क्या आप पुनः संसार में लौट जाना *चाहते* हैं? आप ऐसा करने के लिये स्वतंत्र हैं– *आप को कोई नहीं रोकेगा!* परंतु अगर आप एक मसीही जन हैं तो वापस लौटने

की आप की इच्छा नहीं होगी। यह कैसे हो *सकता* है, चूंकि आप को वह हृदय दिया गया है जो परमेश्वर से प्रेम रखता और भय मानता है?

विश्वासी की सुरक्षा इस रीति से नयी वाचा के मूल स्वभाव से प्रवाहित होती है। पुरानी वाचा का ''बड़ा दोष'' यह था कि लोग इसमें ''निरंतर बने नहीं'' रहते थे।[19] नयी वाचा विशेषकर इस स्थिति के हल हेतु स्थापित की गयी थी। इसमें परमेश्वर अपनी आज्ञा हमारे *भीतर* रखता है।[20] नयी वाचा में, परमेश्वर हमारे हृदय के *भीतर* उसके लिये प्रेम भर देता है जो हमें उससे लिपटे रहने के लिये और उसकी चेतावनियों पर ध्यान देने के लिये प्रेरित करता है।

उससे फसह के पर्व के समय, इजराएल की संतान को चेतावनी दी गयी थी कि कोई भी सुबह होने तक दरवाजे से बाहर नहीं निकलेगा, बल्कि लहू के आश्रय में ठहरा रहेगा। अगर उन्होंने इस चेतावनी की उपेक्षा कर दी होती तो क्या हुआ होता? वे निश्चित नाश हो जाते! परंतु तथ्य यह था कि, उन्होंने चेतावनी की उपेक्षा *नहीं* की! वे बाहर जाने से भयभीत रहे, इसलिये वे सब प्रातः होने तक उनके घरों के भीतर ही ठहरे रहे, *और उनमें से कोई भी नष्ट नहीं हुआ।* तो ऐसा हर मसीही जन के साथ है। परमेश्वर की प्रशंसा हो!

शास्त्रसंदर्भ

1 उत्पत्ती 8:21;
2 यिर्मयाह 17:9.
3 मत्ती 5:8;
4 यूहन्ना 1:47;
5 फिलिप्पियों 1:6.
6 1पतरस 1:4;
7 इब्रानियों 8:12.
8 2कुरिन्थियों 3:1–18;
9 रोमियों 8:7;
10 मत्ती 23:25–28;
11 मत्ती 22:25–40;
12 1थस्सलुनीकियों 4:9.
13 यिर्मयाह 32:40;

14 इब्रानियों 13:20;
15 फिलिप्पियों 3:3;
16 1कुरिन्थियों 16:22;
17 1यूहन्ना 3:14–15;
18 1यूहन्ना 2:4;
19 इब्रानियों 11:15–16;
20 इब्रानियों 8:7–9.
21 इब्रानियों 8:10.

अध्याय – 8

एक नया जन्म

बाइबल के अनुसार, प्रत्येक मसीही जन एक चलता फिरता आश्चर्यकर्म है! वह एक *नया मनुष्य* है जिसके पास एक *नया हृदय* है। संक्षिप्त में, वह *नयी सृष्टि* से कुछ कम नहीं है! परंतु पुनरूज्जीवन का "नयापन" यही नहीं ठहर जाता है। पुनरूज्जीवन स्वयं एक *नया जन्म* है।

नया जन्म

यीशु ने उत्तर देते हुए उस से कहा, "मैं तूझ से सच सच कहता हूं कि जब तक कोई नया जन्म न ले, वह परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकता।" नीकुदेमुस ने उस से कहा, "बूढा आदमी कैसे जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दुसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?" यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुझ से सच सच कहता हूं कि जब तक कोई जल और आत्मा से न जन्मे, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। जो शरीर से जन्मा है वह शरीर है, और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है। आश्चर्य न कर कि मैंने तुझ से कहा, 'अवश्य है कि तू नया जन्म ले।' हवा जिधर चाहती है उधर चलती है और तू

उसकी आवाज सुनता है, परन्तू यह नहीं जानता कि वह किधर से आती और किधर को जाती है। प्रत्येक जन जो आत्मा से जन्म लेता है वह ऐसा ही है।

– यूहन्ना 3:3–8

पवित्रशास्त्र के इस भाग में, हम प्रभु यीशु मसीह द्वारा कहे गये कुछ सबसे अधिक अदभुत और निर्देशात्मक शब्द पाते हैं। इस स्थल पर हम सीखते हैं कि मसीही हो जाना वास्तव में दूसरी बार ''जन्म'' लेना है! पुनरूज्जीवन को इन संदर्भो में वर्णित करते हुए, हमारा प्रभु हमारा ध्यान इसके कई महत्वपूर्ण पहलुओं की ओर खींचता है।

नया जन्म मौलिक रूप से भिन्न है

इससे बढ़कर कुछ व्यापक नहीं हो सकता या व्यक्तिगत रूप से हमारे उपर इससे बड़ा प्रभाव क्या पड़ेगा कि हम स्वयं को उत्पन्न करें और जन्म दें! जब हम उत्पन्न होते हैं और जन्म लेते हैं, हम नैसर्गिक क्षेत्र में विद्यमान होते हैं और उस में जीना आरंभ कर देते हैं, और फिर हमारे लिये कुछ भी पहले जैसा समान नहीं होता– *सदा के लिये!* तो यह आत्मिक क्षेत्र में भी होता है : जब हम ''पुनः जन्म'' लेते हैं, आत्मिक संसार में हमारा अस्तित्व और जीवन जीना आरंभ हो जाता है, एवं उसके बाद समस्त अनंतता तक *हमारे लिये कुछ भी पहले जैसा नहीं होगा!* हाल्लेलुयाह!

''पुनः जन्म'' लेना हमारे अस्तित्व का आरंभ है। संक्षिप्त में, नया जीवन हमारे जीवन में कुछ जोड़े जाने वाली वस्तु नहीं है; यह जीवन है! हम जीना आरंभ करते हैं! इसको दूसरे तरीके से कहें तो, पुनः जन्म लेना वह *कुछ* मिलना नहीं है, जो हमारे पास पहले नहीं था; यह तो वह *कुछ बन जाना* है जो हम पहले कभी नहीं थे। मसीही जन के रूप में हमारे अस्तित्व के मूल में नया जन्म पाया जाता है।

नया जन्म वास्तविक जन्म है

नया जन्म जन्म लेने के *समान* नहीं है; यह जन्म है! हमारे प्रभु के शब्दों पर पद 6 में ध्यान दीजियेः ''क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और *जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।*'' नया जन्म वास्तविक जन्म है। जैसे भौतिक जन्म में किसी देह का जन्म होता है, वैसे ही आत्मिक जन्म में किसी आत्मिक स्वरूप का जन्म होता है! ''जो जन्मा है.....आत्मा है।''

इस नये जन्म मे परमेश्वर हमारा पिता है; हम परमेश्वर से जन्मे है। ''जो कोई *परमेश्वर से जन्मा* है वह पाप नहीं करता; क्योंकि *उसका बीज उस में बना रहता* हैः और वह पाप कर ही नहीं सकता, क्योंकि वह *परमेश्वर से जन्मा* है।''[1] क्योंकि यूहन्ना हमसे कहता है कि ''परमेश्वर का बीज'' (यूनानी में स्पर्मा) उनमें बना रहता है जो परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं। पतरस के शब्दों में, हम ''ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो चुके हैं।''[2] यह शब्दावली इतनी सुस्पष्ट है कि हम इसके उपयोग का साहस नहीं करते, अतिरिक्त इसके कि यह परमेश्वर के वचन से दी गयी सीधी शिक्षा है।

नये जन्म की वास्तविकता के आश्चर्यजनक अर्थ हैंः सबसे पहले, यह हमें बताता है क्यों एक सच्चा मसीही जन पाप में नहीं रहता। यूहन्ना हमें उपर उदधृत किये गये पद में बताता है कि एक मसीही जन ''पाप नहीं कर सकता।'' (देखें परिशिष्ट ब) वह कारण, कि एक मसीही पाप नहीं कर सकता, उसके नये जन्म और उसका आत्मिक स्वभाव जो उसके भीतर बसा रहता है, तक जाकर खोजा जा सकता हैः ''जो कोई *परमेश्वर से जन्मा* है वह पाप नहीं करता; क्योंकि *उसका बीज उस में बना रहता* हैः और वह पाप कर ही नहीं सकता, क्योंकि वह *परमेश्वर से जन्मा* है।'' मसीही जन के पास परमेश्वर का स्वभाव उसके भीतर रहता है और इसलिये वह पहले के समान जीवन जीना *सहन नहीं कर सकता।* कोई भी सच्चा विश्वासी जो अपने पुराने तरीकों पर लौटना चाहता है, वह स्वयं को ऐसा करने में असमर्थ पायेगा। पाप *उसके स्वभाव के विरूद्ध पाया जाता है;* वह इससे नफरत करता है।

दूसरा, हम नये जन्म की सच्चाई से सीखते हैं कि कैसे प्रत्येक सच्चे मसीही जन को स्वयं पर दृष्टि डालनी चाहिये (अपने बारे में सोचना चाहिये)। मसीही जन अब एक पापी नहीं रहा,[3] परंतु एक संत हो जाता है।[4] पुनः इसका यह अर्थ नहीं है कि मसीही जन कभी पाप ही नहीं करता है, अथवा पाप उसके शरीर को प्रलोभित नहीं करता, परंतु उसका सच्चा स्वभाव – जो वह सचमुच में भीतर से है– परमेश्वर और पवित्रता से प्रेम करता है। वास्तविकता यह है जो इस तथ्य से उजागर होती है कि हरेक सच्चा मसीही जन जब वह पाप करता है, वह इसे तकलीफ देह और दुखद महसूस करता है *क्यों* वह इतना परेशान महसूस करता है? निश्चित रूप से क्योंकि उसका सच्चा स्वभाव पवित्रता से प्रेम रखना है!

हे प्रिय संत! शैतान आप को यह नहीं बता पाये कि आप मसीह के रूप में गुणरहित और घृणित हैं। आप *परमेश्वर की संतान* हैं– आप उसकी दृष्टि में ''पवित्र और प्रिय''[5]

हैं! उसका मूल स्वभाव (''बीज'') आप के भीतर है और आप परिवार की समानता को धारण करते हैं! नया जन्म वास्तविक जन्म है।

नया जन्म परमेश्वर की संप्रभुता के अनुसार है

नया जन्म मूलभूत रूप से परमेश्वर की इच्छा पर निर्भर करता है, मनुष्य की इच्छा पर नहीं। वे सब जिन्होंने नया जन्म प्राप्त किया है वे न तो लहू से, *न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से,* परंतु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।''[6] प्रभु यीशु इसे पद 8 में स्पष्ट करते हैंः ''हवा (यूनानी. नूमाः हवा, आत्मा, श्वांस) *जिधर चाहती है* उधर चलती है।''

हवा जिधर चाहती है उधर चलती है! कोई व्यक्ति इसे निर्देशित या नियंत्रित नहीं कर सकता या बहने से रोक नहीं सकता। इसी प्रकार परमेश्वर का आत्मा जहां चाहता है, वहां बहता है। इसका अर्थ है कि सर्वाधिक अविश्वसनीय व्यक्ति भी बचाया जा सकता है। कितना ही कठोरतम व्यक्ति हो या अति हठीला ही क्यों न हो, हवा के बहने को नहीं रोक सकता। प्रारंभिक चर्च का कोई भी जन अगर *जानता* था कि एक व्यक्ति कभी नहीं बदलेगा, तो वह तरसुस का शाउल था। परंतु जो चीजें मनुष्य के लिये असंभव हैं, वे परमेश्वर के लिये संभव हैं![7] परमेश्वर की आत्मा का एक झोंका और वह मनुष्य जो पूर्व में विश्वासियों को ''धमकियां दे रहा था और हत्या''[8] कर रहा था, अब मसीह का एक नम्र और दीन शिष्य बन गया, और पूछता है, ''प्रभु, मैं क्या करूं?''[9]

नया जन्म *हमेशा* परमेश्वर का संप्रभु कार्य हैः ''जो कोई आत्मा से जन्मा है *वह* ऐसा ही है।'' ऐसा क्यों है कि मैं एक मसीही हूं और मेरा पड़ोसी मसीही नहीं है? केवल दो संभावनाएं हैंः या तो स्पष्टीकरण *मनुष्य* के पास है (''मैं अधिक प्रतिक्रियाशील था; मैं इतना कठोर हृदय का नहीं था; मैंने स्वयं पहल करके परमेश्वर को खोजा'') या स्पष्टीकरण *परमेश्वर* के पास है (''उसने अपनी आत्मा के द्वारा 'प्रहार' करने का चयन किया, मेरे कठोर हृदय को नरम किया और उसकी बुलाहट के प्रति मुझे प्रतिक्रियाशील बनाया'')। बाइबल इसे बहुत स्पष्ट करती है कि बाद का विकल्प सही हैः ''सो यह न तो चाहने वाले की, न दौड़ने वाले की परंतु दया करने वाले परमेश्वर की बात है।''[10] हमारी स्वाभाविक दशा में, ''कोई परमेश्वर का खोजने वाला नहीं।''[11] ''परंतु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उसे बड़े प्रेम के कारण, जिस से उस ने हम से प्रेम किया, जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया।''[12] जैसे यहेजकेल

की ''सूखी हडिड्यों की घाटी'' के विषय में था, परमेश्वर ने ''हमारे भीतर सांस समाने दीं ताकि हम जी उठ सकें।''[13]

हममें से कोई भी जन जो मसीही हैं उसका केवल एक ही कारण है कि परमेश्वर का आत्मा हमारे दिलों में आधिपत्य के साथ प्रवाहित हुआ। मेरे परिवर्तन वाले दिन, जब मैं जागा, तो मेरे अंदर ऐसा कोई विचार नहीं था कि मैं रात्रि में सोने के समय तक मसीह यीशु में नया प्राणी बन जाउंगा! मैं परमेश्वर को नहीं ''खोज रहा था''; परमेश्वर मेरे विचारों में नहीं था; ऐसा कोई ''मेरी आंखों के सामने परमेश्वर का भय नहीं था।''[14] परंतु दिन समाप्त होते एक आश्चर्यकर्म प्रगट हुआ, और मैं उस रात्रि बिस्तर पर ऐसी शांति ''जो सारी समझ से परे है,''[15] और वह आनंद जो ''वर्णन से बाहर और महिमा से भरा''[16] है, के साथ पहुंचा। हवा जिधर चाहती, उधर बहती है! हैल्लेलुयाह!

नया जन्म ज्ञात है

पुनरूज्जीवन के कार्य में पवित्र आत्मा का कार्य ज्ञात होता है: ''हवा जिधर चाहती उधर बहती और *तुम उसका स्वर सुनते हो*'' (पद 8)। *हवा में सदा गति, जीवन, उर्जा, ध्वनि पायी जाती है।* यह गति एक प्रचंड तूफान के रूप में आ सकती है जो पथ में आने वाली हर वस्तु को बराबर कर देता है, अथवा, यह मंद बयार के रूप में आ सकती है जो डाली से जुड़ी एक पत्ती को आगे पीछे झूलाती है, परंतु *सदैव* उसमें गति है। *अगर कोई गति नहीं है, तो कोई हवा नहीं है।*

हवा को किसने देखा?
न मैंने न तुमने:
परंतु जब पत्तियां लटके हुए कांपती हैं
हवा उनमें से बह रही होती है।

हवा को किसने देखा?
न मैंने न तुमने:
परंतु जब पेड़ अपने सिर झुका लिया करते हैं
हवा उनमें से बह रही होती है।

– क्रिस्टीना रोजेटी

ऐसा ही परमेश्वर की आत्मा के साथ है। *परमेश्वर की आत्मा की गति उसके उत्पन्न होने वाले प्रभावों से प्रगट हैं।* कभी कभी पवित्र आत्मा प्रचंड वेग के साथ आता है और एक ही दिन में तीन हजारों को उसके राज्य में बहा कर ले जाता है।[17] कभी कभी वह मंद बयार के साथ आकर एक व्यक्ति के हृदय को सुसमाचार के प्रति प्रतिक्रिया देने के लिये खोल देता है।[18] परंतु परमेश्वर के आत्मा का गतिमान होना सदैव ज्ञात होता हैः ''जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।'' आत्मिक क्रियाकलाप के प्रभाव प्रत्येक सच्चे मसीही में *दिखाई* देते हैं।

नया जन्म रहस्यमय है

नया जन्म रहस्यमय हैः ''तुम.....नहीं जानते कि वह कहां से आती है और किधर को जाती है'' (पद 8)। पुनः, रहस्य का यह तत्व नये जन्म में अपरिवर्तनीय हैः ''जो कोई आत्मा से जन्मा है *वह* ऐसा ही है।''!

यह एक बहुत अदभुत बात हैः हम ''नहीं जानते'' अगला कौन हो सकता है! पवित्र आत्मा एक व्यक्ति है, और हम पूर्वानुमान नहीं लगा सकते कि वह किस रीति से कार्य करने जा रहा है। वह एक आत्मा को बचा सकता है अथवा वह तीन हजारों को बचा सकता है। वे जो सुसमाचार को ''दूरभाष सुसमाचार'' के द्वारा विक्रय करते हैं वे एक प्रतिशत के दसवें हिस्से जैसे अल्प समय में पूर्वानुमान लगाने का दावा कर लेते हैं कि ''मसीह के लिये कितने निर्णय'' लिये जायेंगे। ऐसा पूर्वानुमान केवल एक बात सिद्ध करता हैः ये ''परिवर्तित जन'' व्यवहारिक मनोविज्ञान के उत्पादों से बढ़कर ज्यादा कुछ नहीं हैं; वे परमेश्वर के आत्मा का कार्य *नहीं* हैं! नया जन्म रहस्यमय है!

शास्त्रसंदर्भ

1 1यूहन्ना 3:9;

2 2पतरस 1:4;

3 लुक 6:32–34;

4 1कुरिन्थियों 1:2;

5 इफिसियों 5:3.

6 कुलुस्सियों 3:12;

7 यूहन्ना 1:13;

8 लुक 18:27;
9 प्रेरितों के काम 9:19;
10 प्रेरितों के काम 22:10;
11 रोमियों 9:16;
12 रोमियों 3:11.
13 इफिसियों 2:4–5;
14 यहेजकेल 37:1–10;
15 रोमियों 3:18;
16 फिलिप्पियों 4:7;
17 1पतरस 1:8;
18 प्रेरितों के काम 2:37–41;
19 प्रेरितों के काम 16:14.

अध्याय – 9

नया स्वभाव

झूठे नबियों से सावधान रहो जो भेड़ों के वेश में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु भीतर से वे भूखे, फाड़–खाने वाले भेड़िए हैं। उनके फलों से तूम उन्हें पहचान लोगे। क्या कंटीली झाड़ियों से अंगुर या कांटो से अंजीर तोड़े जाते है? इसी प्रकार प्रत्येक अच्छा पेड़ अच्छा फल देता है, परन्तु निकम्मा पेड़ बुरा फल देता है। अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं दे सकता और न ही निकम्मा पेड़ अच्छा फल दे सकता है। प्रत्येक पेड़ जो अच्छा फल नहीं देता, काटा और आग में झोंक दिया जाता है। अतः तुम उनके फलों से उन्हे पहिचान लोगे।

– मत्ती 7:15–20

इन वचनों के अनुसार, पुनरूज्जीवन न केवल *नया जन्म* है, परंतु *नया स्वभाव* भी प्रदान करता है। यह महत्वपूर्ण है कि ''स्वभाव'' शब्द इस अंश में कभी भी प्रयुक्त नहीं किया गया है, यद्यपि, यह धारणा सर्वत्र व्याप्त है। ऐसा इसलिये क्योंकि हमारा ''स्वभाव'' वह कुछ नहीं है जो हमारे ''पास'' है, परंतु हम जो हैं, उसका वर्णन है। प्रभु ने दो *प्रकार* के पेड़ों के बारे में जो वचन कहे, उसमें ''स्वभाव'' की उचित व्याख्या सामने आती है–

भले पेड़ और बुरे पेड़। ये सरल शब्द पुनरूज्जीवन की सच्चाई के महान निर्देश से भरे हुए हैं। चार महत्वपूर्ण और व्यापक सत्य तुरंत यहां दिखाई देते हैं:

केवल दो प्रकार के पेड़ हैं

प्रभु यीशु मसीह के अनुसार, एक पेड़ या तो "अच्छा" होता है अथवा "बुरा।" प्रत्येक मनुष्य या तो "कांटों की झाड़ी" होता है या एक "दाखलता," एक "अंजीर का वृक्ष" या "कांटेदार पौधा"। इनमें कोई "आधे भाग" वाला समूह नहीं है – आधा अंजीर और आधे कांटे। न इन पदों में हम किसी प्रकार के "मिश्रित" प्रकार के पेड़ का वर्णन पाते हैं। एक पेड़ में "दो स्वभाव" होना संभव नहीं है और उसी समय एक पेड़ के लिये कांटे वाली झाड़ी और दाखलता *दोनों* एक ही समय में होना संभव नहीं है! प्रत्येक मनुष्य या तो कोई एक प्रकार का होगा या दूसरे प्रकार का।

पेड़ अपने स्वभाव के अनुसार फल लाता है

"इसी प्रकार हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है और निकम्मा पेड़ बुरा फल लाता है" (पद 17)। दूसरे शब्दों में, जिस प्रकार का पेड़ होगा वैसे ("स्वभाव") के फल *लगेंगे।* दाखलता अंगुर पैदा करती है; कांटे कांटे उत्पन्न करते हैं। हमारे प्रभु के कथन की दृढ़ता देखिये: "*हर एक* अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है।" प्रिय पाठक, *आप को कोई खाली शब्दों से धोखा न देने पाये*[1] और यह सोचकर स्वयं को धोखा न खाने दो कि "*कुछ* अच्छे पेड़ *बुरे* फल लाते हैं।" प्रभु यीशु मसीह के अनुसार, ऐसा *कभी नहीं* होता! यद्यपि मसीह जन पाप करता और कई तरह से डगमगाता है,[2] उसका जीवन निसंदेह अच्छे फल से प्रसिद्धी पाता है,[3] न कि "कांटे और कांटेदार पौधों से।"[4] कदाचित इसमें कोई संदेह न होने पाये, क्योंकि प्रभु इसे और अधिक बल देकर विशेषकर पद 18 में बताते हैं: "अच्छा पेड़ बुरा फल *नहीं ला सकता* और न निकम्मा पेड़ अच्छा फल *ला सकता* है।"

जैसे एक अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता, वैसा ही हम पद 18 के उत्तरवर्ती पद से सीखते हैं कि एक अपुनरूत्थित मनुष्य के लिये *अच्छे* फल लाना संभव नहीं है। सेब के फल बाहर से कांटे वाली झाड़ी में बांधे जा सकते हैं, परंतु वे कांटे वाली झाड़ी द्वारा *उत्पन्न* नहीं किये जा सकते। कांटे वाली झाड़ी के गुण अनुसार वे *स्वाभाविक*

रूप से उत्पन्न नहीं हो सकते। पद 19 में हमें *हरेक* पेड़ का भाग्य बताया गया है जो अच्छे फल नहीं लाता है: "जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में डाला जाता है।"

पेड़ का फल उसका स्वभाव प्रगट करता है

पेड़ का फल पेड़ को, पेड़ नहीं *बनाता*; यह तो *प्रगट* करता है कि पेड़ क्या है। प्रभु यीशु झूठे भविष्यवक्ताओं को दी हुई अपनी चेतावनी में इस सामान्य सिद्धांत को सामने रखते हैं, "तुम उन्हें उनके *फल* से जान लोगे" (पद 16)। फिर वे "अच्छे पेड़ों" और "बुरे पेड़ों" के बारे में शिक्षा देते हुए आगे बढ़ते हैं और इस महान सत्य को पद 20 में दोहराते हुए समाप्त करते हैं: "सो उन के *फलों* से तुम उन्हें पहचान लोगे।"

पेड़ का फल पेड़ को, पेड़ नहीं *बनाता*; अंगूर उत्पन्न करने की चेष्टा में कोई दाखलता नहीं बन जाता! केवल परमेश्वर की ओर से एक चमत्कार हममें वह बदलाव ला सकता है जो हम नहीं हैं! इसके विपरीत, पेड़ का फल *प्रगट करता* है कि पेड़ क्या है: *अंगूर का उत्पादन प्रमाण* है कि यह आश्चर्य परमेश्वर की ओर से *पहले ही* हो चुका है।

यूहन्ना 8:47 में हमारे प्रभु ने यहूदियों को यह सिद्धांत इन शब्दों द्वारा बहुत अच्छे से समझाया: "जो परमेश्वर से होता है, वह परमेश्वर की बातें सुनता है; और तुम इसलिये नहीं सुनते कि परमेश्वर की ओर से नहीं हो।" पुनः ध्यान दीजिये कि पेड़ का फल पेड़ को, पेड़ नहीं बनाता; परंतु इसके बजाय प्रगट करता है कि यह क्या है। कई लोग सोचते हैं कि "परमेश्वर के वचनों" के प्रति हमारी प्रतिक्रिया हमें "परमेश्वर का" बनाती है। यीशु इसके विपरीत कहता है। ऐसा इसलिये है *क्योंकि* हम "परमेश्वर के" हैं अतः हम "परमेश्वर के वचनों" के प्रति उचित प्रतिक्रिया देते हैं। ऐसा ही समान सत्य यूहन्ना 10:26–27 में देखा गया है: "परंतु तुम इसलिये प्रतीति नहीं करते कि मेरी भेड़ों में से नहीं हो। मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूं और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।"

एक बार और हमारा प्रभु इसे स्पष्ट करता है कि मनुष्य विश्वास करने से ही भेड़ नहीं बना जाता है, जैसा कई लोग मानते हैं, परंतु चूंकि वे भेड़ हैं इसलिये विश्वास करते हैं! महिमामयी आश्चर्य! पुनरूज्जीवन नया स्वभाव *प्रदान* करता है!

बुरे पेड़ पहजाने जा सकते हैं

लोगों में बहुत अधिक प्रचलित मत के विपरीत, सच्चे और झूठे विश्वासियों के बीच अंतर करना संभव है। प्रभु यीशु मसीह ने दो बार उपर उदधृत पदों में यह आश्वासन दियाः ''तुम उन्हें जान *लोगे* '' (पद 16)। ''तब तुम, उन्हें जान *लोगे* '' (पद 20)। इस प्रश्न, ''हम उन्हें *कैसे* जान लेंगे?'' के लिये हमारे प्रभु का उत्तर सरल और साफ हैः ''उनके फलों से।''

इसका यह अर्थ नहीं है कि हम एक मसीही सभा में जाकर पांच मिनिट में जान जायेंगे कि कौन कौन से लोग सच्चे विश्वासी हैं। कई बार वे जो एक क्षण के लिये मजबूत व ईमानदार दिखाई पड़ते हैं, बाद में दुर्बल पड़ जाते हैं। उसी प्रकार, वे जिनका परिवर्तन पहले तो बहुत ही दुर्बल और संदिग्ध दिखाई दे रहा था, अक्सर वे बीस साल उपरांत भी परमेश्वर के साथ चलते हुए प्रबल और मजबूत पाये गये। विश्वास का प्रत्येक व्यवहार अपने खरेपन के लिये, समय की कसौटी में परखा जाना चाहिये। तौभी, यह तथ्य अभी भी मौजूद है कि जल्दी या बाद में – और कई बार बहुत जल्दी– मसीह के झूठे प्रवक्ता की वास्तविक दशा ज्ञात हो जायेगीः ''जब अंकुर निकले और बालें लगीं, तो जंगली दाने भी *दिखाई दिए*।''[5]

सच्चे परिवर्तन के विषय पर किसी भी चर्चा में उदधृत किये जाने वाले पहले पदों में से एक पद यह है, ''दोष मत लगाओ कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए'' (मत्ती 7:1)। अक्सर ही, इस पद को उदधृत करने वाला व्यक्ति यह जान पाता है कि हमारे प्रभु द्वारा मनुष्य को फलों द्वारा जानने के बारे में दिये गये पदों से कुछ पहले यह पद कहा गया है (पद 16)। ''दोष मत लगाओ'' वाली आज्ञा नहीं ''पहचानने'' वाली आज्ञा *नहीं हो सकती* है। देखा जाये तो, हमारा प्रभु हमें पद 6 में चेतावनी देता है, ''पवित्र वस्तु कुत्तों को न दो, और अपने मोती सूअरों के आगे मत डालो।'' हमें कैसे जानना होगा कि ये ''कुत्ते'' और ''सूअर'' कौन हैं अगर हम पहचानने के अर्थ में ''दोष'' नहीं लगाते हैं? वास्तव में, प्रभु यीशु हमें दोष लगाने की *आज्ञा देते* हैं, यद्यपि ''दिखाई देने के आधार पर'' नहीं परंतु ''धार्मिकतापूर्ण न्याय करने के द्वारा।''[6]

अच्छे पेड़ अच्छे मनुष्यों के प्रतिनिधि हैं

या तो पेड़ को अच्छा कहो और उसके फल को भी, या पेड़ को निकम्मा कहो और उसके फल को भी, क्योंकि पेड़ अपने फल ही से पहिचाना जाता है। हे सांप

के बच्चों, तुम दुष्ट होते हुए अच्छी बातें कैसे कह सकते हो'? क्योंकि जो हृदय में भरा होता है, वही मुंह पर आता है। भला मनुष्य अपने भले भंडार से भली बातें निकालता है; और बुरा मनुष्य अपने बुरे भंडार से बुरी बातें निकालता है।

–मत्ती 12:33–35

इन वचनों में, मत्ती 7:15–20 के चार प्रमुख सत्यों को प्रभु यीशु द्वारा थोड़ी भिन्न शब्दावली का उपयोग करते हुए दोहराया गया है। इसके साथ, एक पांचवा प्रमुख सत्य जो मत्ती 7 में अंर्तनिहित है, यहां पूर्ण अभिव्यक्ति पाता हैः प्रभु यीशु मसीह के अनुसार, धर्मविज्ञानी स्तर पर कुछ मनुष्यों को ''अच्छा'' और कुछ मनुष्यों को ''बुरा'' कहना उचित है।

हे मसीही जन, क्या तु स्वयं को एक ''अच्छा मनुष्य'' समझता है? बेशक, यह सत्य है, कि *मसीह से अलग होकर* हममें से किसी के पास *कोई* अच्छाई नहीं है। उस अर्थ में, ''कोई उत्तम नहीं केवल एक परमेश्वर।''[7] परंतु, हे प्रिय, *हम मसीह से अलग नहीं हैं!* बाइबल बरनबास का वर्णन ''*एक अच्छे मनुष्य* और पवित्र आत्मा और विश्वास से परिपूर्ण व्यक्ति के रूप में करती है।''[8] पौलुस रोमी मसीहियों के बारे में कहता है कि वे ''भलाई से भरे''[9] हैं। अगर हमारा धर्मविज्ञान ऐसी भाषा के लिये किसी स्थान की अनुमति नहीं देता है, तो यह बाइबल पर आधारित धर्मविज्ञान नहीं है। प्रत्येक मसीही जन के मन में परमेश्वर ने एक आश्चर्यकर्म किया है! *पुनरूज्जीवन नये (भले!) स्वभाव का प्रदान किया जाना है।*

शास्त्रसंदर्भ

1 इफिसियों 5:5–6;

2 याकूब 3:2;

3 यूहन्ना 15:16;

4 इब्रानियों 6:8.

5 मत्ती 13:26;

6 यूहन्ना 7:2.

7 मरकुस 10:18;

8 प्रेरितों के काम 11:24;

9 रोमियों 15:14.

अध्याय – 10

क्रूस पर चढ़ाया जाना और पुनरूत्थान

तो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें कि अनुग्रह अधिक होता जाए? कदापि नहीं! हम जो पाप के लिए मर गए फिर उस में कैसे जीवन व्यतीत करें? क्या तुम नहीं जानते कि हम सब जो बपतिस्मा के द्वारा मसीह यीशु के साथ एक हुए, बपतिस्मा द्वारा उसकी मृत्यू में भी सहभागी हुए? इसलिए हम बपतिस्मा द्वारा उसकी मृत्यू में सहभागी होकर उसके साथ गाड़े गए है, जिससे कि पिता की महिमा के द्वारा जैसे मसीह जिलाया गया था, वैसे हम भी जीवन की नई चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसके साथ उसकी मृत्यु की समानता में एक हो गए हैं, तो निश्चय ही उसके जी उठने की समानता मे भी एक हो जाएंगे, यह जानते हुए कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, कि हमारा पाप का शरीर निष्क्रिय हो जाए, कि हम आगे को पाप के दास न रहें; क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छुट कर निर्दोष ठहरा।

– रोमियों 6:1–7

"मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है; और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से

जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिए अपने आप को दे दिया।"

– गलातियों 2:20

कईयों ने इन वचनों को पढ़ा है और दो हज़ार वर्ष पहले क्रूस पर चढ़ाए जाने की 'कल्पना करने' की कोशिश की है। अन्य लोग 'स्थितीय' सत्य के विषय में कहते हैं – बनावटी बातों का धूंधला क्षेत्र, जहां पर जो बातें *वास्तव में* सत्य नहीं है, वे 'स्थितीय रूप से' सत्य होती हैं। जब हम यह समझने लगते हैं कि ये वचन नए जन्म में जो होता है उसकी *साकार वास्तविकता* का उल्लेख करते हैं, तब उनका हमारे लिए कोई वास्तविक अर्थ होगा।

यह सच है कि विश्वासी द्वारा पाया जाने वाला प्रत्येक लाभ कलवरी पर यीशु मसीह द्वारा उस समय *खरीद लिया गया*, जब वह हमारे प्रतिनिधि के रूप में मर गया और फिर जीवित हो उठा। परंतु ये लाभ वास्तव में उस समय हमारे होते हैं और हम उन्हें केवल तब अनुभव करते हैं, जब हम नए जन्म में *मसीह के साथ एक होते हैं।* पौलुस रोमियों 6 में नए जन्म के विषय में बोल रहा है, यह विश्वासियों के "मरे हुओं में से जी उठा हुआ" और जो अब "नए जीवन की सी चाल चलते हैं" इस उल्लेख से स्पष्ट होता है। यही बात गलातियों 2:20 के विषय में भी कही जा सकती है। पौलुस के *नया जन्म* पाने के समय से पुराना शाऊल *"जीवित न रहा"* और मसीह नए पौलुस में "जीवित है।"

यह ध्यान दें कि रोमियों 6:2–7 के अनुसार, *सभी* विश्वासी मसीह के साथ उनके एक होने के द्वारा क्रूस पर चढ़ाए गए हैं, दफनाए गए हैं, और मसीह के साथ जिलाए गए हैं। मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया जाना नए जन्म के समय होता है। यह आत्मिकता की उन्नत अवस्था नहीं है कि उसे खोजा जाए, परंतु पूरी हुई वास्तविकता है जिस पर हमें निर्भर रहना है (वचन 6)। प्रत्येक सच्चा मसीही पौलुस के साथ कहता है, *"मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है।"*

क्रूस पर चढ़ाया जाना और पुनरूत्थान

नया जन्म क्या है? यह *नए मनुष्य* का *नया जन्म* है जो *नई सृष्टि है* और उसके पास *नया हृदय* और *नया स्वभाव* है! परंतु यह इससे अधिक है : *यह अपने पुराने मनुष्यत्व*

(जो व्यक्ति पहले आदम में था) *को क्रूस पर चढ़ाना, मृत्यु और दफनाना और अपने नए मनुष्यत्व* (जो हम अब मसीह में हैं) *का जी उठना है ताकि "नए जीवन की सी चाल चलें।"*

हे मसीही, आपका 'पुराना मनुष्यत्व' क्रूस पर चढ़ाया गया, मारा गया और गाड़ा गया, इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ यह है कि 'पुराने' आप – जो आप पहले थे – हमेशा के लिए बीत गये। आप फिर वह व्यक्ति कभी न होंगे। आपमें से अधिकतर जो इन वाक्यों को पढ़ते हैं, पुराने चार्ल्स लीटर को कभी नहीं जानते थे, और मैं धन्यवाद देता हूं कि आप कभी जान नहीं पाएंगे, क्योंकि वह व्यक्ति मर चुका है और हमेशा के लिए मिट चुका है! परमेश्वर को महिमा मिले! मसीही नया व्यक्ति है। पुनरूत्थित मसीह के साथ उसके मिलन से वह 'मृतकों में से जी उठा है,'[1] और वह *जीवित* है इसलिए, अब वह नए जीवन की *चाल* चल सकता है!

अक्सर जो कुछ सिखाया जाता है उसके विपरीत, बाइबल कभी हमारे पुराने मनुष्यत्व को अब भी जीवित के रूप में नहीं दर्शाती – चाहे क्रूस पर लात झाड़ता हुआ और संघर्ष करता हुआ या हममें कहीं छिपा हुआ। पुराना मनुष्यत्व मर चुका है, गाड़ा गया है, और हमेशा के लिए मिट गया है। *" मैं* (मेरा पुराना मनुष्यत्व, जो व्यक्ति मैं पहले था) मसीह के साथ *क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा।"*

इन सच्चाइयों के प्रकाश में, तुरंत यह प्रश्न उत्पन्न होता है : "यदि यह सब सच है, तो मुझे पाप के साथ इतनी सारी समस्याएं क्यों हैं?" बाइबल इस प्रश्न का उत्तर देती है, 'पुराना मनुष्यत्व' जो हमेशा के लिए चला गया है उसके संदर्भ में नहीं, परंतु उस 'देह' के संबंध में जो अब भी हमारे साथ विद्यमान है। पाप के साथ मसीही व्यक्ति की अनवरत लड़ाई चलती रहती है क्योंकि उसके व्यक्तित्व का एक पक्ष है जो अब तक छुड़ाया नहीं गया है – शरीर। *शरीर न छुड़ाई हुई भौतिक देह जिसे उस स्थान के रूप में देखा जाता है जहां पाप खुद की प्रभुता दिखाने का प्रयास करता है।* पाप अब भी मसीही के 'मरणहार देह' में 'राज्य' करता है।[2]

नया नियम शरीर का उल्लेख "हमारे पाप की देह,"[3] "इस मृत्यु की देह,"[4] और "हमारे मरणहार शरीर"[5] के रूप में करता है। इस संदर्भ में, पापों को (*सभी* पाप, हमारे 'मानसिक' पाप भी) वास्तव में "देह के काम"[6] कहा जाता है और मसीहियों से कहा गया है कि "अपने उन अंगों को मार डालें जो पृथ्वी पर हैं।"[7] इसका अर्थ यह नहीं है कि देह अपने आप में पापी है। पौलुस 1 कुरिन्थियों 6 में एक अद्भुत बात कहता है कि

शरीर "वरन् प्रभु के लिए, और प्रभु देह के लिए है।"[7] यह इस ग्रीक कल्पना के बिल्कुल विपरीत है कि शरीर "प्राण का कैदखाना" है। परंतु बाइबल स्पष्ट रूप से उद्धार न पाए हुए मरणहार शरीर को उस स्थान के रूप में दर्शाती है, जहां पर पाप अब भी राज्य करने की कोशिश करता है।

मसीही होने के नाते, हम अब तक प्रभु के आगमन के समय होने वाले *हमारे देह के छुटकारे*[9] की प्रतीक्षा कर रहे हैं। जब ऐसा होगा, तब हम *सारे* पापों से *पूर्ण रूप से* छुड़ाए जाएंगे। परंतु इस दौरान, केवल दो अत्यंत महत्वपूर्ण सत्य हैं जिन्हें हमें थामने की जरुरत है।

नई पहचान

इनमें से सबसे पहले यह है कि *हमारे पास नई पहचान है।* मसीही होने के नाते, हम मरे हुओं में से जी उठे हैं, ताकि नए जीवन की सी चाल चलें। अर्थात हम वास्तव में कौन हैं, और आज से दस हज़ार वर्षों बाद हम कौन *होंगे!* शरीर वह हम *नहीं* है जो हम वास्तव में हैं। यह हमारे कुल व्यक्तित्व का मात्र *सतही* और *अस्थायी* पक्ष है, और वह पहले ही विनाश के लिए ठहराया गया है। कुछ ही समयों में हमारे शरीरों का छुटकारा होगा और देह की बाधाएं हमेशा के लिए दूर हो जाएगी।

यह वस्तुस्थिति कि हम ''मरे हुओं में से जी उठे हैं'', हमारे उद्धार के समय *महसूस की गई वास्तविकता* है। यद्यपि जैसे–जैसे समय बीतता जाता है, और हम समझने लगते हैं कि हमारे शरीर में कितनी बुराई वास करती है और मसीही होने के नाते हमारी असफलताएं कितनी बड़ी हैं, तब 'नएपन' का यह बोध हम धीरे–धीरे खोने लगते हैं। तब खुद के विषय में कुछ भी कहना अधिक बुरा नहीं होता – हम 'दुष्ट,' 'अभागे,' 'दुखी' हैं। अर्थात, ऐसी अवस्था में, हमारे लिए किसी भी अंश में आनंद या भरोसे के साथ ''खुद को परमेश्वर को चढ़ाना'' असंभव होता है : ''प्रभु, मैं आनंद के साथ खुद को तुझे समर्पित करता हूं – अभागा, भ्रष्टता से पूर्ण जो मैं हूं – ताकि आज आनंद और भरोसे के साथ तेरी सेवा कर सकूं।'' कभी नहीं! जब तक खुद के विषय में हमारी यह धारणा रहेगी, तब तक हम खुद को परमेश्वर के सन्मुख आनंद के साथ समर्पण नहीं कर सकते। *परंतु किसी भी मसीही के विषय में पौलुस का यह दृष्टिकोण नहीं है!* बल्कि पौलुस हमें उपदेश देता है कि हम – "अपने आप को मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर, अपने अंगों को धर्म के हथियार होने के लिए परमेश्वर का सौंपे।"[10] हे

मसीही, तू आज उतना ही 'नया' है और 'मरे हुओं में से उतना ही जीवित है' जितना तू तेरे उद्धार के दिन था! तेरे देह की दुष्टता प्रायः वर्णनातीत है, परंतु तू वास्तव में देह नहीं है, और जल्द ही अब वह तुझे परेशान नहीं करेगी! अपने पापों को परमेश्वर के सन्मुख अंगीकार कर, उससे क्षमा और शुद्धता प्राप्त कर, उसके बाद *खुद को उसके सामने प्रस्तुत कर* – आनंद के साथ और हियाव के साथ – *इसी समय,* ताकि 'जीवन की नवीनता में' जो मसीह में तेरी है, तू उसकी सेवा कर सके!

नई सामर्थ

दूसरा सत्य जो हमें समझना है, वह यह है कि *हमारे पास नई सामर्थ है।* मसीही विश्वासी के पास न केवल नई पहचान है, बल्कि उसमें पाप से पृथक होने की नई योग्यता भी है। हमारे मरणहार शरीर ने अब तक छुटकारा नहीं पाया है, और पाप अब भी उनमें 'राज्य' करने का प्रयास करता है, *फिर भी हमें उन्हें ऐसा करने की अनुमति देने की ज़रूरत नहीं है :* "इसलिए पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज्य न करे कि तुम उसकी लालसाओं के अधीन रहो।"[11] हमें अपने मरणहार शरीर में पाप को राज्य करने की 'अनुमति नहीं देना है!

विजय का यह आश्वासन संपूर्ण नए नियम में दोहराया गया है : गलातियों 5 में, हमें स्मरण दिलाया गया है कि पवित्र आत्मा देह से बहुत अधिक सामर्थी है। यद्यपि शरीर "आत्मा के विरोध में लालसा करता है,"[12] फिर भी हमसे यह *प्रतिज्ञा* की गई है कि जब हम 'आत्मा में चलेंगे,' तब हम *''शरीर की अभिलाषाओं को पूरा नहीं करेंगे।''*[13]

फिर से, मसीहियों को रोमियों 8 में यह आश्वासन दिया गया है कि 'आत्मा के द्वारा' उनके पास पाप को 'मारने' की सामर्थ है: "क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे, तो मरोगे; यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे।"[14] और रोमियों 6 इसी सत्य की घोषणा बार–बार करता है। उदाहरण के तौर पर, वचन 6 में हम देखते हैं कि हमारे पुराने मनुष्यत्व के द्वारा हम पर राज करने वाली देह की सामर्थ तोड़ दी गई है : क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम भविष्य में पाप के दासत्व में न रहें। और वचन 4 में, हमें यह आश्वासन दिया गया है कि और तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं, वरन् अनुग्रह के अधीन हो।

सत्य को अपनाना

मसीही व्यक्ति के पास पहचान और नई सामर्थ दोनों ही है। ये *तथ्य* या सच्चाइयां है, हम उन पर विश्वास करें या न करें। उन पर विश्वास करना उन्हें सत्य नहीं बनाता, और उन पर विश्वास न करना उन्हें असत्य भी नहीं बनाता। हमारे दोषपूर्ण बोध के कारण वास्तविकता बदल नहीं जाती। यदि कुछ बदलता है, तो वास्तविकता के विषय में हमारा *अनुभव* बदलता है। प्रभु यीशु मसीह के अनुसार, *इस सत्य* को जानना और उस पर विश्वास करना, पाप की गुलामी से हमारी आज़ादी के लिए नितांत आवश्यक है। "यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे, "और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।"[15] "सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर; तेरा वचन सत्य है।[16] इन बयानों के प्रकाश में, यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि पौलुस *सत्य* की नींव डालते हुए, रोमियों की अपनी पत्री के पहले *साढ़े पांच अध्याय* खर्च कर देता है, और रोमियों 6:11 में संपूर्ण पत्री में शब्दशः पहली बार वह अपने श्रोताओं से कुछ *करने* के लिए कहता है! जब अंततः यह पहला उपदेश आता है, तब वह *सत्य* पर विश्वास करने और उसे अपनाने पर केन्द्रित रहता हैः ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिए तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिए मसीह यीशु में जीवित समझो।"[17] 'समझो' का अर्थ यह मानना नही है कि कोई बात सत्य है, जबकि हम जानते हैं कि वह सत्य नहीं है; समझने का अर्थ है *जो वह है उसकी वास्तविकता को स्वीकार करना।*

अनुग्रह में उन्नति करने हेतु सत्य को समझने और विश्वास करने की हमारी ज़रूरत पौलुस की पत्री का मुख्य विषय है : और इस संसार के सदृश न बनो, परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए।"[18] जब हमारे मनों का नवीनीकरण होता है – तब हम उसकी वास्तविकता देख सकते हैं – ताकि हम "परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहें।"[19] पौलुस इफिसियों 4 में यही बात कहता है जब वह हमसे अनुरोध करता है, " तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए" (पद 23–24)। जब एक मसीही व्यक्ति पाप में पड़ जाता है, यह हमेशा ही सत्य पर विश्वास करने और उस पर कार्य न कर पाने का परिणाम है!

फिर से, अनुग्रह में उन्नति की शिक्षा देने की नए नियम की प्रणाली पहले यह है : आप कौन हैं यह समझें![20] (अर्थात सत्य पर विश्वास करें और उसे अपनाएं), और दूसरी बात : आप जो हैं, वह बने रहें![21] (अर्थात, सक्रिय रूप से पाप का इन्कार करें

और जानबूझकर खुद को धार्मिकता के लिए दे दें)। प्रिय मसीही, आपको दुख और पराजय का जीवन बिताने की ज़रूरत नहीं है! आपको दिन–प्रतिदिन ऐसे विवेक के साथ चलने की ज़रूरत नहीं है जो ज्ञात पाप से लगातार दूषित है। परमेश्वर से बिनती करें कि वह सत्य के प्रति आपकी आंखों को खोलें।[22] विश्वास से इस वास्तविकता को थाम लें कि आप वास्तव में कौन हैं। उसके बाद, मसीह ने आपके लिए जो कुछ किया है उस पर स्थिर खड़े रहें और न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिए पाप को सौंपें, पर अपने आप को मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपें, और अपने अंगों को धर्म के हथियार होने के लिए परमेश्वर का सौंपें।[23] परंतु मैं कहता हूं, "आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे।"[24] आप जो हैं, वह बने रहें!

पराजित शत्रु

प्रिय मसीही, आपके जीवन में पाप के दिन गिने हुए हैं! कुल्हाड़ा पहले ही आपके पाप की जड़ में रखा गया है। जमीनी स्तर पर काटे हुए पेड़ के समान, उसके पत्ते अब भी कुछ समय तक हरे दिखाई देते हैं, परंतु सच्चाई यह है कि *उसका जीवन समाप्त हो चुका है।* कुछ ही समय की बात है जब हमारा पत्ता सुख जाएगा और ज़मीन पर गिर जाएगा!

पाप हारा हुआ शत्रु है। पाप के विरोध में युद्ध पहले ही जीत लिया गया है। बदलाव का विरोध करने वाले उस छोटे से दल के समान है जो *शरणागति की संधि पर हस्ताक्षर करने के बाद भी* अज्ञानतावश कभी–कभी लड़ना जारी रखते हैं, उसी तरह पाप हमारे जीवन में *अंतिम विजय की बिना किसी आशा से* लड़ता रहता है। यद्यपि पाप के साथ विश्वासी का संघर्ष आवेशपूर्ण होता है, फिर भी लड़ाई के अंतिम परिणाम का आश्वासन हमारे पास है।

मसीही के लिए पाप मात्र ग्रीष्म की प्रारंभिक बर्फ है। ऐसी बर्फ गर्म मौसम में भी समय–समय पर गिरती है, परंतु वे बीते हुए जाड़े की मृत्यु की मात्र धड़कने हैं। एक या दो दिन में वे पिघलकर मिट जाते हैं। और *उनमे निर्मम ग्रीष्म ऋतु के आगमन को रोकने की ताकत नहीं होती।* हे मसीही, पाप आपके जीवन में मौका नहीं पा सकता। आप इस आत्मविश्वासपूर्ण ज्ञान के साथ उसके विरोध में लड़ सकते हैं कि गर्मी की ऋतु, न कि

जाड़े का मौसम, आ रही है! पाप के जिन अवशेषों का आप अब भी सामना करते हैं, वे *आप पहले जो थे उनके मात्र अवशेष हैं,* और वे जल्द ही हमेशा के लिए बीत जाएंगे!

शास्त्रसंदर्भ

1 रोमियों 6:13.
2 रोमियों 6:12;
3 रोमियों 6:6;
4 रोमियों 7:24;
5 रोमियों 6:12;
6 रोमियों 8:13;
7 कुलुस्सियों 3:5;
8 रोमियों 6:13;
9 1कुरिन्थियों 6:13;
10 रोमियों 8:23.
11 रोमियों 6:13;
12 रोमियों 6:12;
13 गलातियों 5:17;
14 रोमियों 8:13.
15 यूहन्ना 8:31–32;
16 यूहन्ना 17:17;
17 रोमियों 6:11;
18 रोमियों 12:2;
19 रोमियों 12:2;
20 रोमियों 6:11[20];
21 रोमियों 6:12–13.
22 इफिसियों 1:17–18;
23 रोमियों 6:13;
24 गलातियों 5:16.

अध्याय – 11

क्षेत्रों में परिवर्तन

शरीर से आत्मा की ओर

अब तक हमने नए जन्म से संबंधित छः वचनों पर विचार किया, उनमें से प्रत्येक ने हमें इस महान आश्चर्यकर्म के स्वरूप में और अंतर्दृष्टि प्रदान की है। नया जन्म क्या है? यह नई सृष्टि, नया मनुष्यत्व, नया हृदय, नया जन्म, नया स्वभाव है। यह हमारे पुराने मनुष्यत्व को क्रूस पर चढ़ाना है और हमारे नए मनुष्यत्व का पुनरूत्थान है। परंतु नया जन्म इससे अधिक है। यह क्षेत्रों में बदलाव है।

शरीर विरुद्ध आत्मा

क्योंकि शारीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं, परन्तु आध्यात्मिक तो आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं। शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु हैं, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है; क्योंकि शारीरिक मन तो परमेश्वर से शत्रुता करता है। वह न तो परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन है और न ही हो सकता है। जो शारीरिक हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। यदि वास्तव

में परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है, तो तूम शरीर में नहीं, वरन् आत्मा में हो। परन्तु यदि किसी में मसीह का आत्मा न हो तो वह उसका नहीं है।

– रोमियों 8:5–9

इन वचनों से यह स्पष्ट है कि नए जन्म में *क्षेत्रों का परिवर्तन* शामिल है। उद्धार या नया जन्म न पाए हुए लोगों को "वे लोग जो शरीर में हैं" कहा जाता है। नया जन्म पाए हुए लोग वे लोग हैं जो "शरीर में नहीं हैं, परंतु आत्मा में हैं।" (दुख की बात यह है कि एन आय व्ही बाइबल में वचन 8 और 9 में दिए गए 'शरीर में' शब्दों के स्थान पर *"पापमय स्वभाव* से *नियंत्रित"* कहा गया है। यहां पर बाइबल अनुवाद के स्थान पर धर्मसिद्धान्त की कल्पना को स्थान दिया गया है।)

मसीही लोग वे हैं जो अब 'शरीर में' नहीं है; वे स्थायी रूप से आत्मा के क्षेत्र में वास करते हैं। कभी मसीही लोग जब अधीरता का बर्ताव करते हैं या शायद क्रोधित हो जाते हैं, तब वे कहते हैं, "मैंने शरीर में होकर ऐसा किया।" परंतु वास्तव में, मसीही लोग अब जिस प्रकार स्थायी रूप से 'उद्धार न पाए हुए' बन नहीं सकते, उसी प्रकार स्थायी रूप से 'शरीर में' नहीं हो सकते!

पौलुस जब कहता है कि नया जन्म न पाया हुआ व्यक्ति "शरीर में" है और मसीही व्यक्ति अब "शरीर में नहीं, परंतु आत्मा में है" तो इसका क्या अर्थ है? उत्तर इस प्रकार दिया जा सकता है : स्वाभाविक (नया जन्म या उद्धार न पाया हुआ) व्यक्ति शरीर के *क्षेत्र* में वास करता है। शरीर उसके पूरे जीवन का स्रोत और संदर्भ है। वह पवित्र आत्मा में जीवन के विषय में कुछ नहीं जानता; वह पूर्ण रूप से शारीरिक स्तर पर रहता है। वह ग्रंथियों कार और कम्प्यूटर्स, खेलकूद और मनोरंजन की शारीरिक अभिलाषाओं के क्षेत्र में वास करता है। "इनमें हम भी सब के सब पहले अपने शरीर की लालसाओं मे दिन बिताते थे, और शरीर, और मन की मनसाएं पूरी करते थे, और अन्य लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे।"[1] "उनका अन्त विनाश है, उनका ईश्वर पेट है, वे अपनी लज्जा की बातों पर घमण्ड करते हैं, और पृथ्वी की वस्तुओं पर मन लगाए रहते हैं।"[2]

उद्धार न पाए हुए व्यक्ति के पास "धर्म" हो सकता है, परंतु वह अत्याधिक दैहिक या शारीरिक होता हैं। पौलुस हमें ऐसे समय के विषय में बताता है जब वह "शरीर के अनुसार"[3] मसीह को जानता था। यह लोकप्रिय धार्मिक कल्पना का मसीह है, जो समयों के साथ बदलता जाता है। (हमारे दिन में वह अक्सर निस्तेज, नीरस, धार्मिक व्यक्ति है

जो बहुत पहले जीवित था और मेम्नों को लेकर चलता था।) परंतु पौलुस अब मसीह को इस प्रकार नहीं जानता। वस्तुतः, वह किसी व्यक्ति को "शरीर के अनुसार" नहीं जानता। क्यों नहीं? इसका उत्तर अगले ही पद में दिया गया है – पौलुस एक भिन्न क्षेत्र में आगे बढ़ गया है! "इसलिए *अब से हम किसी को शरीर के अनुसार न समझेंगे,* और यदि हमने मसीह को भी शरीर के अनुसार जाना था, *तौभी अब से उसको ऐसा नहीं जानेंगे*। इसलिए यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है। *पुरानी बातें बीत गई* हैं; देखो, वे सब नई हो गई।"[4]

"देह" और "आत्मा" के दो क्षेत्रों के बीच का यह अंतर यूहन्ना 4 में यीशु द्वारा सामरी स्त्री से कहे गए हमारे प्रभु के शब्दों को रेखांकित करता है, "यीशु ने उससे कहा, "हे नारी, मेरी बात की प्रतीति कर कि वह समय आता है कि तुम *न तो इस पहाड़ पर* पिता का भजन करोगे, *न यरूशलेम में। परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।*"[5]

सामान्य तौर पर इन शब्दों का यह अर्थ हो सकता है कि *लोग कहीं भी परमेश्वर की आराधना कर सकते हैं– या तो* इस पर्वत पर *या* यरूशलेम में। यह अवश्य ही सत्य है। परंतु यीशु "यह या वह" ऐसा नहीं कहता, वह कहता है "न तो यह...न तो वह!" दूसरे शब्दों में, *इस* क्षेत्र में परमेश्वर की आराधना कहीं नहीं की जा सकती; वह केवल "आत्मा में" प्रवेश के योग्य है। "क्योंकि खतनावाले तो हम ही हैं जो *परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई से उपासना करते हैं,* और मसीह यीशु पर घमण्ड करते हैं, और *शरीर* पर भरोसा नहीं रखते। "[6] "क्योंकि उस ही के द्वारा हम दोनों की *एक आत्मा* में पिता के पास पहुंच होती है।"[7] मसीही "आत्मा में" हैं। वे "उसे जो *अदृश्य है*"[8] और "जो बातें *दिखाई नहीं देती* उन्हें *देख*"[9] सकते हैं।

केवल दो क्षेत्र

पहला सबक जो हमें रोमियों 5:8–9 से सीखना है वह यह है कि *पौलुस केवल दो क्षेत्र के संबंध में सोचता है।* मनुष्य या तो "देह में" या "आत्मा में" है; वह या तो उद्धार पाया हुआ नहीं है या उद्धार पाया हुआ है। "आधा–आधा" तीसरा क्षेत्र नहीं है। मनुष्य या तो "शारीरिक" (गैरमसीही) है या वह "आत्मिक" (पवित्र आत्मा के क्षेत्र में जीवित – मसीही) है। यही द्विभाजन 1 कुरिन्थियों 2:14–16 में देखा जाता है: "परन्तु *शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा* की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता

की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जांच *आत्मिक रीति से* होती है। *आत्मिक जन* सब कुछ जांचता है, परन्तु वह आप किसी से जांचा नहीं जाता। क्योंकि ..... परन्तु हममें मसीह का मन है।" फिर से यहां पर दो प्रकार के लोग हैं – "स्वाभाविक" मनुष्य (नया जन्म न पाया हुआ) और "आत्मिक" मनुष्य (नया जन्म पाया हुआ)।

यह सच्चाई हमें अगले चार पदों में पौलुस जो कुछ कहता है उसकी उचित समझ की और ले जाती है : "भाइयों, मैं तुमसे ऐसे बातें न कर सका जैसे *आत्मिक लोगों से,* परन्तु जैसे *शारीरिक लोगों से,* और उनसे जो मसीह में बालक हैं। मैंने तुम्हें दूध पिलाया – अन्न नही खिलाया क्योंकि तुम इसे पचा नहीं सकते थे। वस्तव में, तुम अभी तक पचा नही सकते, क्योंकी तुम अब तक *शारीरिक* हो। जबकी तुममें द्वेश और झगड़े है, तो क्या तुम *शारीरिक* नहीं? और क्या तुम्हारा आचरण साधारण मनुष्यों की तरह नहीं? क्योंकि जब एक कहता है, "मैं पौलुस का हूं", और दूसरा "मैं अपुल्लोस का हूं", *तो क्या तुम मनुष्य ही न हुए?* (एन आय व्ही "दैहिक" शब्द का "संसारिक" के रूप में गलत अनुवाद करता है)।

पौलुस यहां क्या कह रहा है? वह कह रहा है कि कुरिन्थियों के विश्वासी (एक तरह से) *खोए हुए लोगों जैसा व्यवहार कर रहे हैं।* "मैं आपके साथ मसीहियों के समान बातें नहीं कर सका; मुझे आपसे 'शारीरिक मनुष्यों के रूप में' बोलना पड़ा। आप *केवल मनुष्यों* के समान आचरण कर रहे हैं। आप वास्तव में कौन है यह समझने के लिए आपको अपने मनों का नवीनीकरण करने की ज़रूरत है।" मसीही व्यक्ति के लिए कभी–कभी खोए हुए व्यक्ति के समान व्यवहार करना संभव है, विशेष कर, जब वह "मसीह में बालक" होता है, परंतु यह कहने का अर्थ इस प्रकार नहीं है कि सच्चा मसीही *अपना पूरा जीवन* खोए हुए व्यक्ति के समान बिताता है। अनेक लोकप्रिय शिक्षाओं के विपरीत, पौलुस यहां पर मनुष्यों का कोई *स्थायी तीसरा वर्ग* प्रस्तुत *नहीं* कर रहा है – तथाकथित "शारीरिक मसीही" – एक तरह का "स्वर्गीय शैतान," जो अपना जीवन "हृदय में मसीह" के साथ बिताता है और "सिंहासन पर स्वविराजमान" होता है! कभी–कभी मसीही व्यक्ति खोए हुए मनुष्य के समान आचरण करता है, परंतु जब वह ऐसा करता है, तब वह वास्तव में कौन है इस चरित्र के बाहर आचरण करता है, और वह अधिक समय तक इस मुखौटे को धारण कर नहीं रख सकता।

प्रत्येक क्षेत्र का अपना मन होता है

दूसरा सबक जो हमें रोमियों 8:5–9 से सीखना चाहिए वह यह है कि *दोनों क्षेत्रों में से प्रत्येक का एक विशिष्ट प्रकार का "मन" है।* "क्योंकि शारीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं।"[11] ध्यान दें कि पौलुस यहां पर *उपदेश* नहीं दे रहा है। (वह नहीं कह रहा है कि क्या होना "आवश्यक" है।) वह मात्र *सत्य निवेदन कर रहा है :* जो "शरीर के अनुसार" हैं वे शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; और जो "आत्मा के अनुसार" चलते हैं वे आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं। यह मात्र *परिस्थिति की वास्तविकता है।*

इसका अर्थ यह है कि यदि कोई मसीही होने का दावा करता है, परंतु "आत्मा की बातों पर मन नहीं लगाता," तो वह धोखा खाता है। मसीही व्यक्ति नए क्षेत्र में जीवित है। वह "आत्मा में" है। उसके जीवन का स्रोत और क्षेत्र पवित्र आत्मा है, और उसका झुकाव "स्वाभाविक रीति से" "आत्मा की बातों" की ओर है! जब वह सुबह अपने बिछौने से उठता है, तब उसे काम पर विश्राम के लिए कुछ मिनट दिए जाते हैं, जब उसके पास फुर्सत का कोई समय होता है, तब उसका मन परमेश्वर की बातों की और आकर्षित होता है।

प्रत्येक मन का अपना परिणाम है

रोमियों 8:5–9 से जो तीसरा सबक हमें सीखना है, वह है *हर प्रकार का मन उसके अपने परिणाम की ओर ले जाता है – या तो मृत्यु या जीवन :* "शरीर (शब्दशः शरीर की मानसिकता) पर मन लगाना पाप है।"[12] मृत्यु उसकी अंतिम विशेषता और अंत है, भले ही आरंभ में सब कुछ कितना ही अच्छा क्यों न प्रतीत हो। इस विषय में विचार करें! शारीरिक क्षेत्र में *प्रत्येक बात,* भले ही "सर्वोत्तम बातें" क्यों न हों, अंततः हमें *खालीपन, सड़ाहट,* और *भ्रष्टता* – मृत्यु के अलावा कुछ नहीं देतीं! क्यों? क्योंकि परमेश्वर सच्चे *जीवन* का स्रोत है और उसे तस्वीर से बाहर रखा गया है।

परमेश्वर को न केवल तस्वीर से बाहर रखा गया है, परंतु "शरीर" की मनसा" वास्तव में *"परमेश्वर से बैर रखना है,* क्योंकि वह न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, *और न हो सकता है।"*[13] प्रत्येक खोए हुए व्यक्ति के हृदय में परमेश्वर के लिए और उसके व्यवस्था के लिए गहरी *नफरत* है। इस कारण "जो शरीर में हैं वे परमेश्वर को प्रसन्न *नहीं कर सकते।"*[14]

धार्मिक खोए हुए मनुष्य में शत्रुता अक्सर अच्छी तरह से छिपी होती है, परंतु सही परिस्थिति में वह निर्दयता के साथ वार करेगी। यहां पर हमें केवल शास्त्री और फरीसियों की प्रतिक्रिया के विषय में सोचने की ज़रूरत है जब उनकी भेंट देहधारी भलाई से हुई : "हम नहीं चाहते, कि यह हम पर राज्य करे। उसे क्रूस पर चढ़ाओ।"[15] शायद इनमें से कई धार्मिक अगुवे परमेश्वर के पुत्र के प्रति उनके अपने कार्यों से और तीव्र नफरत से जिसे उन्होंने अपने हृदयों में उमड़ता हुआ पाया, अचंभित थे।

शरीर पर मन लगाना मृत्यु है। परंतु इसके विपरीत "आत्मा पर मन लगाना *जीवन* और *शान्ति* है।"[16] यह कितनी धन्य बात है! सभी बातें उत्तम हैं, सभी बातें जो सुहावनी हैं – "प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम" – आत्मा के क्षेत्र से हैं। और वही से प्रवाहित होती है!

नए क्षेत्र में चलना

परन्तु मै कहता हूं कि पवित्र आत्मा के अनुसार चलो तो तुम शारीरिक इच्छाओं को किसी रीति से पूर्ण नहीं करोगे। क्योंकि शरीर तो पवित्र आत्मा के विरोध में और पवित्र आत्मा शरीर के विरोध मे लालसा करता है। ये तो एक दूसरे के विरोधी हैं, कि जो तुम करना चाहते हो उसे न कर सको। परन्तु यदि तुम पवित्र आत्मा के चलाए चलते हो, तो व्यवस्था के अधीन न रहे। अब शरीर के काम स्पष्ट हैं, अर्थात् व्यभिचार, अशूद्धता, कामुकता, मूर्तिपूजा, जादूटोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, मतभेद, फूट, दलबन्दी, द्वेष, मतवालापन, रंगरेलियां तथा इस प्रकार के अन्य काम हैं जिनके विषय में मैं तुम को चेतावनी देता हूं – जैसा पहले चेतावनी दे चुका हूं – कि ऐसे ऐसे काम करने वाले तो परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी न होंगे। परन्तु पवित्र आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, दयालुता, भलाई, विश्वस्तता, नम्रता व संयम है। ऐसे ऐसे कामों के विरुद्ध कोई व्यवस्था नहीं है। और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने अपने शरीर को दुर्वासनाओं तथा लालसाओं समेत क्रुस पर चढ़ा दिया है। यदि हम पवित्र आत्मा के द्वारा जीवित हैं तो पवित्र आत्मा के अनुसार चलें भी।

– गलातियों 5:16–25

गलातियों के पांचवे अध्याय से लिए गए इन वचनों में, "शरीर" और "आत्मा" के दो क्षेत्रों के बीच बड़ा अंतर बताया गया है। पौलुस स्पष्ट करता है कि "ऐसे ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।" दूसरी ओर, "और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है।" उन्होंने पुराने क्षेत्र और पाप के जीवन को पश्चाताप और मसीह मे विश्वास के द्वारा निर्णायक रूप से त्याग दिया है। मसीह व्यक्ति को अब शरीर पर विजय की प्रतिज्ञा की गई है क्योंकि वह "आत्मा में चलता है" : "परंतु मैं कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे।"

परंतु हमारे वर्तमान अध्ययन के लिए 25वां पद विशेष महत्व रखता है : "यदि हम *आत्मा के द्वारा जीवित* हैं, तो *आत्मा के अनुसार चलें* भी।" फिर से ध्यान दे कि रोमियों 8 में हमने पहले ही क्या देखा है : मसीही वह है जो "आत्मा में है!" वह आत्मा के *क्षेत्र* में रहता है, और उसके *जीवन का स्रोत* आत्मा है! पौलुस कहता है, "अब यह *जानों कि तुम कहां हो,* और वहीं *चलो!* – उसके अनुसार *आचरण करो।*" यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार *चलें* भी।"

दो (केवल दो) क्षेत्र हैं, और मसीही होने के नाते, हम आत्मा के क्षेत्र में *जीवित* हैं। क्योंकि अब हम इस नए क्षेत्र में *जीवित* हैं, इसलिए हम पहली बार जहां अब हैं उस स्थान में हमारे लिए उपलब्ध आत्मा की सामर्थ द्वारा *चलने* की योग्यता रखते हैं। "आत्मा में" इस चाल–चलन में आत्मा की प्रेरणाओं का पालन करना सम्मिलित है जहां हम अपने हृदयों में महसूस करते हैं कि वह किसी बात से जो हम करने वाले है "शोकित होता है।" "और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो।"[17] जब आत्मा शोकित होता है, तब हमें तुरंत *रुक* जाना चाहिए! दूसरी ओर, "आत्मा में चलने हेतु" आत्माओं की प्रेरणाओं का पालन करना सम्मिलित है जब वह हमें कुछ सकारात्मक करने हेतु अनुरोध करता है – परमेश्वर के लिए बोलने, या गवाही देने, या प्रार्थना करने हेतु : "आत्मा को न बुझाएं।"[18] जब हम "आत्मा में" चलते हैं, तब हम ऊपर चर्चा किए गए "आत्मा के" उत्तम और सुहावने "फल" को अनुभव करते हैं।

रोमियों 7 और 8 के दो क्षेत्र

शरीर और आत्मा के क्षेत्रों में परिवर्तन के रूप में नए जन्म की अवधारणा अन्य कई वचनों की हमारी समझ के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। विशेष तौर पर, रोमियों 7 की

उचित समझ के लिए वह बुनियादी है। गौर करें कि पौलुस रोमियों 7:7–25 में वचन 5–6 में दो क्षेत्रों का उल्लेख करते हुए पूरी चर्चा का परिचय कराता है : "*क्योंकि जब हम शारीरिक थे,* तो पापों की अभिलाषाएं जो व्यवस्था के द्वारा थी, मृत्यु का फल उत्पन्न करने के लिए हमारे अंगों में काम करती थीं। परन्तु जिसके बन्धन में हम थे उसके लिए मर कर, *अब* व्यवस्था से ऐसे छूट गए कि लेख की पुरानी रीति पर नहीं, *वरन् आत्मा की नई रीति पर सेवा करते हैं।*"

यहां फिर से पौलुस केवल दो और दो समूहों के विषय में ही सोचता है। जो "शरीर में" (उद्धार न पाए हुए) हैं, उनकी विशेषता है "पापों की अभिलाषा...मृत्यु का फल उत्पन्न करने के लिए हमारे अंगों में काम करती थीं।" ये पापमय लालसाएं "व्यवस्था के द्वारा थीं।" दूसरी ओर, मसीही विश्वासियों की विशेषता यह है कि वे व्यवस्था के "बंधन" से मुक्त हो कर और "पुरानी रीति पर नहीं, वरन् आत्मा की नई रीति पर" सेवा करते हैं। "रोमियों 7 इन दो समूहों में से किससे संबंध रखता है यह पहचानना मुश्किल नहीं है! वह "शारीरिक और पाप के हाथ बिका हुआ है।"[19] व्यवस्था "पापों की अभिलाषाओं" को उकसाती हैं।[20] वह "अंगों में पाप की व्यवस्था" के "बंधन"[21] में है। वह "अभागा व्यक्ति" है जो किसी की खोज में है जो उसे "इस मृत्यु की देह से"[22] "आज़ाद करे।" इसके अलावा, वह पूरे अनुच्छेद में एक बार भी पवित्र आत्मा का उल्लेख नहीं करता! स्पष्ट रूप से, यह मनुष्य "आत्मा में" नहीं है, परंतु "शरीर में" है। मसीही व्यक्ति को "पराजित होने पर" रोमियों 7 की ओर फिरना इस कारण अक्षम्य है, भले ही कभी–कभी वह महसूस कर सकता है, मानो वह उसी से "संबंध रखता हो!" (परिशिष्ट "क" देखें)।

यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि रोमियों 7:7–25 में जैसे ही पौलुस ने *व्यवस्था, पाप, शरीर* का अपना विचार समाप्त किया, वह तुरंत "दो क्षेत्रों" के संबंध में फिर एक बार सारी बातों का सारांश प्रस्तुत करता है : "*इसलिए अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं; क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं, वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं। क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।* क्योंकि *जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी,* उसको परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिए भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी। *इसलिए कि व्यवस्था की विधि हममें जो शरीर के अनुसार नहीं, वरन् आत्मा*

के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए।"[23] फिर से ये वचन रोमियों 7:5–6 के इस भाग के पौलुस के प्रारंभिक परिचय का विस्तृत पुनर्निवेदन है। ध्यान दें कि पद 4 में मसीहियों का वर्णन "जो शरीर के अनुसार नहीं, वरन् आत्मा के अनुसार चलते है" के रूप में किया गया है। जैसा कि हमने 5वें वचन के संबंध में पहले देखा है, यह *उपदेश* नहीं है, परंतु *"वस्तुस्थिति का कथन है।* यह किसी उन्नति प्राप्त मसीहियों का वर्णन नहीं है, परंतु सभी सामान्य मसीही विश्वासियों के विषय में है।[24] इस सारांश के बाद आने वाले वचन (8:5–14) "शरीर" और "आत्मा" की पौलुस की चर्चा को जारी रखते हैं। और उनके संबंध में ऊपर पहले ही विचार किया गया है।

शास्त्रसंदर्भ

1 इफिसियों 2:3;
2 फिलिप्पियों 3:19;
3 2कुरिन्थियों 5:16;
4 2कुरिन्थियों 5:16–17;
5 यूहन्ना 4:21–24.
6 फिलिप्पियों 3:3;
7 इफिसियों 2:18;
8 इब्रानियों 12:27;
9 2कुरिन्थियों 4:18;
10 1कुरिन्थियों 3:1–4.
11 रोमियों 8:5;
12 रोमियों 8:6.
13 रोमियों 8:7;
14 रोमियों 8:8;
15 लुक 19:14;
16 रोमियों 8:6(ग्रीक).
17 इफिसियों 4:30;
18 1थस्सलुनीकियों 5:19.
19 रोमियों 7:14;
20 रोमियों 7:7–14;

21 रोमियों 7:23;

22 रोमियों 7:24;

23 रोमियों 8:1–4.

24 रोमियों 8:14

अध्याय – 12

क्षेत्रों में परिवर्तन

पृथ्वि से स्वर्ग की ओर

हमने देखा कि नया जन्म क्षेत्रों में अदला–बदल है : मसीही व्यक्ति वह है जो अब "शरीर में" नहीं है, परंतु "आत्मा में" है। परंतु नए जन्म में मात्र इन दो क्षेत्रों में अदला–बदल नहीं होती। नए जन्म का आठवा निवेदन जिसका हम विचार करेंगे, वह मसीही व्यक्ति के *पृथ्वी के क्षेत्र* से*स्वर्गीय क्षेत्र* की ओर स्थानांतरण से संबंधित है।

> *यदि तुम मसीह के साथ संसार की प्रारम्भिक शिक्षाओं के लिए मर चुके हो तो फिर क्यों उनके समान जो संसार में जीवन व्यतीत करते हैं, ऐसी विधियों से बंधे हो जैसे, 'इसे हाथ में न लो, इसे मत चखो, इसे मत छुओ'? ये नियम मनष्यों के आदेशों और शिक्षाओं के अनुसार हैं – ये उन सब वस्तुओं के सम्बन्ध में हैं जो प्रयोग में आते आते नष्ट हो जाती हैं।*
>
> – कुलुस्सियों 2:20–22

> *इसलिए यदि तुम मसीह के साथ जीवित किए गए तो उन वस्तुओं की खोज में लगे रहो जो स्वर्ग की हैं, जहां मसीह विद्यमान है और परमेश्वर की दाहिनी*

ओर विराजमान है। अपना मन पृथ्वी पर की नहीं, परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर लगाओ, क्योंकि तुम तो मर चुके हो और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। जब मसीह, जो हमारा जीवन है, प्रकट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा में प्रकट किए जाओगे। इसलिए अपनी पार्थिव देह के अंगों को मृतक समझो, अर्थात् व्यभिचार, अशुध्दता, वासना, बुरी लालसा और लोभ को जो मुर्तिपूजा है। इन्हीं के कारण परमेश्वर का प्रकोप आएगा। और जब तुम इन बुराइयों में जीवन व्यथित करते थे तो तुम इन्हीं के अनुसार चलते थे। परन्तु अब तुम भी इन सब को अर्थात क्रोध, रोष, बैरभाव, निन्दा और मुंह से गालियां बकना, छोड़ दो। एक दूसरे से झुठ मत बोलो, क्योंकि तुमने अपने पुराने मनुष्यत्व को उसके बुरे कार्यों सहित त्याग दिया है, और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृष्टिकर्ता के स्वरुप के अनुसार सत्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए नया बनता जाता है।

– कुलुस्सियों 3:1–10

कुलुस्सियों 2:20–22 के अनुसार, मसीही विश्वासी अब "इस संसार में नहीं जीते!" वे उस क्षेत्र के लिए "मर गए हैं" और उन्होंने दूसरे क्षेत्र में प्रवेश किया है। यह अस्थायी और भौतिक वस्तुओं का संसार ("क्योंकि ये सब वस्तु काम में लाते लाते नाश हो जाएंगी") अब उनके जीवन का क्षेत्र नहीं है। उनके जीवन का क्षेत्र *क्या* है? उत्तर आने वाले पदों में दिया गया है (3:1–10) : *"इसलिए जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए...तुम तो मर गए, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है...मसीह जो हमारा जीवन है।"*

मसीही व्यक्ति वह है जो "मर गया है" और उसका जीवन "परमेश्वर में मसीह के साथ छिपा हुआ है।" वह स्वर्गीय क्षेत्र में वास करता है। जब उसके जीवन का क्षेत्र इस पृथ्वी पर था, तब वह इस पृथ्वी के राज्य के अनुसार चलता रहा। "और तुम भी, जब इन बुराइयों में *जीवन बिताते थे,* तो इन्हीं के अनुसार *चलते थे*।"[1] परंतु अब उसके जीवन का क्षेत्र स्वर्गीय है, और उसे प्रोत्साहन दिया जाता है कि वह इस सच्चाई को समझ ले और "अपने मन को" "स्वर्गीय बातों की ओर" लगाए।

प्रिय मसीही, आप स्वर्गीय स्थानों से है! अब आप इस संसार का हिस्सा नहीं हैं। आप "संसार के लिए क्रूस पर चढ़ाए गए" और संसार आपके लिए क्रूस पर चढ़ाया गया है![2] केवल आपका *मरणहार शरीर,* जो अब तक छुड़ाया नहीं गया है, इस पार्थिव

क्षेत्र में अब तक "यहां नीचे है।" इसीलिए पौलुस हमें प्रोत्साहन देता है कि हम "अपने *उन अंगों को मार डाले, जो पृथ्वी पर हैं!*[3] "अपने *शरीरों को* जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ; यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। और *इस संसार के सदृश न बनो,* परन्तु तुम्हारी *बुद्धि के नए हो जाने से* तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।"[4]

इस संसार के नहीं हैं

> *उसने उनसे कहा, "तुम नीचे के हो, मैं ऊपर का हूं। तुम इस संसार के हो, मैं इस संसार का नहीं हूं।" यूहन्ना 8:23*

यहूदियों से इन शब्दों में कहते हुए, हमारा प्रभु फिर से संसारिक और स्वर्ग क्षेत्रों के विषय में कहता है। जैसा कि अपेक्षित है, वह स्वयं के विषय में बोलते हुए यह कहता है कि वह स्वर्गीय स्थान से है। हम जो अपेक्षा *नहीं* करते वह है जो सारे मसीहियों के विषय में वह कुछ अध्यायों में बाद में कहता है :

> *मैंने उन्हे तेरा वचन दिया है, और संसार ने उनसे घृणा की है, क्योंकि जैसा मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं। .....वे संसार के नही है, जैसे कि मै भी संसार का नही हूं।*
>
> – यूहन्ना 17:14, 16

जिस प्रकार मसीह इस संसार का नहीं हैं, *उसी प्रकार* मसीही भी इस संसार के नहीं है! उसके स्वर्गीय जीवन के भागियों के रूप में, वे भिन्न क्षेत्र से हैं। उन्होंने 'ऊपर से जन्म' पाया है और नई व्यवस्था का भाग हैं। वे उन बातों को तुच्छ जानते हैं जिन्हें संसार 'अत्यंत प्रिय जानता है'[5] और वे उन बातों को प्रिय जानते हैं जिन्हें संसार तुच्छ समझता है। जिस पत्थर को 'बांधने वालों ने' निकम्मा कहकर त्याग दिया, वह *अनमोल* और उनके लिए बुनियादी है।[6] उनके इरादे और कार्य संसार के लिए कलंक हैं। वे उन बातों पर ध्यान लगाते हैं जो अनदेखी[7] हैं और अपने जीवनों को अदृश्य वास्तविकताओं के अनुसार ढालते हैं। वे उस 'गुप्त ज्ञान' को समझते हैं जो संसार के लिए 'मूर्खता'[8] है। उनमें 'मसीह का मन'[9] है। "इस कारण संसार उन्हे नहीं जानता, क्योंकि उसने उसे भी नहीं जाना।"[10]

इन वास्तविकताओं के प्रकाश में, इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं हैं कि संसार मसीहियों से नफरत करता है। "यदि तुम संसार के होते, तो संसार अपनों से प्रीति रखता, परन्तु *इस कारण कि तुम संसार के नहीं*, वरन् मैंने तुम्हें संसार में से चुन लिया है इसी लिए संसार तुमसे बैर रखता है।"[11]

स्वर्ग के नागरिक

> *उनका अन्त विनाश है, उनका परमेश्वर पेट है, वे अपनी निर्लज्जता की बातों पर गर्व करते हैं और सांसारिक वस्तुओं पर मन लगाए रहते हैं। परन्तु हमारी नागरिकता स्वर्ग की है, जहां से हम उद्धारकर्ता प्रभु यीशू मसीह के आगमन की प्रतीक्षा उत्सुकता से कर रहे हैं।*
>
> – फिलिप्पियों 3:19–20.

जिनका परमेश्वर शरीर है और जिनके मन पृथ्वी की बातों पर लगे हुए हैं, उनके विपरीत मसीही लोग स्वर्ग के नागरिक हैं। वे स्वर्गीय राज्य में जीते और रहते हैं, और उनके मन स्वर्ग की बातों पर लगे हुए हैं।[12] उनके हृदय स्वर्ग में हैं, जहां से वे उत्सुकता के साथ अपने उद्धारकर्ता और राजा के लौटने की बाट जोहते हैं।

> *और हाजिरा मानो अरब का सीनै पर्वत है, जो वर्तमान यरूशलेम के समान है, क्योंकि वह अपनी सन्तानों सहित दासत्व में है। परन्तु ऊपर की यरूशलेम स्वतन्त्र है, और वह हमारी माता है।*
>
> – गलातियों 4:25–26;

> *क्योंकि तुम उस पर्वत के पास नहीं आए जिसे छुआ जा सके, और न प्रज्ज्वलित अग्नि, न अन्धकार, न काली घटा और न बवंडर के पास, परन्तु तुम तो सिय्योन पर्वत के और जीवित परमेश्वर के नगर स्वर्गीय यरूशलेम में तथा असंख्य स्वर्गदूतों के पास, और महासभा अर्थात् उन पहिलौठों की कलीसिया के समीप जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हैं, और सबके न्यायाधीश परमेश्वर और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं की उपस्थिति में।*
>
> – इब्रानियों 12:18, 22–23

हम फिर से इन पदों में देखते हैं कि मसीही "स्वर्गीय यरूशलेम" के स्वतंत्र नागरिक हैं। "परंतु तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवित परमेश्वर के नगर स्वर्गीय यरूशलेम के पास...आए हो"[13] वे इस समय उन सब लोगों के साथ "स्वर्गीय यरूशलेम, जीवित परमेश्वर के नगर" का हिस्सा हैं, जो पहले ही मर चुके हैं और उनसे पहले स्वर्ग जा चुके हैं। यह वह नगर है जिसकी नेंव है और जिसका रचनेवाला और बनानेवाला परमेश्वर है।[14] क्योंकि उनकी आंखें स्थायी स्वर्गीय यरूशलेम पर लगी हैं इसलिए मसीही लोग सारे लौकिक संसारिक प्रतिष्ठानों को छोड़कर और मसीह के पास जाकर "उसकी निन्दा अपने ऊपर लिए हुए छावनी के बाहर" चले हैं। "क्योंकि यहां हमारा कोई स्थिर रहनेवाला नगर नहीं, वरन् हम एक आनेवाले नगर की खोज में हैं।"[15]

> *फिर मैंने पवित्र नगरी, नए यरूशलेम को परमेश्वर की और से स्वर्ग से उतरते देखा; वह ऐसी सजाई गई थी जैसी दुल्हिन अपने पति के लिए सिंगार किए हो। तब मैंने सिंहासन से एक ऊंची आवाज को यह कहते सुना, ''देखो, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है, वह उनके मध्य निवास करेगा। वे उसके लोग होंगे तथा परमेश्वर स्वयं उनके मध्य रहेगा।*
>
> – प्रकाशितवाक्य 21:2–3

> *फिर जिन सात दूतों के पास सात अंतिम विपत्तियों से भरे सात कटोरे थे, उनमें से एक ने मेरे पास आकर कहा, ''यहां आ, मैं तुझे दुल्हिन अर्थात् मेमने की पत्नी दिखाऊंगा।'' तब वह मुझे आत्मा में एक विशाल और ऊंचे पर्वत पर ले गया और उसने पवित्र नगरी यरूशलेम को स्वर्ग में से परमेश्वर के पास से नीचे उतरते हुए दिखाया। परमेश्वर की महिमा उसमें थी। उसकी चमक अत्यन्त बहुमूल्य पत्थर अर्थात् उस यशब के समान थी जो स्फटिक सदृश उज्जवल था।*
>
> – प्रकाशितवाक्य 21:9–11.

यह 'पवित्र नगर, नया यरूशलेम' क्या है? "दुल्हन, मेम्ने की पत्नी" के अलावा दूसरा कोई नहीं! *यह नगर, दुल्हन, अब स्वर्ग में रहती है,* परंतु अंत समय में "परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से नीचे उतर आएगी।" तब स्वयं परमेश्वर अपने लोगों के मध्य "वास करेगा" और "परमेश्वर की महिमा" हमेशा के लिए उन पर रहेगी।

हम कितने धन्य हैं कि हम इस स्वर्गीय नगर, दुल्हन, मेम्ने की पत्नी के इस समय भाग हैं!

"हे परमेश्वर के नगर,
तेरे विषय महिमा की बातें कही गईं हैं।"
वह जिसका वचन तोड़ा नहीं जा सकता।
अपने स्वयं के निवासस्थान के लिए तुझे बनाया।
युगों की चट्टान पर बसाया,
कौन तेरे धैर्य को हिला सकता है?
उद्धार की दीवार से घिरा हुआ,
वह अपने सारे शत्रुओं पर हंस सकता है।

देख! जीवन जल के झरने,
सनातन प्रेम से बहते हुए,
तेरे बेटे और बेटियों को भर देंगे।
और अभाव के सारे भय को दूर करेंगे।
ऐसी नदी सदा उनकी प्यास बुझाने के लिए बहती है,
तो कौन मुर्च्छित हो सकता है?
दाता प्रभु के समान अनुग्रह युगानूयुग मिटता नहीं।
हे उद्धारक, यदि मैं अनुग्रह से सीयोन नगर का सदस्य हूं,

तो संसार को मुझे तुच्छ या बेचारा समझने दे,
मैं तेरे नाम में महिमा करूंगा।
संसार के सुख मिटते जाते हैं,
यह सारा अहंकार और दिखावा मिटता जाता है,
दृढ़ आनंद और स्थायी धन,
सीयोन के बच्चे ही जानते हैं।

जॉन न्यूटन

मसीह के साथ बैठाया गया

हमारे प्रभु यीशु मसीह का पिता परमेश्वर धन्य हो, जिसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशिषों से आशीषित किया है।

– इफिसियों 1:3

परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है, अपने उस महान् प्रेम के कारण जिस से उसने हमसे प्रेम किया, जबकि हम अपने अपराधों के कारण मरे हुए थे उसने हमे मसीह के साथ जीवित किया – अनुग्रह ही से तूम्हारा उद्धार हुआ है – और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया और स्वर्गीय स्थानों में बैठाया।

– इफिसियों 2:4–6.

हम "मसीह में" हैं और उसके पुनरूत्थान के जीवन के भागी हैं, इसलिए हम खुद को स्वर्गीय स्थानों में बैठा हुआ पाते हैं। उसमें हमारे पास "*हर प्रकार की* आत्मिक आशीष" है और हमें किसी चीज की कमी *नहीं* है, हमें "हमें जीवन और भक्ति से संबंधित हर एक चीज"[16] दी गई है। मसीही विश्वासियों को मसीह के अलावा "और किसी बात की" कोई ज़रूरत नहीं है; उनकी सबसे बड़ी ज़रूरत इस वास्तविकता को देखना है कि पहले से उसमें उन्होंने क्या पाया है, और उसमें प्रवेश करना है। इसे पूरा करना पवित्र आत्मा का अनुग्रहपूर्ण कार्य है।[17] इसलिए पौलुस इफिसुस की कलीसिया के लिए प्रार्थना करता है कि पवित्र आत्मा द्वारा "उनके मन की आंखें ज्योतिर्मय हों," ताकि वे "वे जान लें कि..." विश्वासियों के रूप में हमारे लिए "परमेश्वर की सामर्थ कितनी महान है।"[18] इसी सामर्थ में मसीह को मरे हुओं में से जिलाकर *स्वर्गीय स्थानों में* अपनी दाहिनी ओर, सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ, और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर आनेवाले लोक में भी लिया जाएगा, बैठाया।"[19]

नीचे देखते रहें

इन सारे वचनों से, यह स्पष्ट होता है कि विश्वासियों का क्षेत्र और जीवन का स्रोत स्वर्गीय स्थानों में है। अब वे इस संसार के नहीं हैं। वे अब यहां नहीं रहते,[20] परंतु स्वर्ग में रहते हैं।[21] हमारे दिन–प्रतिदिन के अनुभव में, इस बात से बहुत फर्क पड़ता है कि हम इस संसार में "यहां नीचे" खुद को – समुद्र के तल में तैरने वालों के समान देखते हैं जिसमें एक छोटी–सी जीवनरेखा उसे सतह से ऊपर (स्वर्ग) से जोड़े रखते हैं, या हम खुद को "स्वर्गीय स्थानों में बैठे हुए" के रूप में देखते हैं – इस जीवन की बातों की ओर *नीचे देखते हुए।* हमारा आदर्श वाक्य "ऊपर देखते रहना" है (उस क्षेत्र की

ओर जहां के आप अब तक नहीं हुए हैं") या "नीचे देखते रहना है" (उस क्षेत्र से जहां पर आप पहले से हैं, क्योंकि आप मर गए हैं और परमेश्वर में मसीह के साथ आपका जीवन छिपा हुआ है)!

व्यवहारिक शब्दों में इसका अर्थ यह है कि मसीही ऐसे जीवन को *हासिल करने* के लिए परिश्रम नहीं कर रहे हैं जो उनके पास अब तक नहीं है या ऐसी विजय *पाने के लिए* जो अब तक जीती नहीं गई है परिश्रम नहीं कर रहे हैं। वे मसीह के जीवन और विजय में *भागी* हैं जो *उसने पहले से* जीत ली है। मसीही, आप मसीह के पुनरूत्थान के जीवन के भागी है, और उसने पहले से उस पाप को जिसका आप इस समय सामना कर रहे हैं – अपनी मृत्यु, गाड़े जाने, पुनरूत्थान, और स्वर्गारोहण के द्वारा – *पराजित कर दिया है* और *उसकी सामर्थ तोड़ दी है!* उसके जीवन के भागीदार के रूप में, आपकी बुलाहट खुद के लिए कुछ हासिल करने की कोशिश करना नहीं है जिसे उसने हासिल नहीं किया है, परंतु जो कुछ उसने पहले से आपके लिए कर लिया उस पर *विश्वास करना है* और उसमें *चलना* है। इस प्रकार आप अविश्वास के लिए दुखद संघर्ष करने के बजाय "विश्वास की अच्छी लड़ाई"[22] लड़ पाएंगे!

यही बात अंधकार की शक्तियों के विरोध में हमारी लड़ाई के संबंध में सच है। हमें निरंतर इस सच्चाई का स्मरण कराए जाने की ज़रूरत है कि *शैतान पहले ही मसीह द्वारा कलवरी के क्रूस पर हराया गया है,*[23] *और* हम "मसीह में" सारी दुष्ट सेनाओं के "बहुत ऊपर" बैठाए गए हैं।[24] हमें इस वर्तमान प्रकाश में इफिसियों 6:12 पढ़ने की ज़रूरत है, "क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।" जब हम विनम्रता के साथ "परमेश्वर के आधीन हो जाते है; और शैतान का सामना करते है, तब हमें यह *प्रतिज्ञा* मिलती है कि यह गरजने वाला सिंह भी परमेश्वर की अन्यथा निर्बल भेड़ के सामने से "भाग निकलेगा!"[25] परमेश्वर की महिमा हो!

शास्त्रसंदर्भ

1 कुलुस्सियों 3:7;

2 गलातियों 6:14;

3 कुलुस्सियों 3:3(ग्रीक);

4 रोमियों 12:1–2.

5 लुक 16:15;

6 भजन. 15:4;

7 1पतरस 2:4,7;

8 2कुरिन्थियों 4:18;

9 1कुरिन्थियों 2:6–10,14;

10 1कुरिन्थियों 2:16;

11 1यूहन्ना 3:1;

12 यूहन्ना 15:19;

13 कुलुस्सियों 3:1–2.

14 भजन. 2:6–8, 48:1–2, 87:5, 110:1–2;

15 इब्रानियों 10:10,16;

16 इब्रानियों 13:12–14[16].

17 2पतरस 1:3;

18 यूहन्ना 14:16,20,26;

19 इफिसियों 1:15–19;

20 इफिसियों 1:19–21;

21 कुलुस्सियों 2:20;

22 कुलुस्सियों 3:3.

23 1तिमुथियुस 6:12;

24 कुलुस्सियों 2:15;

25 यूहन्ना 12:31;

26 इफिसियों 1:20–21;

27 याकूब 4:7.

अध्याय – 13

क्षेत्रों में परिवर्तन

पाप से धार्मिकता की ओर

नया जन्म क्षेत्रों का आदान प्रदान है। नया जन्म का नौंवां और अंतिम प्रस्तुतीकरण, जिस पर हम विचार करेंगे, वह *पाप की गुलामी* की अवस्था से *धार्मिकता की गुलामी* की अवस्था तक, एक मसीही जन से संबंधित अंश में बताया गया है। इस आदान प्रदान के कारण, प्रत्येक मसीही सच्चाई पूर्वक यह स्वीकार कर सकता है, "मैं पाप का दास हुआ करता था, परंतु अब मैं पाप का दास नहीं रहा! मैं धार्मिकता का दास हूं!"

> *यह जानते हुए कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, कि हमारा पाप का शरीर निष्क्रिय हो जाए, कि हम आगे को पाप के दास न रहें।*
>
> – रोमियों 6:6

> *तब पाप तुम पर प्रभुता करने नहीं पाएगा, क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं, परन्तु अनुग्रह के अधीन हो।*
>
> – रोमियों 6:14

क्या तुम नहीं जानते कि किसी की आज्ञा मानने के लिए तुम अपने आप को दासों के समान सौंप देते हो, तो जिसकी आज्ञा मानते हो उसी के दास बन जाते हो – चाहे पाप के, जिसका परिणाम मृत्यु है, चाहे आज्ञाकरिता के, जिसका परिणाम धार्मिकता है? परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि तुम जो पाप के दास थे, अब हृदय से उस प्रकार की शिक्षा के आज्ञाकारी हो गए, जिसके लिए तुम समर्पित हुए थे, और तुम पाप से छुड़ाए जाकर धार्मिकता के दास हो गए हो। मैं तुम्हारी शारीरिक दुर्बलता के कारण मनुष्य की रीति पर बोल रहा हूँ। जिस प्रकार तुमने अपने अंगों को अशुद्धता और व्यवस्था–उल्लंघन के दास होने के लिए सौंप दिया था परिणाम स्वरूप व्यवस्था–उल्लंघन और अधिक बढ़ गया, उसी प्रकार अब अपने अंगों को धार्मिकता के दास होने के लिए सामर्पित कर दो जिसका परिणाम पवित्रता हो। क्योंकि जब तुम पाप के दास थे तो धार्मिकता की ओर से स्वतंत्र थे। जिन बातों से अब तुम लज्जित होते हो उनसे उस समय पर क्या लाभ प्राप्त करते थे? क्योंकि उनका परिणाम तो मृत्यु है। परन्तु अब पाप से स्वतंत्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम्हें यह फल मिला जिसका परिणाम पवित्रता और जिसका अंत अनन्त जीवन है। क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन हैं।

– रोमियों 6:16–23

केवल दो स्वामी

हमने अभी तक जितना भी देखा, उन सब के आधार पर, यह देखकर हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिये कि इन अंशों में दो, और केवल दो, स्वामियों को संभावित तौर पर दास के स्वामी निर्धारित किया गया है। एक तरफ पाप है, तो दूसरी तरफ धार्मिकता है। इन दो दासों के स्वामी एक दूसरे से पूर्णतया विपरीत हैं। उनके बीच का अंतर कोई छोटी बात नहीं है। यह वह अंतर है जो दर्शाता है कि क्या अशुद्ध है और क्या शुद्ध है, क्या आदरयोग्य है और क्या शर्मनाक है, क्या उत्कृष्ट है और क्या निम्न है। संक्षिप्त में, यह जीवन और मृत्यु के बीच, स्वर्ग और नर्क के बीच और परमेश्वर व शैतान के बीच का अंतर है। चूंकि ये दो स्वामी पूर्ण रूप से इतने अधिक एक दूसरे के विरोधी हैं, कि एक ही समय इन दोनों की सेवा कर पाना सर्वथा असंभव है। ''कोई मनुष्य दो स्वामियों

की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, या एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा।''[1]

समस्त मनुष्य दास हैं

यह जानकर धक्का लग सकता है कि इन पदों में यह कहा गया है कि *सब मनुष्य दास हैं।* निश्चित ही इनका कोई अपवाद नहीं है। इन पंक्तियों का लेखक और पाठक दोनों ही सबसे अधिक निश्चयी तौर पर दास हैं। हम, बिल्कुल इसी क्षण में, या तो पाप के गुलाम हैं या धार्मिकता के गुलाम हैं। इन दो अंतिम सीमाओं के बीच तटस्थता के लिये कोई स्थान नहीं है या ''बीच का कोई स्थान'' नहीं है। इस संपूर्ण संसार में कोई भी, बिल्कुल ही किसी स्वामी के अधीन होने के भाव से ''मुक्त'' नहीं है। प्रश्न यह नहीं है कि हमारा कोई स्वामी होगा या नहीं। प्रश्न केवल यह है कि क्या हमारा एक अच्छा स्वामी होगा जो हमें जीवन और शंति की आशीष देगा या एक बुरा स्वामी होगा जो हमें मृत्यु और विनाश का श्राप देगा।

शैतान हव्वा के पास एक विकृत सुझाव लेकर आया था कि परमेश्वर के उपर विश्वास नहीं किया जा सकता। जब हव्वा ने एक ''तटस्थ जांचकर्ता'' बनकर उसके इस अनुमान का परीक्षण करने का निश्चय किया, तो उसने कड़वे अनुभव से यह पाया कि *परमेश्वर और शैतान के बीच तटस्थता का कोई स्थान नहीं है।* परमेश्वर की प्रभुता से बाहर निकल आने का अर्थ है कि स्वयं को तुरंत उस दुष्ट के नियंत्रण में सौंप देना – जो ''चोर'' है जो केवल ''चोरी करने, और घात करने और नष्ट करने को आता है।''[2] जैसे रेलमार्ग का स्वचालित इंजन अपने होने को पूर्ण करता है और *केवल रेल की पटरियों के साथ नियंत्रित बने रहकर* अपनी सच्ची आजादी को प्राप्त करता है, उसी तरह मनुष्य अपने अस्तित्व में होने को पूर्ण करता है और केवल अपने रचयिता के प्रति समर्पित बने रहकर सच्ची आजादी को प्राप्त करता है।

पाप के गुलाम

उपर जो पद उदधृत किये गये हैं, इस बात को बहुत स्पष्ट करते हैं कि हमारे नया जन्म से पूर्व हममें से प्रत्येक ''पाप का दास'' था (पद 6, 17, 20)। ''पाप का दास'' होने का क्या अर्थ हैं? इसका अर्थ है कि पाप की सामर्थ के अधीन रहना। पाप राज्य करता है और पाप से जुड़ी विषय वस्तु के प्रति, आज्ञाकारिता की मांग करते हुए, ''शासन''[3]

करता है। वे इसका आज्ञापालन *नहीं* कर सकते हैं! बाइबल और चर्च के इतिहास दोनों में इस प्रकार की दासता से भरपूर उदाहरण मिलते हैं: अपने परिवर्तन के पूर्व, सुसमाचार के प्रचारक मेल ट्रोटर एक लाचार शराबी थे। दस दिन की शराब पीने की पारी खत्म करके जब वह घर लौटे, उन्होने अपने दो साल के पुत्र को अपनी पत्नी की बांहों में मृत पाया। गहन पश्चाताप के दौरान – उन्हे इस बात का यकीन हो गया कि उन्होने अपनी अनुपस्थिति से अपने एकमात्र पुत्र की हत्या कर दी थी – ट्रोटर ने आंसुओं के साथ यह शपथ ली कि वह अब से शराब नहीं पीयेगा। *किंतु अपने बच्चे के अंतिम संस्कार को दो घंटे भी नहीं बीते होगें और वह एक बार फिर नशे में धुत्त होकर घर लौटा!* पाप की गुलामी का स्वभाव ऐसा होता है।

परंतु केवल पियक्कड़ अथवा नशीली दवाओं के आदी लोग ही पाप के गुलाम नहीं होते हैं। जो मसीह में नहीं हैं वे *सभी* मनुष्य पाप के बंधन में हैं। यहां तक कि ''भला नैतिक व्यक्ति'' जिसमें दिखाई देने वाली कोई बुराई नहीं है, पाप का दास होता है। यह इस तथ्य से प्रगट होता है कि वह विश्वास नहीं रखता है और जीवित परमेश्वर की आराधना नहीं करता है। *क्यों* वह अपने रचयिता के सामने प्रेम और श्रद्धा से नहीं झुकता है? साधारण सी बात है क्योंकि उसका स्वामी उसे ऐसा करने की अनुमति नहीं देता है! उसके जीवन पर पाप की मजबूत पकड़ है और जो उसे विवेकशील, उचित और सही चीज करने की अनुमति नहीं प्रदान करेगा। ''और उन अविश्वासियों के लिये, जिन की बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके।''[4]

हमारे प्रभु यूहन्ना 8:31–36 में इसे बहुत स्पष्ट कहते हैं कि कोई पाप का दास स्वर्ग में नहीं होगा: '''यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो *सचमुच* मेरे चेले ठहरोगे। और सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें *स्वतंत्र* करेगा।' उन्होंने उसे उत्तर दिया, 'हम तो इब्राहीम के वंश से हैं और कभी किसी के दास नहीं हुए; फिर तू क्योंकर कहता है, कि तुम स्वतंत्र हो जाओगे''? यीशु ने उनको उत्तर दिया, *''मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है। और दास सदा घर में नहीं रहता;* पुत्र सदा रहता है। इसलिये यदि पुत्र तुम्हे स्वतंत्र करेगा तो तुम सचमुच स्वतंत्र हो जाओगे।'' कोई पाप का दास पुत्र के घर में सदा के लिये नहीं रह सकेगा, क्योंकि उन सभी के लिये जो ''सचमुच'' में प्रभु के शिष्य हैं, *स्वतंत्रता* जन्मसिद्ध अधिकार हैं!

धार्मिकता के दास

नये जन्म के समय प्रत्येक मसीही जन पाप का दास बने रहना छोड़ देता है और धार्मिकता का दास बन जाता है: ''परंतु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे अब हृदय से उस प्रकार की शिक्षा के आज्ञाकारी हो गए जिसके लिये तुम समर्पित हुए थे, और पाप से छुड़ाए जाकर धर्मिकता के दास हो गए हो'' (रोमियों 6:17–18)। ध्यान दीजिये इन पदों में मसीहियों के लिये यह नहीं कहा गया है कि वे ''पाप से मुक्त'' हैं; परंतु उन्हें ''पाप से छुड़ाया गया'' कहा गया है। पौलुस यहां पापरहित सिद्धता के लिये नहीं कह रहा है, परंतु एक स्वामी (पाप) के दासत्व से मुक्ति पाकर दूसरे स्वामी (धार्मिकता) के दासत्व में जाने के लिये कह रहा है।

प्रभु यीशु मसीह के अनुसार, स्वामित्व में परिवर्तन तब होता है जब ''बलशाली से अधिक बलशाली'' (मसीह) ''बलशाली मनुष्य'' (शैतान) पर आक्रमण करता है और उसकी संपदा पर अधिकार कर लेता है: ''जब बलवंत मनुष्य हथियार बांध हुए अपने घर की रखवाली करता है, तो उसकी संपत्ति बची रहती है। पर जब उस से बढ़कर कोई और बलवंत चढ़ाई करके उसे जीत लेता है, तो उसके वे हथियार जिन पर उसका भरोसा था, छीन लेता है और उस की संपत्ति लूटकर बांट देता है।''[5] यह महिमामयी आदान प्रदान है – प्रभु यीशु मसीह द्वारा शैतान के नियंत्रण से छुड़ाए जाना और सदा के लिये उसके आभारी व प्रेमयुक्त दास हो जाना!

सभी मसीही जन धार्मिकता के दास हैं। ''धार्मिकता के दास'' होने से क्या आशय हैं? इसका अर्थ है कि धार्मिकता के प्रभुत्व वाली सामर्थ के अधीन रहना। धार्मिकता मसीहियों से आज्ञाकारिता की मांग करते हुए, उन के उपर राज्य व शासन करती है। पुनः, बाइबल और चर्च इतिहास में इसके उदाहरण बहुतायत से मिलते हैं। यिर्मयाह ने स्वयं को आंतरिक तौर पर परमेश्वर का संदेश प्रचारित करने के लिये *बाध्य* पाया, भले ही वचन उसके लिये निंदा का कारण ठहरा: ''क्योंकि यहोवा का वचन दिन भर मेरे लिये निंदा और ठट्टा का कारण होता रहता है। *परंतु अगर मैं कहता हूं, 'मैं उसकी चर्चा न करूंगा न उसके नाम से बोलूंगा, तो मेरे हृदय की ऐसी दशा होगी मानो मेरी हड्डियों में धधकती हुई आग हो, और मैं अपने को रोकते रोकते थक गया पर मुझ से रहा नहीं जाता।*''[6] सदियों से, अनगिनत बार मसीहियों ने धार्मिकता के द्वारा स्वयं को इतना विवश पाया कि जब तक उन्होंने किसी भटके हुए मित्र को गवाही नहीं दे दी या किसी को उसकी विशेष जरूरत के समय मदद नहीं कर दी, तब तक वे सो भी न

सके। उन्होने स्वयं को खुशी खुशी आग में जलाये जाने के लिये या जंगली जानवरों के द्वारा फाड़े जाने के लिये दे दिया क्योंकि वे मसीह के प्रेम के द्वारा ''नियंत्रित'' थे।[7] धार्मिकता में उनके दासत्व के कारण, मसीहियो ने किसी के प्रति गलत किये जाने पर, स्वयं को बार बार दीन करते हुए और क्षमा मांगते हुए पाया है। एक ब्रिटिश टापू में डब्ल्यू. पी. निकलसन की सेवकाई के अधीन जागृति की कहानी बतायी जाती है जब बड़ी संख्या में गोदी कामगार परिवर्तित हुए थे। इन व्यक्तियों ने चुराया हुआ इतना माल लौटाया कि मालगोदामों में रखने का स्थान नहीं बचा और कंपनी को आदेश निकालना पड़ा कि, ''कृपया अब और चुराया हुआ माल वापस नहीं लाइये!'' मसीही जन के लिये धार्मिकता का दास होने के परिणाम ऐसे ही होते हैं, और *यह कितनी धन्य स्वतंत्रता है!* नये जन्म का आश्चर्य – पाप के दासत्व से धार्मिकता के दासत्व में बदले जाना!

शास्त्रसंदर्भ

1 लुका 16:13;
2 यूहन्ना 10:10.
3 रोमियों 5:21;
4 2कुरिन्थियों 4:4.
5 लुका 11:21–22;
6 यिर्मयाह 20:8–9.
7 2कुरिन्थियों 5:14.

अध्याय – 14

व्यवस्था से अनुग्रह की ओर

तब पाप तुम पर प्रभुता करने नहीं पाएगा, क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं, परन्तु अनुग्रह के अधीन हो।

– रोमियों 16:14

क्योंकि व्यवस्था के द्वारा मैं व्यवस्था के लिए मर गया कि परमेश्वर के लिए जीवित रह सकूं। मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं।

– गलातियों 2:19–20

हमने पूर्व के अध्यायों में देखा है कि बाइबल में नये जन्म को ''क्षेत्रों में परिवर्तन'' के रूप में वर्णित किया गया है – देह से आत्मा की ओर, पृथ्वी से स्वर्ग की ओर, पाप के दासत्व से धार्मिकता के दासत्व की ओर। परंतु बाइबल एक अन्य प्रकार के क्षेत्र में परिवर्तन के विषय में भी कहती है – ''व्यवस्था की अधीनता'' से ''अनुग्रह की अधीनता'' में। चूंकि क्षेत्रों का यह परिवर्तन अपने में धर्मीपन और नया जन्म दोनों को सम्मिलित करता है, तो यह आवश्यक है कि इन दो बड़े आश्चर्यकर्मो की किसी भी चर्चा में, कुछ निश्चित पहलूओं की चर्चा करना आवश्यक है।

जिन पदों को उपर उदधृत किया गया है, उनमें पौलुस हमें बताता है कि मसीही ''व्यवस्था के अधीन नहीं'' हैं और ''व्यवस्था के लिये मृत'' हैं। दूसरे अंशों में वह हमें बताता है कि मसीही ''व्यवस्था से छूट गये हैं,''[1] अब और अधिक व्यवस्था के ''बंधन''[2] में नहीं हैं; परंतु मसीह के द्वारा व्यवस्था के ''दासत्व के जुए''[3] से छुड़ाए गए हैं। भटके हुए मनुष्य का परमेश्वर से संबंध व्यवस्था के अंर्तगत आता है; परंतु मसीही जन के साथ ऐसा नहीं है। वह ''छुटकारे'' व ''स्वतंत्रता'' की आनंददायक अवस्था में निवास करता है।[4]

इसका क्या अर्थ है कि मसीही जन ''अनुग्रह के अधीन'' होते हैं? और इसका क्या तात्पर्य है कि वे ''व्यवस्था के अधीन नहीं'' हैं और ''व्यवस्था के लिये मृत'' हैं? क्या इसका यह तात्पर्य है कि अब मसीहियों के लिये चोरी करना, व्यभिचार करना, अथवा पाप करते रहना कोई गलत बात नहीं है? पौलुस ने इसका सर्वश्रेष्ठ उत्तर दिया, ''कदापि नहीं!''[5] तो ठीक तौर पर, आखिर, व्यवस्था से स्वतंत्र होने की मांग क्या है? धर्मी ठहराए जाने और नये जन्म की प्रकृति और गुण के उपर विचार करते हुए, अब हम इस अवस्था में हैं कि इस प्रश्न के कई उत्तर दे सकते हैं। उत्तर बहुत अदभुत हैं और उनका अर्थ व्यापक है।

श्राप

किस अर्थ में मसीही जन व्यवस्था से मुक्त हैं? इस प्रश्न का प्रथम उत्तर है कि मसीही जन व्यवस्था के श्राप से मुक्त हैं। समस्त भटके हुए लोग श्राप के वश में हैं: ''सो जितने लोग व्यवस्था के कामों पर भरोसा रखते हैं, वे सब श्राप के अधीन हैं, क्योंकि लिखा है, 'कि जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों के करने में स्थिर नहीं रहता, वह श्रापित है।''[6] भले ही उसके जीवन में सब चीजें कितने ही अच्छे से चलते हुए प्रतीत हो रही हों, गैर मसीही निरंतर परमेश्वर के श्राप में बने रहता है। यद्यपि उसके बच्चे स्वस्थ हो सकते हैं, उसका बगीचा फलता–फूलता हो और उसके फूलों में सुंदर बहार ही क्यों न आयी हुई हो, परमेश्वर का क्रोध पूरे समय उस पर ''बना रहता'' है।[7] एक दिन वह भयंकर शब्द सुनेगा, ''*हे श्रापित लोगों,* मेरे सामने से उस अनंत आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है।''[8]

मसीही जन, दूसरी ओर, व्यवस्था के श्राप से मोल लेकर छुड़ाए गए हैं: ''मसीह ने जो हमारे लिए श्रापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के श्राप से छुड़ाया – क्योंकि

लिखा है, 'जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह श्रापित है.....''[9] परमेश्वर को महिमा मिले! अगर आप एक मसीही जन हैं, तो अब से आप श्राप के अधीन नहीं हैं! *थोड़ा* सा भी श्राप आप के उपर शेष नहीं रहा, क्योंकि ''सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दंड की आज्ञा *नहीं।*''[10] इसके अतिरिक्त, फिर कभी श्राप आप के उपर नहीं आयेगा, क्योंकि आप के पाप हमेशा के लिये मिट चुके हैं![11]

व्यवस्था से मुक्त होकर, ओह, कितनी सुखद दशा है,
यीशु ने लहू बहाया, और उसमें क्षमा मिलती है।
व्यवस्था से श्रापित और पतित होकर कुचला गया,
अनुग्रह ने हमें मोल लेकर छुड़ाया, एक ही बार सदा के लिये!

एक ही बार सदा के लिये, ओह, हे पापी इसे स्वीकार ले;
एक ही बार सदा के लिये, ओह, हे भाई इस पर विश्वास कर;
क्रूस से लिपटे रह, बोझ तेरा उतर जायेगा,
अनुग्रह ने हमें मोल लेकर छुड़ाया, एक ही बार सदा के लिये!

— फिलिप पी. ब्लिस

आशीषें और कृपा

न केवल मसीही जन व्यवस्था के श्राप से मुक्त हैं; परंतु उस कुचलने वाले बोझ के तले दबे रहने से भी मुक्त है जिसका आशय है कि *व्यवस्था पालन धार्मिकता और जीवन पाने का एक माध्यम है।* जैसा कि पूर्व के अध्यायों में देखा गया है, व्यवस्था पालन के द्वारा जो अपनी धार्मिकता को बनाये रखते हैं, उन लोगों को व्यवस्था, जीवन और आशीष देने की प्रतिज्ञा करती है।[12] ''यह *करो* तो आप *जीवित* रहोगे,'' यह व्यवस्था का सिद्धांत है। व्यवस्था के वश में रहकर, मनुष्य, परमेश्वर की कृपा पाने के लिये और अपने जीवन के अंत में ''पहला अंक'' मिलने के प्रयास में स्वयं को बुरी तरह थका डालते हैं (और दयनीय ढंग से असफल हो जाते है)।

मसीही जन के लिये हर चीज भिन्न होती है। उसे पहले से ही उसकी ''पहला अंक'' श्रेणी प्राप्त है; उसके पास पहले से ही अनंत जीवन है; उसे पहले से ही परमेश्वर की मुस्कुराहट और कृपा प्राप्त है – क्योंकि यह सारी व्यवस्था मसीह ने उसके स्थान पर पूर्ण कर दी है! और जैसे एक दूल्हा अपनी दुल्हन के कारण आनंदित होता है, वैसे

ही परमेश्वर उससे हर्षित होता और आनंद मनाता है: "और जैसे दुल्हा अपनी दुल्हिन के कारण हर्षित होता है, वैसे ही तेरा परमेश्वर तेरे कारण हर्षित होगा।"[13] जैसे "उस समय यरूशलेम से यह कहा जायेगा: 'हे सिय्योन मत डर, तेरे हाथ ढीले न पड़ने पाएं। तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है, वह उद्धार करने में पराक्रमी है; वह तेरे कारण आनंद से मगन होगा, वह अपने प्रेम के खातिर चुप रहेगा; फिर उंचे स्वर से गाता हुआ तेरे कारण मगन होगा!"[14] यह जानते हुए कि हम कितने पापमय हैं और परमेश्वर हमसे हर्षित हो, इसके लिये, अभी भी अयोग्य हैं, हमारे लिये विश्वास करना कठिन है कि वह हमारे प्रति सचमुच में इस तरह की भावना रख सकता है। परंतु वह हमसे आनंदित होता है! वह न केवल हमसे प्रेम करता है; वह हमारी समझने की योग्यता से बढ़कर हमसे प्रेम करता है – उसका प्रेम "ज्ञान से परे है"![15]

मसीही जन इस बात से मुक्त होता है कि व्यवस्था जीवन प्राप्त करने के लिये जरूरी है। मसीह ने न केवल उसे व्यवस्था के श्राप से छुड़ाया है; उसने उसके लिये जीवन की समस्त आशीषें और धार्मिकता भी प्राप्त कर रखी है। मसीह ने हमें व्यवस्था के *श्राप* से छुड़ाया..... यह इसलिये हुआ, कि इब्राहिम की आशीष मसीह यीशु में अन्यजातियों तक पहुंचे, और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें, जिस की प्रतिज्ञा हुई है।"[16] इसका अर्थ है कि श्राप में रहने के स्थान पर, मसीह जन अब परमेश्वर की निरंतर आशीष में बना रहता है। यद्यपि उसके बच्चों को बीमारी हो सकती है, उसका बगीचा सूखे के कारण उजड़ सकता है, और उसके फूल मुरझा सकते हैं, परंतु उस पर निरंतर परमेश्वर की मुस्कुराहट बनी रहती है। आशीषित होने की यह अवस्था उसके धर्मी होने से आती है: "और पवित्रशास्त्र ने पहिले ही से यह जान कर, कि परमेश्वर अन्यजातियों को विश्वास से *धर्मी* ठहराएगा, पहिले ही से इब्राहीम को यह सुसमाचार सुना दिया, 'कि तुझ में सब जातियां *आशीष* पाएंगी।' तो जो विश्वास करने वाले हैं, वे विश्वासी इब्राहिम के साथ आशीष पाते हैं।"[17] "जैसे दाउद भी उस मनुष्य को *आशीष* मिलने के विषय में कहता है जिसके कार्यो से अलग हटकर, परमेश्वर उसकी धार्मिकता की गिनती करता है: 'धन्य हैं वे, जिन के अधर्म क्षमा हुए, और जिन के पाप ढांपे गए। धन्य हैं वह मनुष्य जिसे परमेश्वर पापी न ठहराये।"[18] परमेश्वर की आशीष के अधीन रहकर कैदखाने में निस्तेज पड़े रहना, श्रापित होकर राजमहल में रहने से बहुत हद तक अच्छा है! "तब राजा अपनी दाहिनी ओर वालों से कहेगा, 'हे मेरे पिता

के धन्य लोगों, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है।''[19]

क्या आप एक मसीही जन हैं? तब तो परमेश्वर की आशीष आप पर उन तरीकों से बनी रहेगी जो कल्पना से परे अति अदभुत है! ''कि जो आंख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुनी, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ी, वे ही हैं – जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों के लिये तैयार की है!''[20] ''निश्चय भलाई और करूणा जीवन भर मेरे साथ साथ बनी रहेगी; और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूंगा।''[21]

बाहरी नियम

जैसा हमने उपर के भागों में देखा, मसीही जन के कुछ पहलू जैसे ''व्यवस्था से मुक्ति'' का *धर्मी ठहराये जाने से* संबंध है। वह व्यवस्था के श्राप से मुक्त है, और व्यवस्था जीवन प्राप्त करने का एक माध्यम है, इस भाव से मुक्त होता है। परंतु मसीही जन के लिये व्यवस्था से मुक्त होने का एक दूसरा पहलू *नये जन्म* का सीधा परिणाम है, व्यवस्था से मुक्त होना, यह मसीही जन के लिये स्वतंत्रता का एक दूसरा पहलू हैः मसीही जन व्यवस्था से स्वतंत्र है यह एक बाह्य नियम के रूप में कार्य करता है *जो उसके शारीरिक स्वभाव और इच्छाओं से विरोध रखता है।* एक नये हृदय के चमत्कार द्वारा उसे स्वतंत्रता मिलती है।

इसका क्या अर्थ है, यह समझने के लिये, हमें केवल प्रत्येक अविश्वासी जन की दशा पर विचार करने की आवश्यकता हैः उस व्यक्ति के उपर, व्यवस्था स्वयं को बाहर से लागू करती हैं और उसकी वास्तविक इच्छाओं के विरोध में रहती है, उसे निरतंर बंधन और हताशा की अवस्था में रखती है। जिन चीजों से वह प्रेम रखता है, यह उसके लिये मना करती है और जिनसे घृणा करता है, उन्हें करने का आदेश देती है। जब वह चोरी करने के लिये अपना हाथ बढ़ाता है, व्यवस्था कहती है, ''तुम चोरी नहीं करोगे।'' जब वह किसी स्त्री को लालसा से देखता है, व्यवस्था कहती है, ''तुम व्यभिचार नहीं करोगे।'' भटके हुए मनुष्य की दशा का सार एक प्रसिद्ध बड़े विज्ञापन पर लिखे शब्दों से निकाला जा सकता है, ''प्रत्येक चीज जो मैं पसंद करता हूं, ''वह या तो अवैध, अनैतिक, या वजन बढ़ाने वाली होती है।'' व्यवस्था नये जन्म से वंचित व्यक्ति को भय दिखाकर व धमकियों द्वारा नियंत्रित करती एवं रोकती है, और वह इससे *घृणा* करता हैः

''क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो वह परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है।''[22]

प्रत्येक मसीही जन इस बंधन की अवस्था से मुक्त किया गया है। अब उसके लिये व्यवस्था एक बाहरी नियम नहीं ठहरी, जो उसके शारीरिक स्वभाव और इच्छाओं के विरोध में रहती है। बल्कि, व्यवस्था आंतरिक हो जाती है; नये जन्म के आश्चर्यकर्म में यह ''हृदय पर लिखी गयी'' होती है।[23] अब वह प्रेम से नियंत्रित किया जाता है, व्यवस्था से नहीं।[24] जो उसके हृदय के गहनतम भागों से निकलकर व्यवस्था की पुष्टि करता है और उसे स्वतः पूरी करता है, क्योंकि ''प्रेम व्यवस्था को पूरा करता है।''[25] एक मसीही जन *जो वह वास्तव में है,* उसे परमेश्वर की व्यवस्था से संघर्ष होने की कभी चिंता नहीं करनी होगी! ''पर आत्मा का फल प्रेम, आनंद, मेल, धीरज, और कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं; *ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं!*[26] ''यदि तुम आत्मा के चलाये चलते हो, तो व्यवस्था के अधीन नहीं रहे।''[27]

इस सच्चाई को बनाये रखने के लिये, पौलुस कहता है कि ''*व्यवस्था धर्मी जन के लिये नहीं,* पर अधर्मियों, निरंकुशों, भक्तिहीनों, पापियों, अपवित्रों और अशुद्धों, मां बाप के घात करने वालों, हत्यारों, व्यभिचारियों, पुरूषगामियों, मनुष्य के बेचने वालों, झूठों, और झूठी शपथ खाने वालों और इन को छोड़ खरे उपदेश के सब विरोधियों के लिये ठहराई गई है।''[28] धर्मी जन को ऐसे बाहरी प्रतिबंधों की कोई आवश्यकता नहीं है, चूंकि वह अपने स्वयं के पवित्र स्वभाव से नियंत्रित रहता है। यहां तक कि नये नियम की आज्ञायें और धार्मिक शिक्षायें केवल इसलिये आवश्यक हैं क्योंकि विश्वासी अभी तक पूर्ण रूप से वैसे नहीं बन गये है जैसा ''उन्हें होना चाहिये''। चूंकि हम अभी तक ''मरणहार देह'' में ही हैं और ''पाप के छल''[29] और ''शैतान की युक्तियों''[30] से प्रभावित हो सकते हैं, इसलिए हमें अभी भी दिशानिर्देश बिन्दूओं की आवश्यकता है जो हमें सही और गलत को अलग करने में सहायता करे। किन्तु, जैसे जैसे हम अनुग्रह में बढ़ते हैं, हमारी बुद्धि उत्तरोत्तर ''नयी होती जाती है,'' और क्योंकि ज्ञानेंद्रिय अभ्यास करते करते, भले बुरे में भेद करने के लिये पक्के हो गए हैं।''[31] इस तरह, हम अधिकाधिक योग्य बनाये जाते हैं कि ''परमेश्वर की भली और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहें।''[32]

हम मसीही जन व्यवस्था के ''अधीन'' नहीं है; वह (पौलुस की वास्तविक शब्दावली का प्रयोग करें) तो ''मसीह की व्यवस्था के अधीन है।''[33] यदि सभी मनुष्य मसीही होते, तो घरों में ताले डालने की जरूरत नहीं होती अथवा दुकानों का माल न उठाने के

लिये चेतावनी सूचक लगाने की जरूरत नहीं होती। स्वर्ग में कामकाज की ऐसी अवस्था यथार्थ में होगी, जहां प्रत्येक जन जैसा चाहे वैसा करने की पूर्ण स्वतंत्रता का अनुभव करेगा! स्वर्ग में ऐसा कोई सूचक नहीं लगा होगा जिस पर लिखा हो, "तुम हत्या नहीं करोगे" या "तुम अपने संपूर्ण हृदय से प्रभु अपने परमेश्वर से प्रेम रखोगे"– वहां इन सब बातों की कोई आवश्यकता नहीं होगी!

आपूर्ति और मांग

समस्त मसीही जन व्यवस्था के प्रति मृत हैं। वे "व्यवस्था के अधीन नहीं परंतु अनुग्रह के अधीन हैं।" इन पदों को जांचने का अर्थ हमें पूर्णतः और अधिक इस पुस्तक की सीमा से बाहर ले जायेगा, पंरतु शायद एक और पहलू "व्यवस्था के प्रति मृत" का वर्णन किया जाना चाहिये। मसीही जन व्यवस्था के प्रति मृत है का अर्थ है कि अब वे "मांग" के क्षेत्र में नहीं रहते हैं, परंतु "आपूर्ति" के क्षेत्र में रहते हैं। वे व्यवस्था के नहीं परंतु अनुग्रह के "अधीन" हैं, जो प्रभावी सामर्थ है और वे उस क्षेत्र में रहते हैं जहां अनुग्रह "शासन" करता है।[34] इस क्षेत्र में आखिरकार *कुछ भी* मनुष्य के उपर निर्भर नहीं करता है; *सब कुछ* परमेश्वर के उपर निर्भर करता है। भलाई करने की प्रत्येक इच्छा और आज्ञाकारिता का प्रत्येक कार्य विश्वासी के भीतर परमेश्वर द्वारा उदारतापूर्वक किया जाता है! "क्योंकि परमेश्वर ही है, जिसे ने अपनी सुइच्छा के निमित्त तुम्हारे मन में *इच्छा* और *काम, दोनों* बातों के करने का प्रभाव डाला है।"[35]

उस क्षेत्र में जहां अनुग्रह राज्य करता है, परमेश्वर *मेरी कमजोरियों और असफलताओं के बावजूद* मेरे भीतर कार्य करने का दायित्व लेता है जब तक कि मैं मसीह की समानता में सिद्ध न हो जाउं। चूंकि एक मसीही जन के रूप में *मैं* मेरी असफलताओं से अचंभित हो सकता हूं, परमेश्वर अचंभित नहीं होता! इसके पहले कि उसने अपना प्रेम मुझ पर प्रदर्शित किया, वह मेरे सारे पापों और कमजोरियों को पहले से ही जानता था, और वह वास्तव में मेरी भलाई के लिये, मेरी असफलताओं को नियंत्रित और निर्देशित करता है – ताकि मेरी कमजोरियों को उजागर करें और मुझे उनसे छुड़ाएं लूका 22:31–32। नयी वाचा में, परमेश्वर दयापूर्ण तरीके से निश्चित करता है कि "हमें हमारी *सारी* मलिनता से और हमारी *सारी* मूरतों से शुद्ध करे।"[36] जब तक यह कार्य अंतिम रूप से पूरा नहीं होगा, तब तक वह कभी भी विश्राम नहीं करेगा या ढीला नहीं पड़ेगा! हाल्लेलुयाह!

तेरे शुद्ध करने वाले अनुग्रह में सुरक्षित हूं
सर्वशक्तिशाली जो ज्यों का त्यों कर देता है –
आगे नया जन्म लेता हूं – पाप और मृत्यु पीछे छूटते जाते,
प्रेम और जीवन सामने हैं–
ओ, मेरी आत्मा को आशा से भरपूर होने दें,
और अधिकाधिक तेरी प्रशंसा करूं!

– ए. एल. वारिंग

शास्त्रसंदर्भ

1 रोमियों 7:6;
2 रोमियों 7:6;
3 गलातियों 5:1;
4 गलातियों 5:1,13;
5 रोमियों 6:14–15.
6 गलातियों 3:10;
7 यूहन्ना 3:36;
8 मत्ती 25:41;
9 गलातियों 3:13;
10 रोमियों 8:1;
11 इब्रानियों 8:12.
12 गलातियों 3:12;
13 लुका 10:25–28;
14 फिलिप्पियों 3:9;
15 रोमियों 10:5;
16 यशायाह 62:5;
17 सपन्याह 3:16–17;
18 इफिसियों 3:19;
19 गलातियों 3:13:14;
20 गलातियों 3:8–9[20].
21 रोमियों 4:6–8;

22 मत्ती 25:34;
23 1कुरिन्थियों 2:9;
24 भजन. 23:6;
25 रोमियों 8:7.
26 इब्रानियों 8:10;
27 2कुरिन्थियों 5:14;
28 रोमियों 13:10
29 गलातियों 5:14;
30 गलातियों 5:22–23;
31 गलातियों 5:15;
32 1तिमुथियुस 1:8–10;
33 इफिसियों 6:11;
34 इब्रानियों 5:14;
35 रोमियों 12:2;
36 1कुरिन्थियुस 3:21 (ग्रीक इनोमोस क्रिसटो).
37 रोमियों 5:21;
38 फिलिप्पियों 2:13;
39 यहेजकेल 36:25.

अध्याय – 15

क्षेत्रों में परिवर्तन

आदम से मसीह की ओर

''परंतु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान, धार्मिकता, और पवित्रता, और छुटकारा ठहरा, कि जैसा लिखा है, 'यदि कोई गर्व करे वह प्रभु में करे।''

– 1 कुरिन्थियों 1:30–31

पूर्व के अध्यायों में धर्मी ठहराये जाना और पुनरूज्जीवन दोनों आश्चर्यो पर हम कुछ विचार कर चुके हैं। इस बिंदु तक पहुंचने तक यह स्पष्ट हो जाना चाहिये कि ये दोनों शक्तिशाली कार्य सचमुच सुसमाचार का सार और केंद्र है। परमेश्वर के साथ पुनःस्थापित सहभागिता की घोषणा से बढ़कर कौनसा ''शुभ सुसमाचार'' इतना आनंददायक हो सकता है – कि सबसे अधिक *आशारहित दंडित व्यक्ति* भी लज्जाहीन होकर, मसीह की संपूर्ण धार्मिकता में लिपटा हुआ, परमेश्वर की उपस्थिति में खड़ा हो सकता है, और वे जो सबसे अधिक *घृणास्पद और निकम्मे* हैं, मसीह में पूरी रीति से नये प्राणी बनाये जाते हैं?

परंतु, धर्मी ठहराये जाना और पुनरूज्जीवन, ये दो बातें जितनी अदभूत हैं, फिर भी ये केवल एक महानतम अतिमहत्वपूर्ण सच्चाई का एक हिस्सा हैं – हमारे ''मसीह'' में होने की सच्चाई। मसीही जन के रूप में, हम कह सकते हैं कि हम धर्मी हैं, कि हमारे पास सिद्ध धार्मिकता है, कि हम नई सृष्टि हैं, कि हम स्वर्गिक स्थानों में बैठे हुए हैं, और हम उन दूसरे सब प्रकार की बातों से आशीषित हैं, जिनके बारे में पूर्व के अध्यायों में हमने पढ़ा था, *या सरल ढंग से हम कह सकते हैं कि हम ''मसीह में'' हैं!* क्योंकि *मसीह में* होना अर्थात प्रत्येक कल्पनीय आत्मिक आशीष को धारण करना[1] – जिसमें धर्मी ठहराये जाना और पुनरूज्जीवन, और हर एक ''भला व सिद्ध उपहार'' सम्मिलित है।''[2] (देखिये परिशिष्ट – ड)

मसीह में धर्मी ठहराये जाना

धर्मी ठहराये जाने की समस्त आशीषें मसीह में हमारी हैं। मसीह में हमें सिद्ध धार्मिकता प्राप्त है – वास्तव में जो परमेश्वर की धार्मिकता है: ''और *उस* में..... पाया जाउं, न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ, जो व्यवस्था से है, वरन.... उस धार्मिकता के साथ जो मसीह पर विश्वास करने के कारण है, और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है।''[3] ''जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम *उस में* होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।''[4] इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि हम ''*मसीह में* धर्मी ठहरायें'' गये हैं।''[5] *मसीह में हमें* ''पापों की क्षमा''[6] मिलती है, और ''जो..... *मसीह यीशु में* हैं उन पर दंड की कोई आज्ञा नहीं है।''[7]

मसीह में नई सृष्टि

जिस प्रकार धर्मी ठहराये जाने की समस्त आशीषें मसीह में हमारी हैं, वैसे ही पुनरूज्जीवन की सारी आशीषें उसमें हमें प्राप्त हैं: ''सो यदि कोई *मसीह में* है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं।''[8] ''क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और *मसीह यीशु में* उन भले कामों के लिये सृजे गए हैं।''[9] हम *''मसीह यीशु में* पवित्र किए''[10] गए हैं। ''*उसी में* परिपूर्ण किए गए,''[11] और हम ''*मसीह यीशु में,* उसके साथ स्वर्गीय स्थानों में''[12] बैठे हुए हैं।

एक निर्भर जीवन

इन पदों से यह स्पष्ट प्रगट होना चाहिये कि धर्मी ठहराये जाना और पुनरूज्जीवन, परमेश्वर से परे, होकर मिलने वाली आशीषें नहीं हैं जो हम *स्वयं अपने* अधिकार से प्राप्त करते हैं। परमेश्वर हमें नई सृष्टि इस रीति से नहीं बनाता कि हम स्वयं धार्मिकता के सकारात्मक स्त्रोत बन जाए, और उससे अलग रहते हुए, स्वयं के जीवन को उत्पन्न करने योग्य ठहरें। बल्कि, हम मसीह यीशु *में नयी सृष्टि* हैं। मसीह से अलग होकर हम कुछ भी नहीं हैं *और कुछ नहीं कर सकते।*[13] हम जो कुछ भी हैं और जो हमारे पास हैं, वह सब केवल उसमें है। इस तरह, मसीही जीवन पूर्णतः निर्भर जीवन है। यूहन्ना 15 अध्याय में, यह हमारे प्रभु की शिक्षा हैः ''तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में। जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, *तो अपने आप से नहीं फल सकती,* वैसे ही तुम यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते। मैं दाखलता हूं, तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।''[14] हम ''*अपने आप में* पर्याप्त नहीं है कि ऐसा मान लें कि *प्रत्येक चीज* हमें स्वयं की योग्यता से मिल रही है, परंतु हमारी पर्याप्तता परमेश्वर की ओर से है, जिस ने हमें नई वाचा के सेवक होने के योग्य भी किया, शब्द के सेवक नहीं वरन आत्मा के; क्योंकि शब्द मारता है, पर आत्मा जिलाता है।''[15]

रिक्त किया गया कि तू मुझे भर सके,
  तेरे हाथों में एक शुद्ध पात्र;
सामर्थहीन हूं, परंतु जैसे तू भर देता है,
  हर आज्ञा देते हुए उदारता से।

धन्य स्वामी, जो तू हर दिन,
  हर घड़ी हमें इस्तेमाल न करे,
तौभी तेरी समस्त अदभुत सामर्थ का प्रवाह,
  हममें से होकर बहता है।

— मेरी मैक्सवैल

''आदम में'' बनाम ''मसीह में''

यह हमें अंतिम रूप से ''क्षेत्रों में परिवर्तन'' के उपर विचार करने के लिये लेकर चलता है, जो दूसरी किसी अन्य बात की तुलना में अधिक आधारभूत, गहरा और व्यापक है – क्षेत्रों में परिवर्तन अर्थात ''आदम में'' से लेकर ''मसीह में'' हो जाने तक। बाइबल के अनुसार, संपूर्ण मानव इतिहास का सार दो मनुष्यों के संदर्भ में दिया जा सकता हैः आदम और मसीह। सभी मनुष्य, इन दोनों मनुष्यों में से, या तो पहले में या दूसरे ''में'' पाये जाते हैं। जो आदम में होते हैं, वे मरते हैंः वे जो मसीह में हैं, सनातन काल तक जीवित रहते हैं।

क्योंकि जब एक मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई तो एक ही मनुष्य के द्वारा मृतकों का पुनरुत्थान भी आया। जिस प्रकार आदम में सब मरते हैं उसी प्रकार मसीह में सब जिलाए जाएंगे, पर हर एक अपने क्रम के अनुसार : प्रथम फल मसीह है, तब मसीह के आगमन पर उसके लोग।

– 1 कुरिन्थियों 15:21–23

इसलिए यह भी लिखा है, ''पहला मनुष्य, आदम, जीवित प्राणी बना,'' और अन्तिम आदम जीवनदायक आत्मा। अतः पहले आत्मिक नहीं वरन् स्वाभाविक था, और तब आत्मिक आया। पहला मनुष्य पृथ्वी से है अर्थात् पार्थिव, दूसरा मनुष्य स्वर्ग से है। जैसे वह पार्थिव है वैसे ही वे भी हैं जो पार्थिव हैं, और जैसा वह स्वर्गीय है, वैसे ही वे भी हैं जो स्वर्गीय हैं। और जैसे हमने उस पार्थिव का रुप धारण किया है, वैसे ही उस स्वर्गीय का भी रुप धारण करेंगे।

– 1 कुरिन्थियों 15: 45–49

तथापि मृत्यु ने आदम से लेकर मूसा तक शासन किया, उन पर भी जिन्होंने आदम के अपराध के समान पाप नहीं किया था; आदम उसका प्रतिक था जो आने वाला था। .....जब एक ही मनूष्य के अपराध के कारण, मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा शासन किया, इस से बढ़कर वे जो अनुग्रह और धार्मिकता के दान को प्रचुरता से पाते हैं, उस एक ही यीशू मसीह के द्वारा जीवन में राज्य करेंगे। अतः जिस प्रकार एक ही अपराध का प्रतिफल सब मनुष्यों के लिए दण्ड की आज्ञा हुआ, उसी प्रकार धार्मिकता के एक ही कार्य का प्रतिफल सब मनुष्यों

के लिए धर्मी ठहराया जाना हुआ। जैसे एक मनुष्य के आज्ञा–उल्लघंन से अनेक पापी ठहराए गए, वैसे ही एक मनुष्य की आज्ञाकरिता से अनेक मनुष्य धर्मी ठहराए जाएंगे।

– रोमियों 5:14, 17–19

ध्यान दीजिए कि इन पदों में आदम को मसीह का ''प्रकार'' कहा गया है, और मसीह को ''अंतिम आदम'' कहा गया है। आदम प्रथम मनुष्य था, जो प्राकृतिक मनुष्य जाति का मुखिया था। उसके पतन से, पाप और मृत्यु ने मनुष्य जगत में प्रवेश किया और मानवता नष्ट हुई। मसीह ''अंतिम आदम'' बनकर एक नयी मनुष्य जाति का प्रारंभ करने के लिये और नवीन मानवता का मुखिया होने के लिये आ चुके हैं। जो आदम में हैं, वे उन सब बातों में सहभागी हैं जो आदम के लिये सत्य हैं; वे जो मसीह में हैं, उन सब बातों में सहभागी हैं जो मसीह के लिये सत्य हैं।

दो क्षेत्रों के लक्षण

आदम और मसीह के बीच क्षेत्रों का परिवर्तन सबसे अधिक आधारभूत और व्यापक परिवर्तन है, जिससे होकर कोई भी मनुष्य गुजर सकता है। इनमें हर उस दूसरे क्षेत्र का परिवर्तन सम्मिलित है, जिन्हें बाइबल परिवर्तन के साथ जोड़ती है, जिनमें पूर्व के अध्यायों में चर्चा किये गये वे सभी परिवर्तन शामिल हैं। पुनः इन दोनों क्षेत्रों पर और वह सब जो उनमें से प्रत्येक के भीतर समाविष्ठ किया गया है, ध्यान दीजिये:

आदम में	मसीह में
पाप (रोमियों 5:12, 19)	धार्मिकता (रोमियों 5:18, 19)
दंड (रोमियों 5:18)	धार्मिकता (रोमियों 5:18)
मृत्यु (रोमियों 5:17; 1 कुरू 15:22)	जीवन (रोमियों 5:18; 1 कुरिन्थ. 15:22)
देह (रोमियों 8:9; 7:5)	आत्मा (रोमियों 8:9)
संसार (कुलुस्सियों 2:20)	स्वर्गीय वस्तुएं (कुलुस्सियों 3:1–3)
व्यवस्था (रोमियों 6:14)	अनुग्रह (रोमियों 6:14)
श्राप (गलातियों 3:10)	आशीष (गलातियों 3:14, 8–9)

बंधन (रोमियों 7:6)	स्वतंत्रता (रोमियों 7:6; 2 कुरू 3:17)
पाप राज्य करता है (रोमियों 5:21)	अनुग्रह राज्य करता है (रोमियों 5:21)
पाप के ''अधीन'' (रोमियों 3:9; 7:14)	अनुग्रह के ''अधीन'' (रोमियों 6:14)
पाप के गुलाम (रोमियों 6:17)	धार्मिकता के गुलाम (रोमियों 6:18)
मृत्यु राज्य करती है (रोमियों 5:17)	हम जीवन में राज्य करते हैं (रोमियों 5:17)
अंधकार (प्रेरितों के काम 26:18)	प्रकाश (1 थिस्सु. 5:4–5)
शैतान का नियंत्रण (प्रेरितों के काम 26:18)	परमेश्वर का राज्य (कुलु. 1:12–13)

मसीही पुराने क्षेत्र के लिये ''मृतक'' हो चुके हैं

यह जानते हुए कि मसीह मृतकों में से जिलाया जाकर फिर कभी मरने का नहीं, न अब उस पर मृत्यु की प्रभुता है। क्योंकि जब वह मरा, तो पाप के प्रति सदा के लिए मर गया, परन्तु अब जो जीवित है, वह परमेश्वर के लिए जीवित है। इसी प्रकार तुम भी अपने आप को पाप के लिए मृतक परन्तु मसीह यीशु में परमेश्वर के लिए जीवित समझो।

– रोमियों 6:9–11

एक बार जब हम आदम और मसीह के इन ''दो क्षेत्रों'' को समझ चुके हैं कि ये कितने व्यापक हैं, हम पौलुस के इस अर्थ को समझने की अवस्था में हैं, जब वह कहता है कि मसीही जन जैसे कई बातों ''के प्रति मर चुके'' हैं। रोमियों 6:11 में पौलुस मसीहियों को विश्वास रखने और इस सत्य को समझने के लिये बुलाहट देता है कि वे *पाप* ''के प्रति मर चुके'' हैं। *व्यवस्था* से मसीही जन के संबंध को बताने के लिये इसी समान शब्दावली का प्रयोग किया गया है: ''मैं तो व्यवस्था के द्वारा *व्यवस्था के लिये मर गया,* कि परमेश्वर के लिये जीउं।''[16] *संसार* से मसीही जन के संबंध को भी क्रूसीकरण और मृत्यु के संदर्भ देते हुए बताया गया है: ''पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमंड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का *जिस के द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं।* क्योंकि न तो खतना और न खतनारहित कुछ हैं, परंतु नई सृष्टि।''[17] ''ध्यान दीजिये कि संसार के प्रति हमारा मरना मसीह में ''नई सृष्टि'' और ''क्रूसीकरण'' दोनों से बंधा हुआ है।

जब पौलुस कहता है कि मसीही जन पाप, व्यवस्था और संसार ''के प्रति मर चुके'' हैं, तो ऐसा कहने से उसका क्या अर्थ है?

निश्चित ही उसके कहने का यह अर्थ *नहीं* है कि हम इन चीजों के प्रति इस रूप में ''मर चुके'' हैं कि अब हम उनसे और अधिक प्रभावित ही नहीं होते हैं। यह इस तथ्य से प्रगट है कि पौलुस हमें समझाता है कि ''पाप तुम्हारी मरणहार देह में राज्य न करे।'' ऐसी उलाहना अनावश्यक हो जाती यदि मसीही जन अभी भी पाप से प्रभावित नहीं होते। रोमियों 6:11 का यह अर्थ नहीं है कि ''तुम ऐसे *बर्ताव* करो कि तुम अब और अधिक पाप से प्रभावित नहीं रहे, यद्यपि तुम *जानते* हो कि तुम प्रभावित हो''! बल्कि ''पाप के प्रति मृत'' का अर्थ समझने के लिये पद 10 बहुत उपयुक्त है, जो स्वयं मसीह के अनुभव के विषय में कहता है: *''क्योंकि वह जो मर गया तो पाप के लिये एक ही बार मर गया; परंतु जो जीवित है, तो परमेश्वर के लिये जीवित है।''*

ध्यान दीजिए कि पौलुस के अनुसार यह माना गया कि यहां तक कि मसीह स्वयं ''पाप के लिये मर चुका'' था! किस अर्थ में मसीह पाप ''के लिये मरा'' जब उसने प्राण छोड़े? क्या वह इसके लिये सदा ''जीवित'' था? और अब मसीह के पुरूत्थान के बाद वह किस अर्थ में परमेश्वर के लिये जीवित है?" क्या वह सर्वदा परमेश्वर के लिये जीवित न था"? इसका उत्तर स्पष्ट है : जब मसीह क्रुस पर मरे, तो वह "पाप के लिये मरे" *क्योंकि इसके बाद वह इस क्षेत्र से बाहर निकल गये,* और वह अब ''परमेश्वर के लिये जीवित है।'' क्योंकि उसके पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण के समय *वह स्वर्गीय क्षेत्र में प्रवेश कर चुके थे!* '' तौभी भी पौलुस पद 11 में कहता है, मसीही जन पाप के क्षेत्र से बाहर निकल जाने के कारण ''पाप के लिये मृत'' हैं और परमेश्वर के क्षेत्र में प्रवेश करने के द्वारा ''परमेश्वर के लिये जीवित'' हैं! वे एक क्षेत्र छोड़ चुके हैं और दूसरे में प्रवेश कर चुके हैं। जब पौलुस कहता है कि हम ''पाप के लिये मर चुके'' हैं, वह किसी ऐसी बात के लिये कह रहा है जो *सचमुच* में हो चुकी है! मसीही जन पाप के लिये इस अर्थ में नहीं मर चुका है कि अब वह पाप से प्रभावित नहीं होता, परंतु वह उस अर्थ में पाप के लिये मर *चुका* है कि अब वह पाप के राज्य के अधीन नहीं रहता है। हमारे पुराने मनुष्यत्व के क्रूस पर चढ़ाये जाने और मरने के द्वारा, हम देह के क्षेत्र से बाहर निकल आते हैं, संसार के क्षेत्र से बाहर आ जाते हैं, व्यवस्था के क्षेत्र से बाहर आ जाते हैं, और पाप व मृत्यु के क्षेत्र से बाहर निकल आते हैं।

हे मसीही जन, तुम वास्तव में ''पाप के लिये मर'' *चुके* हो क्योंकि तुम इसके क्षेत्र से बाहर निकल कर आ चुके हो। पाप अब और अधिक तुम पर राज्य नहीं करता है; न अब यह तुम्हारे ''उपयुक्त'' है; न अब यह तुम ''हो''; अब तुम इसके गुलाम नहीं रहे! जैसे यह भजन 37 अध्याय के दुष्ट जन के साथ हुआ था, वैसे ही मसीही जन के लिये होता है जब उसका पुराना मनुष्यत्व मरता हैः ''थोड़े दिन के बीतने पर दुष्ट रहेगा ही नहीं और तू उसके स्थान को भली भांति देखने पर भी उसको न पाएगा।''[18] एक समय जो हम ''दुष्ट जन'' थे ''अब ऐसे नहीं'' रहे। वह ''उसके स्थान'' पर ''अब नही'' पाया जाता है, और वे जो उसकी उपस्थिति की अपेक्षा रखते हुए देखने आते हैं, उसकी अनुपस्थिति से ''चकित'' हो जाते हैंः ''क्योंकि अन्यजातियों की इच्छा के अनुसार काम करने और लुचपन की बुरी अभिलाषाओं, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, पियक्कड़पन और घृणित मूर्तिपूजा में जहां तक हम ने पहिले समय गंवाया, वही बहुत हुआ। *इस से वे अचंभा करते हैं, कि तुम ऐसे भारी लुचपन में उन का साथ नहीं देते,* और इसलिये वे बुरा भला कहते हैं।''[19] कैसे यह अप्रत्याशित परिवर्तन हुआ इसे पूर्व के पदों में समझाया गया है:''.....*क्योंकि जिसने शरीर में दुख उठाया* (अर्थात मर चुका), *वह पाप से छुट गया। ताकि भविष्य में अपना शेष शारीरिक जीवन मनुष्यों की अभिलाषाओं के अनुसार नहीं वरन परमेश्वर की इच्छा के अनुसार व्यतीत करे।*'' [20]

हे मसीही जन, पाप के लिये तुम्हारी मृत्यु एक सच्चाई है! इसलिये, *इस तथ्य को समझो* कि तुम पाप के लिये मृत हो, परंतु मसीह यीशु में परमेश्वर के लिये जीवित हो!

मसीह में जीवन की निश्चयता

शायद इस अध्ययन को, समस्त विश्वासियों के आगे एक अकथनीय उज्ज्वल भविष्य है, इस बात पर पुनः एक बार विचार करते हुए अंत करना उपयुक्त होगा। प्रत्येक मसीही जन को इस तथ्य में बड़ा विश्राम पाना चाहिये कि वह अब ''मसीह में'' है और मसीह से संयुक्त है। आखिरकार, हममें से प्रत्येक ने प्रत्यक्ष रूप में आदम के साथ हमारी संयुक्तता के कारण वास्तविक और नष्ट कर देने वाले परिणाम अनुभव किये गये हैं! आदम के साथ हमारे संयुक्त होने ने प्रभावोत्कारी ढंग से हममें से हरेक के लिये पाप, दंड और मृत्यु को सुरक्षित कर लिया। आदम के सारे पतित पुत्रों को, नर्क और नष्ट करने वाले गढ्ढे तक पहुंचाकर, उनके उपर ''पाप राज्य करता है''[21] ''मृत्यु राज्य करती है।''[22]

परंतु अगर आदम के साथ संयुक्त होना मृत्यु को पाने जितना शक्तिशाली है, तो मसीह के साथ संयुक्त होना जीवन पाने के लिये *और कितना अधिक* सामर्थशाली कहलायेगा! रोमियों 5 में पौलुस ने यही तर्क दिया है। वह बारंबार मसीह के कार्य को आदम के कार्य की तुलना में ''और अधिक'' प्रभावोत्कारी कहता हैः ''क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो *और अधिक* जो लोग अनुग्रह और धर्म रूपी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के, अर्थात यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनंत जीवन में राज्य करेंगे।''[23] ''जहां पाप अधिक हुआ, वहां अनुग्रह उस से भी कहीं अधिक हुआ। कि जैसा पाप ने मृत्यु फैलाते हुए राज्य किया, वैसा ही हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनुगह भी अनंत जीवन के लिये धर्मी ठहराते हुए राज्य करे।''[24] पाप एक भयानक तानाशाह है जो आदम में पाये जाने वालों के उपर ऐसी प्रबलता से राज्य करता है कि उनके लिये मृत्यु अटल है। परंतु पाप मसीही जन के उपर अब और अधिक राज्य नहीं करता है। अनुग्रह मसीही जन के उपर राज्य करता है और ये इतने अनवरत ढंग से राज्य करता है कि इसके मार्ग में कोई खड़ा नहीं हो सकता। हे मसीही जन, तुम सदैव कमजोर और पापमयी हो सकते हो, तुम अपने आप में हताशा के साथ, हमेशा तर्क कर सकते हो कि तुम कभी स्वर्ग पहुंचोगे या नहीं, परंतु तुम्हारे जीवन पर ''अनुग्रह राज्य करता'' है, और यह तब तक विश्राम नहीं करेगा या ढीला नहीं पड़ेगा, जब तक हरेक पाप के उपर विजय प्राप्त न कर ले और तुम मसीह की सिद्ध प्रतिछाया में परिवर्तित न हो जाए! हाल्लेलुयाह! ''धार्मिकता के द्वारा'' अनुग्रह प्रभावोत्कारी ढंग से ''अनंत जीवन के'' संपूर्ण मार्ग तक ले जाने हेतु ''राज्य करता'' है!

अब मेरी आत्मा को जागने दो,
और बहकाने वाले को कुचलने दो;
मेरा अधिपति मेरी अगुवाई करता है
मुझे जीत और मुकुट दिलाने के लिये
सबसे निर्बल संत जन भी उस दिन जीतेगा,

भले ही मृत्यु और नर्क उसका मार्ग बाधित करे।
मृत्यु की सारी सेनाएं, और नर्क की अज्ञात ताकतें,
अपने अति भयानक प्रकोप व उत्पात को जारी रखती है,

पर मैं सुरक्षित रहूंगा, क्योंकि मसीह अपनी श्रेष्ठतम सामर्थ व मार्गदर्शक अनुग्रह को प्रगट करता है।

— इसहाक वाट्स

शास्त्रसंदर्भ

1 इफिसियो 1:3;
2 याकूब 1:17;
3 फिलिप्पियों 3:8–9.
4 1कुरिन्थियों 5:21;
5 गलातियों 2:17;
6 कुलुस्सियों 1:14;
7 रोमियों 8:1;
8 2कुरिन्थियों 5:17;
9 इफिसियों 2:10;
10 1कुरिन्थियों 1:2;
11 कुलुस्सियों 2:10;
12 इफिसियों 2:6;
13 यूहन्ना 15:5;
14 यूहन्ना 15:4–5;
15 2कुरिन्थियों 3:5–6.
16 गलातियों 2:19;
17 रोमियों 7:4;
18 कुलुस्सियो 2:20–21;
19 गलातियों 6:14–15.
20 भजन. 37:10;
21 1पतरस 4:3–4;
22 1पतरस 4:1–2.
23 रोमियों 5:21;
24 रोमियों 5:14;
25 रोमियों 5:17,15;
26 रोमियों 5:20–21.

परिशिष्ठ–अ

पुनरूज्जीवन

एक सारांश

जब हम यीशु मसीह के साथ एक हुए उस समय से निम्नलिखित बातें हमारे विषय में सच्चाई बन गई है :

1. नई सृष्टि अ) पुरानी बातें बित गयी और ब) हम नयी सृष्टि बन गए

- 2 कुरिन्थियों 5:14–17, *नई सृष्टि।*
- गलातियों 6:15 (तुलना करे पद 14) *नई सृष्टि।*
- इफिसियों 2:10 *उसके हाथ की कारीगरी* जो मसीह यीशु में *सृजे* गए।
- इफिसियों 2:15, कि दोनों से अपने में एक *नए मनुष्य* की *सृष्टि* करके मेल करा दे – एक देह (पद 16)।
- इफिसियों 4:24, *एक नया मनुष्यत्व,* जो परमेश्वर के अनुरूप सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में *सृजा* गया है, इसलिए *क्योंकि हम आपस में एक दुसरे के अंग है* (पद 25)।
- कुलुस्सियों 3:10, और *नये* मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृष्टिकर्ता के अनुसार है..... तीतुस 3:5 "नयेपन"।

2. नया जन्म – हमारा 'नया जन्म' हुआ है, एक वास्तविक जन्म जो आत्मिक क्षेत्र में होता है।

- यूहन्ना 3:6, *जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है।*
- 2 पतरस 1:4, *ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी।*

- 1 यूहन्ना 3:9, *जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, उसका बीज* बना रहता है, और हम पाप नहीं कर सकते क्योंकि हम जन्मे है।
- इब्रानियों 2:11, एक पिता (वास्तविकता!)..... *इसलिए भाईयों* .....।
- 1 यूहन्ना 3:1, "और वही हम है..... इस कारण..."।

3. नया हृदय – अ) हमारा पत्थर का हृदय निकाला गया, ब) और हमें 'मांस का हृदय' दिया गया।

- यहेजकेल 36:22–32, *"नया हृदय," "नयी आत्मा," "मै अपना आत्मा तुम में डालूंगा।"*
- यिर्मयाह 31:33–34, *"उन में," "उनके हृदयों पर"* ।
- यिर्मयाह 32:38–41, *मै उनको एक ही मन और एक ही मार्ग दूंगा;* मै अपना भय उनके हृदयों में डालूँगा जिससे *वे कभी मुझ से* विमुख न हों।
- इब्रानियों 8:10, मै..... उन में..... डालुंगा.....।
- 2 कुरिन्थियों 3:1–3, *जीवित परमेश्वर कि आत्मा* से, पत्थर कि पट्टियों पर नहीं पर *मनुष्यों के हृदय पटल* पर लिखा गया है।

4. आत्मिक हृदय का खतना – हमारे हृदय का आत्मा के द्वारा खतना किया गया

- रोमियों 2:8–29, आत्मा के द्वारा *हृदय* का खतना।
- कुलुस्सियों 2:10–11, उसी में परिपूर्ण किये गए हो, *उसी में तुम्हारा ऐसा खतना* हुआ है जो *हाथ से नहीं वरन मसीह के अनुसार खतना है, जिसमें शारीरिक देह उतार दी जाती है* (पद 13) *शरीर कि खतना रहित* दशा में मृतक थे (सभी अन्य जातियों कि शारीरिक दशा)।
- इफिसियों 2:11, "कथित," शरीर में *हाथ के किये हुए* खतना।
- फिलिप्पियों 3:3, *सच्चा खतना,* जो आत्मा में उपासना करते है, और शरीर पर भरोसा नहीं रखते।
- प्रेरितों के काम 7:51, "हे हठीले लोगों, तुम्हारे मन और कान खतनारहित है। तुम सदा पवित्र आत्मा का विरोध करते आए हो।"
- व्यवस्थाविवरण 30:6, प्रेम के लिए परमेश्वर *तुम्हारे हृदय का खतना* करेगा।

5. नया स्वभाव – कंटिली झाडियों से बदलकर अंजिर का पेड बन गए।

- मत्ती 12:33–37, "या तो पेड़ को अच्छा कहो और उसके फल को भी, या पेड़ को निकम्मा कहो और उसके फल को भी, क्योंकि पेड़ अपने फल ही से पहिचाना जाता है।"
- मत्ती 7:15–20 (विशेष पद 18, "नहीं दे सकता")।

6. नया मनुष्य – अ) हमने पूराने मनुष्यत्व को निकाल दिया है और ब) हमने नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है। (आदम बनाम मसीह)

- कुलुस्सियों 3:8–11, *क्योंकि* तुमने अपने *पुराने* मनुष्यत्व को उसके बुरे कार्यों सहित *त्याग दिया* है, और नए मनुष्यत्व को *पहिन लिया* है जो अपने सृष्टिकर्ता के स्वरुप के अनुसार सत्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए नया बनता जाता है, इसमें *यहूदी और यूनानी कोई भेद नहीं,* परन्तु *मसीह सब कुछ और सब में है।*
- इफिसियों 2:10, 14–16, कि दोनों से अपने में एक नए मनुष्य की सृष्टि करके मेल करा दे।
- गलातियों 3:27–28, तुम में से जितनो ने मसीह में बप्तिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहिन लिया है, अब न कोई यहूदी या यूनानी.....पर तुम सब मसीह यीशु में एक हो।
- रोमियों 13:13–14, ...न कि रंगरेलियों, ईर्ष्या और झगडे... वरन् *मसीह को धारण कर लो* और शारीरिक वासनाओं कि तृप्ति में मन न लगाओ।
- इफिसियों 4:22–25, कि तुम पिछले चालचलन के *पुराने मनुष्यत्व* को उतार डालो जो भरमाने वाली अभिलाषाओं के अनुसार नष्ट होता जाता है, *और मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ,* और नए मनुष्यत्व को पहिन लो जो *परमेश्वर के अनुरूप सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है।* इसलिए झूठ बोलना छोड़कर, *क्योंकि हम आपस में एक दुसरे के अंग है।*

7. क्रुसीकरण और पुनरुत्थान – अ) हमारा "पुराना मनुष्यत्व" क्रूस पर चढ़ाया गया और, 'हम' मर गए, गाड़े गए और, ब) हम नए जीवन के लिए जिलाए गए, स्वर्गीय स्थानों में चढाए गए, और पवित्र आत्मा हमारे भीतर आने के द्वारा हम मसीह के जीवन और सामर्थ के भागी बन गए

क्रुसीकरण

- रोमियों 6:6, हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गाया।

- गलातियों 2:20, मै मसीह के साथ क्रूस पर चढाया गया हूं। अब मैं जीवित नहीं रहा...
- गलातियों 6:14, प्रभु यीशु मसीह के क्रूस के द्वारा संसार मेरी दृष्टी में क्रूस पर चढ़ाया जा चुका है।

मर गया

- रोमियों 6:2, हम जो मर गये।
- रोमियों 6:7, जो मर गया।
- रोमियों 6:8, हम मसीह के साथ मर गये।
- रोमियों 7:4, व्यवस्था के प्रति मृतक बना दिए गए।
- रोमियों 7:6, जिससे बंधे थे उसके प्रति ऐसे मर कर उससे ऐसे मुक्त हो गए है...।
- गलतियों 2:19, मै व्यवस्था के लिए मर गया।
- गलतियों 2:20, अब मै जीवित नहीं रहा।
- कुलुस्सियों 2:20, तुम मसीह के साथ मर चुके हो।
- कुलुस्सियों 3:3, तुम तो मर चुके हो।
- 2 तीमुथियुस 2:11, यदि हम उसके साथ मर चुके है।
- 2 कुरिन्थियों 5:14, तो सब मर गये।

गाड़े गए

- रोमियों 6:4, उसके साथ गाड़े गए है।
- कुलुस्सियों 2:12, और बपतिस्मे में उसके साथ गाड़े गए।

पुनरुत्थान और ऊपर उठाये गए

- रोमियों 6:4, जैसे मसीह जिलाया गया था, वैसे हम जीवन की नई चाल चलें।
- रोमियों 6:5, उसके जी उठने की समानता में..
- रोमियों 6:8, उसके साथ जीवित भी रहेंगे
- रोमियों 6:11, मसीह यीशु में परमेश्वर के लिए जीवित
- रोमियों 6:13, मृतकों में से जीवित
- इफिसियों 2:5–6, उसने हमें मसीह के साथ जीवित किया और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया और स्वर्गीय स्थानों में बैठाया तुलना करे 5:14!
- गलातियों 2:19, कि मै परमेश्वर के लिए जीवित रह सकूं।

- गलातियों 5:25, हम पवित्र आत्मा के द्वारा जीवित है।
- कुलुस्सियों 2:12, उसी के साथ जिलाए भी गये। यह उस विश्वास के द्वारा हुआ जो परमेश्वर के सामर्थ पर है जिसने मसीह को मरे हुओं मे से जिलाया।
- कुलुस्सियों 3:1–3, तुम *मसीह के साथ* जीवित किये गये, तो *स्वर्गीय वस्तुओं पर मन लगाओ, जहां मसीह है,* और *परमेश्वर के दाहिनी ओर विराजमान है।* क्योंकि तुम तो मर चुके हो और *तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है।*
- 2 कुरिन्थियों 5:15, कि वे *जो जीवित है* अपने लिए न जिए पर उसके लिए जिए, जो उनके लिये मरा और *फिर जी उठा।*

उसके जीवन और सामर्थ में सहभागी

- यूहन्ना 4:14, *उसमें* अनंत जीवन के लिए *उमण्डने* वाला *जल का सोता बन जाएगा।*
- यूहन्ना 6:57, *और मैं पिता के कारण जीवित हूं, इसी प्रकार मेरे कारण जीवित रहेगा।*
- यूहन्ना 15:4–5, *मुझ में बने रहो, और मैं तुम में। डाली अपने आप से नहीं फल सकती।*
- 2 कुरिन्थियों 4:11, कि *यीशु का जीवन* भी हमारे *मरणशील शरीर में प्रकट हो।*
- गलातियों 2:20, "अब मैं जीवित नहीं राहा, *परन्तु मसीह मुझ में जीवित है।*
- इफिसियों 3:16, 20, *आत्मा के द्वारा अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ* पाकर बलवान होते जाओ अब जो ऐसा सामर्थी है, *उस सामर्थ के अनुसार जो हम में क्रियाशील है,* कि हमारी विनती और कल्पना से *कहीं अधिक बढ़कर कार्य कर सकता है।*
- कुलुस्सियों 3:4, मसीह, जो *हमारा जीवन* है।
- फिलिप्पियों 1:19, 21, यीशु मसीह के आत्मा के सहायता से *"जीवित रहना मसीह है।"*
- फिलिप्पियों 4:13, "जो मुझे सामर्थ प्रदान करता है, उसके द्वारा मैं सबकुछ कर सकता हूं।"
- और भी बहुत !

8. शरीर / आत्मा अ) अब हम "शरीर में नहीं," पर ब) "आत्मा में है।"

- रोमियों 7:5, जब हम...
- रोमियों 8:5–9 पर *वे जो शरीर के अनुसार है, "शरीर पर मन लगाना* तो मृत्यु है" *जो शारीरिक* है, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते : परन्तु तुम शरीर में *नहीं* पर आत्मा में हो, यदि वास्तव में *परमेश्वर का आत्मा* तुम में वास करता है।

- 1 कुरिन्थियों 2:10 – 3:4 स्वाभाविक, शारीरिक, "मनुष्य के अनुसार" या "शारीरिक मनुष्य विपरीत आत्मिक" और "मसीह का मन।" (खोए हुए मनुष्यों के समान जीवन यापन)
- 2 कुरिन्थियों 5:16, इसलिए अब से हम किसी मनुष्य को *शरीर के अनुसार* न समझेंगे। यद्यपि हमने मसीह को भी शरीर के अनुसार जाना है, *तथापि अब से हम उसे ऐसा नहीं जानते।* नई सृष्टि, *पुरानी बातें बीत गई।* (अब से हम किसी बात को शारीरिक दृष्टि से नहीं देखते, क्योंकि अब हम शरीर के अनुसार नहीं जीते)
- गलातियों 5:25, पवित्र आत्मा के द्वारा जीवित है। (ध्यान दे अगले पदों में शरीर और आत्मा एक दूसरे के विरोध में है)

9. संसार / स्वर्गीय – अ) हम पृथ्वी के क्षेत्र से स्थानांतरित किए गए और ब) स्वर्गीय स्थानों में बिठाए गए

- कुलुस्सियों 2:20, "उनके समान जो संसार में जीवन व्यतीत करते है"!
- कुलुस्सियों 3:1–3, "स्वर्गीय वस्तुएं" विपरित है "पृथ्वी कि वस्तुओं से"
- फिलिप्पियों 3:19ब–20, "स्वर्गीय वस्तुएं" विपरित है "पृथ्वी कि वस्तुओं से"; अब हम *नागरिक* है।
- इफिसियों 2:6, "मसीह के साथ बिठाये गए," "स्वर्गीय स्थानों में।"
- इफिसियों 1:3, "मसीह में," "स्वर्गीय स्थानो में"
- गलातियों 4:25–26, "वर्तमान यरूशलेम" बनाम "स्वर्गीय यरूशलेम"
- इब्रानियों 12:22, परन्तु तुम तो सिय्योंन पर्वत के और जीवित परमेश्वर के नगर स्वर्गीय यरूशलेम में..... आए हो....।
- गलातियों 6:14 संसार की दृष्टी में क्रूस पर चढ़ाया गया!
- यूहन्ना 17:14, 16 क्योंकि जैसे मैं संसार का नहीं वैसे वे भी संसार के नहीं! तुलना करें, यूहन्ना 8:23, 1 यूहन्ना 4:4–6।

10. अन्धकार / ज्योति, अ) हमें अंधकार के क्षेत्र से निकाला गया, और ब) हमें ज्योति के क्षेत्र में बिठाया गया

- इफिसियों 5:7–14, *पहिले तो तुम अन्धकार थे,* परन्तु अब *प्रभु में ज्योति हो* अतः *ज्योति कि संतान* के सदृश चलो अन्धकार के काम; *"हे सोने वाले,* जाग और *मृतकों* में से जी उठ, तो मसीह कि ज्योति तुम पर *चमकेगी।"*

- कुलुस्सियों 1:12–13, जिसने हमें *योग्य* बनाया है कि *ज्योति* में पवित्र लोगों के साथ उत्तराधिकार में सहभागी हों। उसने तो हमें *अन्धकार के साम्राज्य* से छुडा कर अपने *प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया है।*
- 1 थेस्सलुनीकियों 5:1–11, तुम *अन्धकार में नहीं हो;* तुम सब *ज्योति कि संतान* और दिन कि संतान हो। हम न तो *रात्रि के* और न ही *अन्धकार के* है परन्तु इसलिए कि हम दिन के है तो आओ हम सतर्क रहें।
- रोमियों 13:11–14, "तुम्हारे लिए नींद से जाग उठने कि घड़ी आ पहुंची है। दिन निकलने पर है अतः हम अन्धकार के कार्यों को त्याग कर ज्योति के शस्त्र धारण करें। हम सीधी चाल चलें जैसे दिन में।
- 1 यूहन्ना 2:7–11, क्योंकि अन्धकार मिटता जा रहा है और *सत्य ज्योति चमक* रही है; "ज्योति में" बनाम "अन्धकार में" "क्योंकि अन्धकार ने उसकी आँखे बंद कर दी है!"
- प्रेरितों के काम 26:18, कि वे *अन्धकार से ज्योति* की ओर तथा *शैतान के राज्य से परमेश्वर की ओर फिरें।*
- 1 पतरस 2:9, जिसने तुम्हे अन्धकार से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है। तुलना करें, मत्ती 4:16, 5:14–16; लुका 7:79! 11:33–36, 16:8, 22:53, यूहन्ना 1:5 ("अन्धकार"=मनुष्य!), 3:19–21, 8:12, 12:35–36, 12:46, 2 कुरिन्थियों 4:1–6, 6:14; 1 युहन्ना 1:5–7।

11. परमेश्वर के दास / गुलाम – अ) हमें पाप के दासत्व से छुडाया गया, और ब) हम धार्मिकता के गुलाम बन गए

- रोमियों 6:6–7, *अब पाप के दास नहीं।*
- रोमियों 6:14, *पाप तुम पर प्रभुता न करें।*
- रोमियों 6:16–23, *हम पाप के दास थे और तुम पाप से छुडाये जाकर धार्मिकता के दास हो गए हो, पाप से छुडाये जाकर परमेश्वर के दास!*
- यूहन्ना 8:31–36 *पाप का दास; पाप का दास सर्वदा घर में नहीं रहता पर वास्तव में छुड़ाया हुआ ।*
- *रोमियों 7 के उचित भावार्थ के लिए आशय पर ध्यान दे*

पुराने मनुष्यत्व की मृत्यु के बाद और नए मनुष्यत्व के पुनरुत्थित होने पर हम :

- पाप के लिए मरे हुए और परमेश्वर के लिए जीवित, रोमियों 6:1–14; 1 पतरस 2:24 (तुलना 1 पतरस 4:1–2)।
- व्यवस्था के प्रति मृतक परन्तु परमेश्वर के लिए जीवित, रोमियों 7:4–6; गलातियों 2:19; कुलुस्सियों 2:20–22; गलातियों 6:12–15।
- स्वंय के प्रति मृतक पर परमेश्वर के लिये जीवित,
- 2 कुरिन्थियों 5:15 (तुलना पद 14–17)।
- संसार के लिए मृतक (व्यवस्था और पाप के क्षेत्र से) और परमेश्वर के लिए जीवित।
  - कुलुस्सियों 2:20, (व्यवस्था का क्षेत्र संसार; देखें पद 16–17, 20:23)।
  - कुलुस्सियों 3:3, (पाप का क्षेत्र संसार; देखें पद 2, 5...)।
  - गलातियों 6:14, (व्यवस्था का क्षेत्र संसार; देखें पद 12,15, और 4:3)।

जब हम विश्वास करते है (उदाहरण के लिए रोमियों 6:11; की सच्चाई पर धर्मी ठहराए जाते है) हम नयी सृष्टि बन जाते है, स्वर्गीय स्थानों में जिवीत, तब हमारा मन अंश अंश में नया होता जाता है (रोमियों 12:2.; इफिसियों 4:23; कुलुस्सियों 1:9), और फिर हम स्वर्गीय दृष्टि से देखने, सोचने और कार्य करने के लिए अधिकाधीक समर्थ बनाए जाते है।

- अब जबकि "हम में मसीह का मन है"..... (1 कुरिन्थियों 2:16.... रोमियों 8:6....) इसलिए अब हम तैयार होते है कि मसीह का मन हम पर प्रभुता "करे" फिलिप्पियों 2:5.... 1 पतरस 4:1–2...)।
- अब जबकि हम क्रूस पर चढाए गए है इसलिए अब हम विश्वास के द्वारा इस लायक बन गए है कि "खुद का इंकार कर के क्रूस उठाए....." लुका 9:23 – *सचमुच में न केवल स्वधार्मिकता से इंकार बल्कि अपने आप से भी इंकार।*
- जब हम पवित्र आत्मा में जीते है, तब उसके द्वारा चलाये भी जाते है, गलातियों 5:25 की तुलना करें कुलुस्सियों 3:7।
- पर जब पुराना मनुष्यत्व उतारा जा चुका और तब नया मनुष्यत्व पहिनाया गया.. .. कुलुस्सियों 3:9–10; हमें आह्वान किया गया है कि "पुराने मनुष्यत्व को उतार कर" जीवन जिएं (उ.दा. उसके कार्यों सहित), इफिसियों 4:22; "क्रोध को दूर कर

के... "तरस/दया का हृदय धारण करें... कुलुस्सियों 3:8, 12, "और ज्योति के शस्त्र को धारण करें" रोमियों 13:12; इफिसियों 6:10–18; 1 थेस्सलुनीकियों 5:8।

- ध्यान दे – इफिसियों 4:22, 24..... "पुराने मनुष्यत्व को उतार डालो.... और नए मनुष्यत्व को पहिन लो... (कुलुस्सियों 3:9–10)।
- "जब हम ने पहिले से ही मसीह को पहिन लिया है" (गलातियों 3:27) इसलिए अब हम मसीह को धारण करने समर्थ बन गए है (रोमियों 13:14)।
- अब जबकि हम ज्योति की संतान है तो ज्योति कि नाई चलें भी (इफिसियों 5:7–10; 1 थेस्सलुनीकियों 5:4–10)।
- अब जबकि हम धार्मिकता के दास है तो पाप हम पर प्रभुता न करने पाए पर अब हम अपने अंगों को धार्मिकता के दास होने के लिए समर्पित कर दे (रोमियों 6:12, 19)।
- और तुलना करें याकूब 3:10–12; यशायाह 52:1–2; यशायाह 60:1–5; नीतिवचन 31:4 इत्यादि।

शब्दों का सारांश

- "पुराना मनुष्यत्व" : हमारा पुराना स्वाभाव, जो आदम में है, हमारा नया जन्म न पाया हुआ स्वाभाव।
- "नया मनुष्यत्व" : जो मसीह यीशु में है, नई सृष्टि, मसीह में हमारे सच्चे मसीही होने की पहिचान।
- "पाप का शरीर" : हमारी "देह", हमारी दासत्व की देह, वो क्षेत्र जहां पाप अभी भी प्रभुता करता है। .....तुलना करे रोमियों 6:12, 13, 19; रोमियों 7:5, 14, 18, 23, 24, 25; रोमियों 8:3, 10–13; (ध्यान दे : पाप = 'शरीर के काम) रोमियों 12:1–2; कुलुस्सियों 3:5; (ध्यान दे वचन 5, अपनी पार्थिव देह के अंगों को मृतक समझों); गलातियों 5:19।
- "क्षेत्र" : ऐसा भाग या परिसर जिसमें कोई शासन करें या विजय पाए; जैसे की राज्य (कुलुस्सियों 1:13ब)। इसके अलावा देखें ''साम्राज्य'' (कुलुस्सियों 1:13अ); और ''राज्य'' (प्रेरितों के काम 26:18) अधिकार, कानूनी क्षेत्र।

परिशिष्ट–ब

''पाप नहीं कर सकते''

यूहन्ना, हमें 1 यूहन्ना 3:4–9 में बताता है कि मसीही जन पाप ''नहीं करते'' और ''नहीं कर सकते'' हैं। ऐसे कथनों से उसका क्या तात्पर्य है? इस प्रश्न के अनगिनत उत्तर, सदियों से दिये जा चुके हैं, परंतु इनमें से केवल दो उत्तरों पर हम विचार करेंगे।

1. इन पदों की एक प्रचलित व्याख्या यह है कि *मसीही जन का नया स्वभाव पाप नहीं कर सकता।* ''परमेश्वर का बीज'' (जो सिद्ध है) मसीही जन के भीतर ''बना'' रहता है, और यहां तक कि यह कभी *पाप का केवल एक कार्य ही क्यों न हो,* उसे करने की इच्छा नहीं रखता और न ऐसा कोई कार्य करता है। इस दृष्टिकोण में जबकि काफी सच्चाई है, तौभी यह भयंकर आपत्तियों का सामना करता है।

सबसे पहले तो, यूहन्ना यह नहीं कहता कि मसीही जन का नया स्वभाव पाप नहीं कर सकता; वह कहता है कि मसीही जन *स्वयं* पाप नहीं कर सकताः ''परमेश्वर का बीज उस में बना रहता हैः *और वह पाप कर ही नहीं सकता,* क्योंकि परमेश्वर से जन्मा है'' (1 यूहन्ना 3:9)। ''वह'' जो ''पाप नहीं कर सकता'' स्पष्टतः मसीही जन *एक संपूर्ण व्यक्ति के रूप में* – वही व्यक्ति जिसके लिये पद के अंतिम भाग में कहा गया है कि वह ''परमेश्वर से जन्मा'' है।

दूसरे स्थान पर, यह प्रस्ताव कि मसीही जन का ''नया स्वभाव'' पाप नहीं करता, यथार्थ में एक अर्थहीन कथन है। केवल *एक व्यक्ति* पाप करने में समर्थ है या नहीं है; एक गूढ़ स्वभाव बिल्कुल भी इच्छा नहीं कर सकता अथवा ऐसा कार्य कर सकता है। जैसा हमने अध्याय नौ में देखा है, एक ''स्वभाव'' जो हमारे ''भीतर'' है, उसमें ऐसा कुछ

नहीं है, जो हमे हमारे व्यक्तिमत्व से अलग करता है; हमारी अंतरतम अवस्था में *हम वास्तव में जैसे हैं* यह उसका वर्णन है।

तीसरे स्थान पर, 'पाप करना'' पद 7–8 में उल्लेखित ''धर्म के कार्य करना'' से विषम दिखाई देता है। निश्चित यूहन्ना यहां, धार्मिकता के *किसी एक कार्य* पर नहीं परंतु धार्मिकता के *व्यवहारिक आचरण* पर विचार कर रहा है। इसलिये, उसी रीति से, जब वह इस अंश में मसीहियों द्वारा ''पाप करने'' को असंभव कहता है, तो अवश्य उसके विचार में, पाप का कोई एक कार्य नहीं, परंतु पाप को *व्यवहार में लाना* रहा होगा।

चौथे स्थान पर, यूहन्ना यह प्रगट करने के लिये चिंतित है कि मसीहियों का *वास्तविक चाल चलन* पुर्नजन्म नहीं पाये हुए लोगों के चाल चलन से ठीक विपरीत होता है। *वास्तव में जो पाप नहीं करते हैं,* वह उन मसीहियों के लिये बातें कर रहा है, न कि उन मसीहियों के लिये कहता है ''जो पाप करते और उससे घृणा करते'' अथवा वे मसीही जो ''पाप करते, परंतु उनके नये स्वभाव में पाप नहीं करते।'' ऐसी शिक्षा, का लाभ ठीक वे विधर्मी उठा सकते हैं जिनका विरोध यूहन्ना कर रहा है।

2. **इन पदों का सबसे उत्तम स्पष्टीकरण यह है कि ''पाप'' जो एक विश्वासी ''नहीं करता'' और ''कर नहीं सकता'' *आदतन* या *निरंतर* बना रहने वाला पाप है।** यूहन्ना अक्षरशः कह रहा है कि मसीही जन ''पाप नहीं करता'' है। अर्थात, मसीही जन पाप को ''*व्यवहार में*'' नहीं लाता। इसके विपरीत, मसीही जन ''धार्मिकता का अभ्यास'' करता हैः ''हे बालकों, किसी के भरमाने में न आना; जो धर्म के काम करता है, वही उस की नाई धर्मी है।'' 1 यूहन्ना 3:7

मसीही जन क्यों ''पाप का आचरण'' करने में स्वयं को अयोग्य पाता है? पद 9 में इसका उत्तर दिया हुआ हैः ''जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप नहीं करता; क्योंकि उसका बीज उस में बना रहता हैः और वह पाप कर ही नहीं सकता, क्योंकि परमेश्वर से जन्मा है।'' सभी मसीहियों में उनकी आवश्यक पहचान के रूप में एक नया स्वभाव (परमेश्वर का बीज) होता है। यह नया स्वभाव (जो सिद्ध है), सब बुराईयों के विरूद्ध प्रभाव डालता है, विश्वासी को प्रभावोत्कारी ढंग से पाप में जीवन बिताने से बचाता है। इसके विपरीत, धार्मिकता उसके जीवन का मुख्य लक्षण होता है। यद्यपि, मसीही का चाल चलन आसान नहीं है, क्योंकि उसे इस संपूर्ण जीवनकाल में, अभी भी, देह में संघर्षरत बने रहना है। जब उसकी यह मृत देह छुटकारा पायेगी, तब वह जो नया

जीवन उसमें पहले से उपस्थित है, पूर्णता से प्रगट होगा और उसका चालचलन उसके नवीकृत हृदय की इच्छाओं से पूरी तरह से मेल खायेगा।

यूहन्ना के शब्दों की यह एकमात्र समझ है जो वर्तमान काल की प्रयुक्त क्रियाओं के उपर पूरा जोर देती है और 1 यूहन्ना 3:4–9 के श्रेष्ठ आधुनिक अनुवादों में प्रतिबिंबित होती है।

> *प्रत्येक जो पाप करता है वह व्यवस्था का उल्लंघन करता है; क्योंकि पाप व्यवस्था का उल्लंघन है। तुम जानते हो कि वह इसलिए प्रकट हूआ कि पापों को हर ले जाए; और उसमें कोई भी पाप नहीं। जो उसमें बना रहता है, वह पाप नहीं करता; जो पाप करता है, उसने न तो उसे देखा है और न ही उसे जानता है। बच्चो, कोई तुम्हे धोखा न दे। जो धर्मिकता का आचारण करता है, वह धर्मी है, ठीक वैसा ही जैसा वह धर्मी है। जो पाप करता है वह शैतान से हैं, क्योंकि शैतान आरम्भ से ही पाप करता आया है। परमेश्वर का पुत्र इस अभिप्राय से प्रकट हुआ कि वह शैतान के कार्य को नष्ट करे। जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता, क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है; और वह पाप नही कर सकता, क्योंकि वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है। 1 यूहन्ना 3:4–9*

परिशिष्ट–क

रोमियों 7

रोमियों 7 से जुड़े विवाद से निपटने के प्रयास में पूरी एक पुस्तक लिखी जा सकती है। इसकी विवेचना के लिये केवल कुछ दिशा निर्देशों का सुझाव यहां दिया जा सकता है:

1. **रोमियों 6 अध्याय की विषय वस्तु को निरंतर और विस्तारित करते हुये, रोमियों 7 अध्याय सीधे उसी में से निकला है।** रोमियों 6 के अनुसार, मसीह के साथ संयुक्त होने के गुण के कारण मसीही जन ''पाप के लिये मर चुके हैं''[1] और इसीलिये इससे ''स्वतंत्र''[2] हैं, ताकि पाप अब और अधिक उनपर ''अधिकार''[3] नहीं रख सके। पाप के प्रति इस मृत्यु का परिणाम परमेश्वर की ''सेवा''[4] करना है जो पवित्रीकृत किये जाने तक परमेश्वर के लिये "फल"[5] लाती है। पौलुस इस आनंदमय अभिभूती को रोमियों 7 में फिर दोहराता है : कि मसीह के साथ संयुक्त होने के गुण के कारण मसीही जन ''व्यवस्था के लिये मर चुके हैं''[6] और इसीलिये अब वे उससे ''स्वतंत्र'' हैं[7], और अब वे व्यवस्था के लिये मृत हो चुके है।[8] और अब व्यवस्था के प्रति इस मृत्यु का परिणाम परमेश्वर की ''सेवा'' करना है[9] जो पवित्रीकृत किये जाने तक परमेश्वर के लिये "फल" लाती है।[10] संक्षिप्त में, पौलुस रोमियों 6 में ''उड़ान'' भर रहा है और वह यह उड़ान रोमियों 7 में भी ''जारी'' रखता है!

रोमियों 7 का वास्तविक उद्देश्य पौलुस द्वारा अध्याय 6:14 के कथन की व्याख्या करना और उसे विस्तार देना है: ''और तुम पर पाप की प्रभुता नहीं होगी क्योंकि तुम पाप के अधीन नहीं परंतु अनुग्रह के अधीन हो।'' इस पद के अनुसार, पाप के नियंत्रण से हमारा छुटकारा सीधे इस तथ्य का परिणाम है कि हम अब और अधिक ''व्यवस्था के

अधीन'' नहीं हैं। पहिले प्रश्न का उत्तर जो दिया जाना है, ''यह कैसे हुआ कि मसीही जन अब और अधिक ''व्यवस्था के अधीन'' नहीं हैं? पौलुस इस प्रश्न का उत्तर 7:1–4 में देता है। मसीही जन व्यवस्था के क्षेत्र से बाहर आ चुके हैं, उनके मसीह के साथ संयुक्त होने के गुण के कारण वे व्यवस्था के प्रति मृतक हो चुके हैं। दूसरे प्रश्न का उत्तर जो दिया जाना है, ''पाप के राज्य से छुटकारा पाने के लिये व्यवस्था से हमारा स्वतंत्र होना क्यों *अनिवार्य* है?'' या, इसके विपरीत, ''पाप के राज्य से स्वतंत्र हो पाना उन सब के लिये *असंभव* क्यों है जो अभी भी व्यवस्था के अधीन हैं?'' पौलुस इस प्रश्न का उत्तर 7:5–25 में देता है। वे सब जो अभी भी ''व्यवस्था के अधीन'' अभी ''शारीरिक'' हैं (पद 5)। परंतु व्यवस्था, उनके उपर जो शारीरिक हैं, पाप के अधिकार को वास्तव में गतिमान एवं *मजबूत* बनाती है, इस तरह उन्हें बंधन और मृत्यु की अवस्था में पड़े रहने देती है। (पद 5, 7–25)।

2. यह जानना नितांत आवश्यक है कि पौलुस दो और केवल दो समूहों के संदर्भ में विचार करता है- वे जो ''व्यवस्था के अधीन'' (''शारीरिक'') हैं, और वे जो ''अनुग्रह के अधीन'' (''आत्मिक'') हैं। (पृष्ठ 96–98) रोमियों 7:7–25 में पौलुस की चर्चा के अंर्तगत, इन दो समूहों के लक्षण, दोनों (7:5–6) के *पहले* और (8:1–4) के *बाद* में सारगर्भित किये जा सकते हैं। इसका अर्थ है कि पद 14–25 में, पौलुस उस ''शारीरिक मसीही जन'' का वर्णन *नहीं* कर रहा है, जो अभी तक ''रोमियों 8 में नहीं पहुंचा'' है जैसे रोमियों 7 के ''गहराई वाले जीवन'' का दृष्टिकोण हमें बताता है। *सभी* मसीही जन रोमियों 8 के ''अंर्तगत'' पाये जाते हैं, जैसे सभी मसीही जन रोमियों 6 के ''अंर्तगत'' और रोमियों 7:6 के ''अंर्तगत'' हैं।

3. पौलुस ने विस्तार से पहिले ही रोमियों 6 और रोमियों 7: 1–6 में प्रत्येक मसीही जन की अवस्था का वर्णन कर दिया है। जब हम रोमियों 7 के अंतिम आधे भाग में पहुंचते हैं, हम इस वर्णन की उपेक्षा नहीं कर सकते हैं। रोमियों 6 और रोमियों 7: 1–6 के अनुसार, सभी मसीही जन ''पाप से मुक्त'' हो चुके हैं और ''धार्मिकता के दास'' हो गये हैं।''[11] मसीहियों पर ''पाप प्रभुत्व नहीं करेगा'' क्योंकि वे ''व्यवस्था के अधीन नहीं'' हैं परंतु अनुग्रह के अधीन हैं।''[12] मसीही जन ''उस दूसरे के हो गये है, जो मरे हुओं में से जी उठा ताकि वे परमेश्वर के लिये फल लाएं।''[13] वे ''मरे हुओं में से जी उठे हैं।''[14] वे अब ''शारीरिक''[15] नहीं रहे। वे ''लेख की पुरानी रीति पर नहीं परंतु आत्मा की नई रीति पर सेवा करते हैं।''[16]

यह दृष्टिकोण कि रोमियों 7:14–25 ''मसीही जन के उत्तम स्वरूप और यहां तक कि लेखन के समय पौलुस का भी'' का वर्णन है, इस तरह सीधे, पौलुस ने जो अभी तक कहा है, उसका विरोध करता हैं। हम कैसे रोमियों 6 और 7:1–6 पढ़ सकते हैं और अभी भी दावे के साथ कह सकते हैं कि सभी मसीही जन वास्तव में ''शारीरिक हैं, और पाप के हाथ बिके हुए हैं!''[17]

रोमियों 7 का यह दृष्टिकोण अत्यधिक महत्वपूर्ण है जिसने मसीही जीवन में ''अभागे मनुष्य'' की धारणा को जन्म दिया, जहां ''अभागापन'' और आत्मिकता लगभग समान हैं, और जितना अधिक पवित्र हम होते जाते हैं, उतने अधिक ''अभागे'' हम कहलाते हैं। एक लेखक के शब्दों में: ''यह विलाप 'मैं कितना अभागा मनुष्य हूं', मसीही जन का सामान्य अनुभव प्रगट करता है, और कोई भी मसीही जन जो इस तरह का विलाप नहीं करता, वह आत्मिक तौर से असामान्य व अस्वस्थ दशा में है। वह मनुष्य जिसके मुख से प्रतिदिन, ऐसी पुकार नहीं निकालती या तो मसीह के साथ सहभागिता से असंबंद्ध है, अथवा धर्मशास्त्र की शिक्षा से इतना अनजान है, या अपनी वास्तविक दशा के बारे में इतना धोखे में है, कि वह अपने स्वयं के हृदय की भ्रष्टता और उसके स्वयं के जीवन की दयनीय विफलता को नहीं जानता।''[18]

''वह जन जो सचमुच मसीह के साथ सहभागिता में है, इस विलाप को उच्चारित..... करेगा..... प्रतिदिन और हर घंटे।''[19] यह सच है कि इस चिकने चुपड़े ''सरल–विश्वासवाद'' एवं उथले प्रायश्चित के समय में, बड़ी संख्या में मसीह को स्वीकार करने वाले ''मसीहियों'' को अविलंब उनकी आंतरिक दुष्टता और भ्रष्टता का प्रकाशन मिलने की जरूरत है। कईयों के मामले में, यह गहन आक्रांदन और ईमानदार परिवर्तन के लिये अग्रसर कर सकता है।[20] परंतु परमेश्वर की कोई भी सच्ची संतान जो आत्मिक यात्रा के पथ पर बहुत दूर तक चल चुकी हो, तो वह, मसीह की परिवर्तनीय सामर्थ के अतिरिक्त, पहिले से ही थोड़ा अपने अभागेपन और दुष्टता के बारे में जानती है। यह प्रार्थना करने के बजाय कि परमेश्वर हमें हमारी (स्वयं) की भ्रष्टता और अयोग्यता का ऐसा दृश्य प्रदान करे कि (हम) सचमुच में उसके समक्ष गिड़गिड़ाये,''[21] क्या यह और अधिक धर्मशास्त्र संगत नहीं होगा कि हम परमेश्वर से ऐसी दृष्टि मांगे कि *मसीह का पुनरूत्थित जीवन हमारे भीतर* [22] प्रगट हो और *हमारा नया स्वभाव उसमें बना रहे* [23] ताकि हम स्वर्गिक वस्तुओं में उड़ान भर सके और जीवन की नवीनता में आनंदपूर्वक उसकी सेवा कर सके?

कुछ धर्मविज्ञानियों ने रोमियों 7 में इस ''अभागे मसीही जन'' के दृष्टिकोण से बच निकलने का प्रयास, यह कहते हुए किया कि यद्यपि पौलुस यहां विश्वासी के रूप में उसके स्वयं के वर्तमान अनुभव के बारे में कह रहा है, वह मात्र इस तथ्य का वर्णन कर रहा है कि ''कोई मसीही इतना पवित्र नहीं है जितना वह होना चाहता है।'' इस मतानुसार, रोमियों 7 केवल यह सिखाता है कि ''मसीही जन की पहुंच उसकी पकड़ से हमेशा आगे निकल जाती है।'' और इस पूरे जीवनकाल मे मसीही जन ''सिद्धता तक नहीं पहुंच पाता है।'' ये सभी कथन निसंदेह सच हैं, परंतु वे विफलता और कष्ट के प्रति उस हद तक न्याय नहीं करते हैं जैसा इस वाक्य में दिखाई देता है। पौलुस यहां ''भला करने के लिये'' (उसके स्वयं के शब्दों में) ''अभागेपन''[24] की अवस्था, ''बंधन,''[25] की अवस्था और *अयोग्यता*[26] की अवस्था का स्पष्टता से वर्णन कर रहा है। दूसरे शब्दों में, रोमियों 7 का मनुष्य, जो न केवल पाप से संघर्षरत है, परंतु उससे पूर्ण रूप से पराजित भी हो गया है, पौलुस द्वारा रोमियों 6 और रोमियों 7:1–6 में वर्णित सभी सच्चे मसीहियों से सरासर विरोधाभास में है।

4. **रोमियों 6 और 7 चार प्रश्नों व उनके उत्तरों के आस पास बुना हुआ है।** रोमियों 5 के अंत में, पौलुस दो चौंकानेवाले वक्तव्य देता है, जिनके बचाव व स्पष्टीकरण की आवश्यकता है। पहिला वक्तव्य है कि ''व्यवस्था बीच में आ गई कि अपराध बहुत हो,'' और दूसरा वक्तव्य है कि ''जहां पाप बहुत हुआ, वहां अनुग्रह उस से भी कहीं अधिक हुआ'' (पद 20)। पौलुस इन वक्तव्यों को गलत समझे जाने और विकृत किये जाने की आशा करता है, अतः वह उनका स्पष्टीकरण व बचाव करने के लिये अध्याय छः व सात में तैयार रहता है। वह ऐसा चार प्रश्नों और तदनुसार उनके उत्तरों के लिये करता है (6:1; 6:15; 7:7; 7:13)। प्रश्न–उत्तर के भागों में हर भाग एक बहुत विशेष स्वरूप लिये हुए है। पहिले स्थान पर, पौलुस पूर्वानुमानित गलतफहमी या उसकी स्थिति के उपर सवाल खड़ा करता है। तब वह दृढ़ता से इंकार करता है (''कदापि नहीं!'') एवं गलतफहमी का उत्तर एक संक्षेप सारांश के द्वारा देता है। इस संक्षिप्त उत्तर का उसके बाद के पदों में स्पष्टीकरण और व्याख्या दी गयी है। यह स्वरूप पूरे रोमियों 6–7 में एक सा पाया जाता हैः

रोमियों 6:1 – प्रश्नः ''सो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें, कि अनुग्रह बहुत हो?'' दृढ़ इंकारः ''कदापि नहीं!'' संक्षिप्त उत्तरः ''हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को उस में क्योंकर जीवन बिताएं? संक्षिप्त उत्तर की संपूर्ण व्याख्याः पद 3–14।

रोमियों 6:15 – प्रश्नः ''तो क्या हुआ, क्या हम इसलिये पाप करें, कि हम व्यवस्था के अधीन नहीं वरन अनुग्रह के अधीन हैं?''

दृढ़ इंकारः ''कदापि नहीं!'' संक्षिप्त उत्तरः ''क्या तुम नहीं जानते कि जिस की आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आप को दासों की नाईं सौंप देते हो, उसी के दास हो और जिस की मानते हो.....?'' संक्षिप्त उत्तर की संपूर्ण व्याख्याः पद 17–23।

रोमियों 7:7 – प्रश्नः ''तो हम क्या कहें? क्या व्यवस्था पाप है?'' दृढ़ इंकारः ''कदापि नहीं!'' संक्षिप्त उत्तरः ''वरन बिना व्यवस्था के मैं पाप को नहीं पहिचानता, व्यवस्था यदि न कहती, कि 'लालच मत कर तो मैं लालच को न जानता।''' संक्षिप्त उत्तर की संपूर्ण व्याख्याः पद 8–12।

रोमियों 7:13 – प्रश्नः ''तो क्या वह अच्छी थी, मेरे लिये मृत्यु ठहरी?'' दृढ़ इंकारः ''कदापि नहीं!'' संक्षिप्त उत्तरः ''परंतु पाप उस अच्छी वस्तु के द्वारा मेरे लिये मृत्यु का उत्पन्न करने वाला हुआ कि उसका पाप होना प्रगट हो, और आज्ञा के द्वारा पाप बहुत ही पापमय ठहरे।'' संक्षिप्त उत्तर की संपूर्ण व्याख्याः पद 14–25।

यह वचन 14–25 का समायोजन है! पद 14 एक नवीन और पूर्णतः असंबंध विषय का प्रारंभ नहीं करता, जैसा कि कुछ मान चुके हैं। जिस विषय को इस भाग में लिया गया है वह ''अपरिपक्व मसीही जन की आत्मा में चलने की विफलता'' अथवा ''शेष रहे पाप से सिद्ध मसीही जन का निरंतर संघर्ष'' से संबंधित नहीं है। बल्कि, विषय यहां इस प्रकार है ''जो शारीरिक है उनमें उसके प्रभाव के उपरांत, व्यवस्था भली है।'' इस संबंध में, यह अति महत्वपूर्ण है कि पद 14 ''क्योंकि'' शब्द से प्रारंभ होता है और तुरंत (दुबारा!) पद 15 में ''क्योंकि'' शब्द का प्रयोग करता है।

5. रोमियों 7:14–25 पौलुस द्वारा पद 7–13 में की गयी चर्चा ''मनुष्य जिसके पास आज्ञा पहुंची'' का *परिणाम* और *निरंतरता* है। पद 5 में पौलुस उन लोगों की अवस्था का वर्णन करता है जो ''शारीरिक हैं'' और ''व्यवस्था के अधीन'' हैं : ''क्योंकि जब हम *शारीरिक* थे, तो *पापों की* अभिलाषायें जो *व्यवस्था* के द्वारा थीं, मृत्यु का फल उत्पन्न करने के लिये *हमारे अंगों में* काम करती थी।''

मुख्य शब्द यहां ''व्यवस्था'' ''पाप'' और ''शारीरिक'' हैं। *पद 5 के ये तीनों शब्द संपूर्ण अध्याय में पौलुस की चर्चा का केंद्र गठित करेंगे।*

पद 7–12 को, पौलुस, पद 5 में दिये गये उसके कथन को समझाने से आरंभ करता है, ऐसा वह परिवर्तन से पूर्व उसके स्वयं के अनुभव का संदर्भ देते हुए करता है।

एक समय था जब पौलुस पूर्णतः आत्मसंतुष्टी की अवस्था में था: ''मैं तो जीवित था'' (पद 9)। उसने सोचा कि वह व्यवस्था का बहुत अच्छी रीति से पालन कर रहा था: ''व्यवस्था की धार्मिकता के विषय में यदि कहो तो निर्दोष था।''[27]

परंतु पौलुस के जीवन में एक बहुत बड़ा मोड़ आया। परमेश्वर की आत्मा के कार्य करने के द्वारा, उस तक ''आज्ञा पहुंची।'' उसने यह अनुभव करना आरंभ कर दिया कि व्यवस्था की आवश्यकतायें सचमुच में कितनी गहन और मांग करने वाली हैं और उस के लिये यह कितना असंभव था कि उन आवश्यकताओं को पूर्ण करता। ''पाप जीवित हो गया'' और पौलुस उसकी पापमय दशा के भयानक बोध के कारण ''मर गया''। (यह दशा कितने लंबे समय तक चली, हम नहीं जानते, परंतु हम यह जानते हैं कि इसके पहले कि दमिश्क की सड़क पर पुनरूत्थित मसीह से उसकी मुलाकात हुई, पौलुस के लिये पहिले से ही ''पैने पर लात मारना''[28] ''कठिन'' था।) व्यवस्था, जिसने *जीवन* की प्रतिज्ञा की थी, इस तरह पौलुस के लिये *मृत्यु* के परिणाम के रूप में सामने आयी, उसके स्वयं के किसी दोष के कारण नहीं, परंतु सीधे पाप के दुराचरण के कारण।

अपनी चर्चा में इस बिंदु तक आते आते (पद 13) पौलुस ने केवल *''व्यवस्था''* और *''पाप''* के मध्य संबंध का वर्णन किया है, यह प्रगट करते हुए कि व्यवस्था यथार्थ में कैसे पाप को गतिशील बनाती है और मृत्यु तक लेकर चलती है। परंतु उसने अभी तक यह स्पष्ट नहीं किया है कि *क्यों* व्यवस्था को ऐसे परिणाम उत्पन्न करना चाहिये। इसे वह सिर्फ *''शारीरिक''* के उपर चर्चा करने के द्वारा प्रगट कर सकता है।

यही रोमियों 7:14–25 का समायोजन है! पद 14 ''क्योंकि'' शब्द से प्रारंभ होता है और पौलुस द्वारा ''व्यवस्था, पाप और शारीरिक'' के उपर चर्चा को *जारी रखता* और *बढ़ोतरी करता* है, इसके अंर्तगत वह वर्तमान काल में पाप के राज्य का *स्थान* – ''शारीरिक'' का नाटकीय ढंग से वर्णन करता है: ''*क्योंकि व्यवस्था तो आत्मिक है; परंतु मैं शारीरिक* और पाप के हाथ बिका हुआ हूं।'' (ध्यान दीजिये कि वर्तमान काल की अवस्थांतर बिल्कुल सहज रूप से होती है, चूंकि पौलुस यह नहीं कह सकता था, ''हम जानते हैं कि व्यवस्था आत्मिक थी।'') पौलुस तब, पौलुस तब ''शारीरिक'' द्वारा अनुभव किये गये ''पाप के बंधन'' का प्रत्यक्ष विवरण वर्तमान काल में, अध्याय के अंत तक जारी रखता है। वह ऐसा, मसीही बन चुके व्यक्ति के नजरिये से करता है एवं इसके पहिले उस व्यक्ति के जीवन में जो द्वंद चल रहा था उसकी प्रकृति को स्पष्ट देख सकता है।

इस कारण पौलुस जो शब्दावली इन पदों में प्रयुक्त करता है, वह अधिकाधिक मसीही प्रभाव को दर्शाती है, यद्यपि यह उसके मसीही बनने के पूर्व की दशा का भी वर्णन है।

पौलुस के नियंत्रित करने वाले कथन को स्मरण रखियेः ''क्योंकि जब हम *शारीरिक* थे, तो पापों की अभिलाषायें जो व्यवस्था के द्वारा थीं, मृत्यु का फल उत्पन्न करने के लिये *हमारे अंगों में काम करती* थीं।'' ''शारीरिक'' ''पाप'' से नियंत्रित होता है, और *व्यवस्था की उपस्थिति में* देह की पापमय अभिलाषायें हमेशा ''मृत्यु'' पर ही जाकर समाप्त होगीं। यह तथ्य कि पौलुस इस पूरे भाग में ''शारीरिक'' पर जोर देता है, उसके द्वारा प्रयुक्त की जाने वाली शब्दावली से स्पष्ट हैः ''शारीरिक और पाप के हाथ बिका हुआ,''[29] ''मेरे अंगों में दूसरे प्रकार की व्यवस्था,''[30] और ''मेरे अंगों में पाप की व्यवस्था।''[31] ''अंगों में पाप की उपस्थिति'' का बंधन उस हताशापूर्ण पुकार की ओर ले चलता है, ''मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा (उपांत : ''मृत्यु की इस देह से'')?[32]।

इस पुकार पर पौलुस पद 25 में उत्तर देता है, "हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद हो!" लेकिन और अधिक रूप में रोमियों 8:1–4 में वह कहता है, "अतः अब उन पर जो मसीह यीशु में है, दण्ड की अज्ञा नहीं। *क्योंकि जीवन के आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में तुम्हें पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया है।* क्योंकि जो काम *व्यवस्था, शरीर के द्वारा दुर्बल होते हुए, न कर सकी,* उस काम को परमेश्वर ने किया.... "जिससे कि व्यवस्था की मांग हम में पुरी हो सके जो *शरीर के अनुसार नहीं, परन्तु आत्मा के अनुसार चलते है।*"

यहां पौलुस द्वारा दिये गये सारांश पर ध्यान दीजिए, जो विस्तार से उसने 7:14–25 में कहा हैः ''..... जो काम *व्यवस्था शरीर के कारण* दुर्बल होकर न कर सकी.....''! उसके द्वारा किये गये मसीहियों के वर्णन पर ध्यान दीजिएः ''क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में *मुझे* पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से *स्वतंत्र कर दिया*..... इसलिये कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, *पूरी की जाए।*'' रोमियों 7 का मनुष्य पुकार उठता है, ''मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?'' मसीही जन उत्तर देता है, ''जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे स्वतंत्र कर *दिया।*''

रोमियों 7 में पौलुस की शिक्षा को इसहाक वाट्स अपने गीत के शीर्षक ''कन्वीक्शन ऑफ सिन बाय दि लॉ, रोमियों 7:8, 9, 14–24'' में सारगर्भित करता हैः

प्रभु, मेरा अंतःकरण कितना सुरक्षित था,
दिल में कोई आशंका न थी!
बिना व्यवस्था में जीवित था,
सोचा मेरे पाप मृत थे।

स्वर्ग की मेरी आशा स्थिर और उजली;
पर, तभी आज्ञा पहुंची
प्रभावकारी सामर्थ और प्रकाश के साथ,
मैं पाता हूं कितना निकम्मा हूं मैं।

पर मेरे दोष छोटे दिखाई देते हैं पहिले इसके
जब मैंने विस्मयाकारी ढंग से देखा
कितना सिद्ध, पवित्र, न्यायी और शुद्ध,
तेरी शाश्वत व्यवस्था थी।

तब मेरी आत्मा ने महसूस किया वो भारी बोझ;
मेरे पाप फिर जीवित हो गये;
मैंने भयावह परमेश्वर को ललकार दिया था,
और मेरी सारी आशा समाप्त हो गई।

मैं एक असहाय बंदी, बिका हुआ
पाप की सामर्थ के हाथोंः
जो भला मैं करना चाहूं मैं नहीं कर सकता,
न मेरे अंतःकरण को साफ रख सकता।

मेरी हर श्वास के साथ पुकार आती है, हे परमेश्वर!
कोई ताकत मुझे बचा ले;
पाप और मृत्यु के जुए को तोड़ दे
और इस तरह गुलाम को छुड़ा ले।

– तीन अंतिम परीक्षण

अंत करते समय, तीन बातों पर ध्यान दिया जाना आवश्यक हैः

1. सतही समानताओं के बावजूद, गलातियों 5:16–25, रोमियों 7 के समानांतर *नहीं* है। रोमियों 7:14–25 उस मनुष्य के संघर्ष और पराजय का वर्णन करता है, जो अभी भी ''शारीरिक'' है और ''व्यवस्था के अधीन'' है। इस मनुष्य की भाषा और विचारों से, पवित्र आत्मा विशेष रूप से अनुपस्थित है। वास्तव में, इस संपूर्ण अंश में पवित्र आत्मा का कहीं भी वर्णन नहीं है।

दूसरी ओर, गलातियों 5:16–25, सच्चे विश्वासी के जीवन में *पवित्र आत्मा* का *शरीर* के साथ होने वाले अवंश्यभावी द्वंद का वर्णन करता है। इस संपूर्ण अंश में विजय की चर्चा सुनाई देती हैः मसीही जन ''व्यवस्था के अधीन नहीं है।''[33] उसने प्रायश्चित व मसीह पर विश्वास रखने के द्वारा, पहिले ही निश्चित तौर से ''शरीर को अपनी लालसाओं और इच्छाओं समेत कूस पर चढ़ा दिया।''[34] उसके जीवन में आत्मा की सामर्थ प्रभावोत्कारी ढंग से उसे शरीर के स्वाभाविक झुकाव का अनुसरण करने से बचाती है – ''जैसा वह चाहता है''[35] वह नहीं कर सकता। चूंकि वह ''आत्मा में'' *रहता है,* वह अब ''आत्मा में *चलने में*''[4] समर्थ है।[36] और जैसे ही वह "आत्मा में चलता है", वह निंश्चित है कि वह ''शरीर की इच्छा को पूरी *नहीं करेगा।*''[37] ये पद ''अभागेपन,'' की अभिव्यक्ति नहीं हैं, परंतु विजय की निश्चयता है!

गलातियों 5:16–25 का वास्तविक समानांतर अंश, रोमियों 8:12–14 है, जहां ''शारीरिक'' और ''आत्मा'' समान रूप में विरोधाभास रखते हैं : ''सो हे भाइयों, हम शरीर के कर्जदार नहीं, ताकि शरीर के अनुसार दिन काटें– क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे, तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे। इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर की आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।'' इन पदों के अनुसार, मसीही शरीर के अनुसार रहने के लिये बाध्य नहीं है। वह पवित्र आत्मा की सामर्थ से ''शरीर की क्रियाओं को मारने में'' समर्थ है। वस्तुतः, वे सब जो सचमुच में ''परमेश्वर के पुत्र'' हैं, उनमें इस तरह ''आत्मा के चलाए चलना'' एक विशेष लक्षण पाया जाता है! ''आत्मा के चलाए चलना'' (रोमियों 8:14) और ''आत्मा के अनुसार चलना'' (रोमियों 8:4; गलातियों 5:16) के मध्य समांनातर पर ध्यान दीजिये।

2. रोमियों 7:7–25 में उल्लेखित मनुष्य कोई अनूठा ''गलियों में भटका हुआ इंसान'' नहीं है, जो आत्मिकता या व्यवस्था की सच्ची आवश्यकता के बारे में नहीं जानता हो। रोमियों 7:7–25 का मनुष्य, वह

मनुष्य है जिस तक ''आज्ञा पहुंच चुकी है।'' वह ऐसे वक्तव्य देता है जो एक विशिष्ट अविश्वासी नहीं देता है। वह, जिस क्लेश की दशा का अनुभव कर रहा है, वह *मसीह के पास आने पर समाप्त होती है:* ''यीशु मसीह हमारे प्रभु में परमेश्वर पिता का धन्यवाद हो!''[38] इससे यह प्रगट है कि यह मनुष्य ''परमेश्वर द्वारा सिखाया'' गया है और ''परमेश्वर से सुन व सीख रहा है।''[39] हर एक जिसने इस तरह ''परमेश्वर से सुना और सीखा हो'' *मसीह के पास आता है।*[40]

3. इसमें कोई संदेह नहीं कि हरेक सच्चे मसीही जन ने कभी कभी यह *महसूस* किया होगा कि वह जैसे रोमियों 7 के ''बीच की अवस्था'' में है। यहां तक कि सच्चा *धर्मी* मनुष्य सात बार गिरता है![41] मसीही जन के अनुभव में ''आत्मा में चलना'' सीखने की प्रक्रिया में कष्टप्रद पराजय सम्मिलित रहती है। पतरस के समान, हमें अक्सर हमारे स्वयं के निश्चय की कड़वी विफलता की अपर्याप्तता से सीखना हैं।[42] फिर भी, हमारे सामने प्रश्न, यह नहीं है, ''मसीही जन अक्सर क्या अनुभव करते हैं?'' परंतु यह कि, ''पौलुस रोमियों 7 में क्या सिखा रहा है?''

(वे जो इस विषय पर आगे पढ़ने के इच्छुक हैं उन्हें इसका संदर्भ दिया जाता है: राबर्ट एल. रेमंड, *ए न्यू सिस्सटेमेटिक थियोलोजी ऑफ दि क्रिश्चियन फेथ,* परिशिष्ठ एफ, 1127–32; मार्टिन लॉयड जोंस, *दि लॉः इट्स फंक्शंस एंड लिमिट्स;* और हर्मन रिडरबोस, *पॉलः ॲन आउटलाईन ऑफ हिज थियोलॉजी,* 126–30)।

परिशिष्ठ–ड

मसीह में सभी आशीषें

परमेश्वर का अनंतकालीन अनुग्रह और उद्देश्य हमें "मसीह यीशु में" प्रदान किया गया है।

- 2 तीमुथियुस 1:9, "जिसने हमारा उद्धार किया, और पवित्र बुलाहट से बुलाया, हमारे कामों के अनुसार नहीं, परन्तु *अपने ही उद्देश्य और अनुग्रह के अनुसार जो मसीह यीशु में अनंतकाल से हम पर हुआ।*"
- इफिसियों 1:4–6, *"उसने हमें जगत कि उत्पत्ति से पूर्व मसीह में चुन लिया* कि हम उसके समक्ष प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। उसने हमें अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार पाहिले से ही अपने लिए यीशु मसीह के द्वारा लेपालक पुत्र होने के लिए ठहराया, कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो जिसे उसने हमें *उस अति प्रिय में सेंतमेंत दिया।*
- इफिसियों 1:9–10, "उसने हमें अपनी इच्छा का रहस्य *अपने भले अभिप्राय के अनुसार जिसे उसने स्वंय निर्धारित किया था,* बताया; ऐसे प्रबन्ध के उद्देश्य से कि समयों के पुरे होने पर वह सब कुछ जो स्वर्ग और पृथ्वी पर है, *मसीह में एकत्रित करे।*"

परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं और उद्देश्य मसीह यीशु में पूर्ण किए गए:

- इफिसियों 3:11, "यह उस अनंत अभिप्राय के अनुसार हुआ जो उसने *यीशु मसीह हमारे प्रभु में पूरा किया।*"

- 2 कुरिन्थियों 1:19, "क्योंकि परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह में, जिसका प्रचार तुम्हारे बिच हमने अर्थात् सिलवानुस, तीमुथियुस तथा मैंने किया, उसमें कभी 'हां' तो कभी 'न' तो नहीं है, *वरन् सदा 'हां' ही 'हां' है।*"
- 2 कुरिन्थियों 1:20, क्योंकि परमेश्वर कि *जितनी भी प्रतिज्ञाएं है यीशु में 'हां' ही 'हां' है।* इसीलिए उसके द्वारा हमारी आमीन भी परमेश्वर की महिमा के लिए होती है।"
- इफिसियों 3:6, "तात्पर्य यह है कि *मसीह यीशु के द्वारा* अब गैरयहूदी भी एक ही देह के अंग और सह–उत्तराधिकारी तथा प्रतिज्ञा के सहभागी हैं।"
- 2 तीमुथियुस 1:1, "पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है, अर्थात् *उस जीवन की प्रतिज्ञा के अनुसार जो मसीह यीशु में है....।*"

परिवर्तन के समय मसीह के साथ एकता हो जाती है।

- 2 कुरिन्थियों 5:17, "इसलिए यदि कोई *मसीह में है* तो वह नई सृष्टि है। पुरानी बातें बीत गई। देखों, नई बातें आ गई हैं।"
- रोमियों 16:7, "मेरे कुटुम्बी अन्द्रनीकुस और युनियास जो मेरे साथ बंदीगृह में थे, जो प्रेरितों में प्रख्यात है और *मुझ से पहिले मसीह में थे,* नमस्कार।"
- 1 पतरस 5:14, "प्रेम के चुम्बन से एक दुसरे को नमस्कार कहो। तुम सब को जो *मसीह में* हो, शान्ति मिले।"
- 1 यूहन्ना 2:5, "परन्तु जो उसके वचन का पालन करता है, उसमें सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हो चूका है। इसी से हम जानते हैं कि हम *उस में* है।"
- 1 यूहन्ना 3:24, "जो *उसकी आज्ञाओं का पालन करता है, वह परमेश्वर में बना रहता है, और वह उसमें।* और इसी से अर्थात् उस आत्मा से जिसे उसने हमें दिया है, हम जानते हैं *कि वह हम में बना रहता है।*
- 1 यूहन्ना 4:13, "इसी से हम जानते हैं *कि हम उसमें बने रहते है और वह हम में,* क्योंकि उसने अपने आत्मा में से हमें दिया है।"
- 1 यूहन्ना 4:15, "जो कोई यह मान लेता है कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र है *तो परमेश्वर उसमें और वह परमेश्वर में बना रहता है।*"
- रोमियों 16:3, "प्रिस्का और अक्विला को *जो मसीह यीशु में मेरे सहकर्मी है, नमस्कार।*"
- रोमियों 16:9, *"मसीह में हमारे सहकर्मी* उरबानुस को तथा मेरे प्रिय इस्तखुस को नमस्कार।"

- 2 कुरिन्थियों 12:2, *"मैं मसीह में एक ऐसे मनुष्य* को जानता हूं जो चौदह वर्ष पहिले, न जाने देह–सहित, न जाने देह–रहित, परमेश्वर ही जानता है, तीसरे स्वर्ग तक उठा लिया गया।"
- गलातियों 1:22, "उस समय तक *यहूदिया की कलीसियाओं ने जो मसीह में है* मुझे देखा ही नहीं था।"

मसीह में ही हमारा आत्मिक अन्धापन हटाया जाता है

- 2 कुरिन्थियों 3:14, "परन्तु उनके मन कठोर हो गए, क्योंकि आज भी इस पुरानी वाचा को पढ़ते समय वही परदा पडा रहता है, क्योंकि वह केवल *मसीह में हटाया जाता है।"*

मसीह में हम नई सृष्टि है, नए क्षेत्र में जीवित है

- 2 कुरिन्थियों 5:17, *"इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है।* पुरानी बातें बीत गई। देखो, नई बातें आ गई हैं।"
- इफिसियों 2:10, "क्योंकि हम उसके हाथ की कारीगरी हैं, जो *मसीह यीशु* में उन भले कार्यों के लिए *सृजे* गए है जिन्हें परमेश्वर ने प्रारम्भ ही से तैयार किया कि हम उन्हें करें।"
- कुलुस्सियों 2:11, *"उसी में तुम्हारा भी ऐसा ख़तना हुआ है जो हाथ से नहीं* वरन् *मसीह के अनुसार ख़तना है,* जिसमें शारीरिक देह उतार दी जाती है।"

मसीह में ही हमारा छुटकारा है

- रोमियों 3:24, "वे उसके अनुग्रह ही से *उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है,* सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते है।"
- 1 कुरिन्थियों 1:30, "परन्तु *उसी के करण तुम मसीह यीशु में* हो, जो हमारे लिए परमेश्वर कि ओर से ज्ञान, धार्मिकता, पवित्रता और *छुटकारा* ठहरा।"
- इफिसियों 1:7, "हमें, *उसमें,* उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् हमारे अपराधों की क्षमा, उसके अनुग्रह के धन के अनुसार मिली है।"
- कुलुस्सियों 1:14, *"जिसमें हमें छुटकारा* अर्थात् पापों कि क्षमा प्राप्त होती है।"

परमेश्वर से हमारा मेल मिलाप मसीह यीशु में हुआ है

- 2 कुरिन्थियों 5:19, "अर्थात, परमेश्वर, लोगों के अपराधों का दोष उन पर न लगाते हुए, *मसीह में* जगत का मेल–मिलाप अपने साथ कर रहा था और उसने हमें मेल–मिलाप का वचन सौंप दिया है।"

मसीह में हम समीप लाए गए

- इफिसियों 2:13, "परन्तु तुम जो पहिले मसीह यीशु से दूर थे अब *मसीह के लहू के द्वारा उस में समीप लाये गए हो।*"

मसीह में ही हम क्षमा पातें है

- इफिसियों 4:32, "एक दुसरे के प्रति दयालु और करुणामय बनो, और परमेश्वर ने *मसीह में* जैसे तुम्हारे *अपराध क्षमा* किए वैसे ही तुम भी एक दुसरे के अपराध क्षमा करो।"
- कुलुस्सियों 1:14, "जिसमें हमें छुटकारा अर्थात पापों की क्षमा प्राप्त होती है।"

मसीह में हमें धार्मिकता मिली है

- 1 कुरिन्थियों 1:30, "परन्तु उसी के कारण तुम *मसीह यीशु में* हो, जो हमारे लिए परमेश्वर कि ओर से ज्ञान, *धार्मिकता,* पवित्रता और छुटकारा ठहरा।"
- 2 कुरिन्थियों 5:21, "जो पाप से अनजान था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम *उसमें* परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।"
- फिलिप्पियों 3:9, "और मैं *मसीह में* पाया जाऊं। यह अपनी उस धार्मिकता से नहीं जो व्यवस्था से उत्पन्न होती है, परन्तु उस धार्मिकता से जो मसीह पर विश्वास करने से मिलती है, अर्थात उस धार्मिकता से जो केवल विश्वास के आधार पर परमेश्वर से प्राप्त होती है।"

मसीह में हम धर्मी ठहराए गए

- गलातियों 2:17, "अतः हम जो *मसीह में धर्मी ठहराए जाने* की खोज कर रहे है, यदि स्वंय ही पापी निकलें तो क्या मसीह पाप का सेवक है? कदापि नहीं !"

मसीह में हम पर दण्ड की आज्ञा नहीं

- रोमियों 8:1, "अतः अब उन पर जो मसीह *यीशु में है*, दण्ड की आज्ञा नहीं।"

मसीह में हमें पाप कि व्यवस्था और मृत्यु से छुटकारा मिला है

- रोमियों 8:2, "क्योंकि जीवन के आत्मा की व्यवस्था ने *मसीह यीशु में* तुम्हें पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया है।"

मसीह में हम स्वतंत्र है

- गलातियों 2:4, "यह उन झूठे भाइयों के कारण ही हुआ जो चोरी से घुस आए थे कि हमारी *उस स्वतंत्रता का जो मसीह यीशु में* हमें प्राप्त है, भेद लेकर हमें दास बनाएं।"

मसीह में विधियां / धर्म-संस्कार कुछ भी नहीं

- गलातियों 5:6 *"मसीह यीशु में* न ख़तने का कुछ महत्व है और न ख़तनारहित होने का, पर केवल विश्वास का जो प्रेम द्वारा होता है।"

मसीह में हमारा आत्मिक खतना है

- कुलुस्सियों 2:11, *"उसी में* तुम्हारा भी ऐसा ख़तना हुआ है जो हाथ से नहीं वरन् *मसीह के अनुसार ख़तना* है, जिसमें शारीरिक देह उतार दी जाती है।"

मसीह में हम पवित्र किए गए हैं

- 1 कुरिन्थियों 1:2, "परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस में है, अर्थात उनके नाम *जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए* और उन सब के साथ जो प्रत्येक स्थान पर हमारे प्रभु यीशु के नाम से प्रार्थना करते है *पवित्र लोग* होने के लिए बुलाए गए है, वह हमारा और उनका भी प्रभु है।"
- 1 कुरिन्थियों 1:30, "परन्तु उसी के कारण तुम *मसीह यीशु में* हो, जो हमारे लिए परमेश्वर कि ओर से ज्ञान, धार्मिकता, *पवित्रता* और छुटकारा ठहरा।"
- फिलिप्पियों 1:1, "मसीह यीशु के दास पौलुस और तीमुथियुस की ओर से, मसीह में *उन सब पवित्र लोगों को* जो अध्यक्षों और सेवकों सहित फिलिप्पी में रहते है।"

- फिलिप्पियों 4:21, *"प्रत्येक पवित्र जन को जो मसीह यीशु में है,* मेरा नमस्कार। जो भाई मेरे साथ है, तुम्हें नमस्कार कहते हैं।"

मसीह में हम पाप के प्रति मृतक और परमेश्वर के लिए जीवित है

- रोमियों 6:11, "इसी प्रकार तुम भी अपने आप को पाप के लिए मृतक परन्तु *मसीह यीशु में* परमेश्वर के लिए जीवित समझो।"

मसीह में हम परिपूर्ण किए गए है

- कुलुस्सियों 2:10, "और तुम *उसी में* परिपूर्ण किए गए हो। और वही समस्त प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है।"
- कुलुस्सियों 1:28, "हम उसी का प्रचार करते हैं, हर एक मनुष्य को चिता देते हैं और समस्त ज्ञान से हर एक को सिखाते हैं, जिस से कि प्रत्येक व्यक्ति को *मसीह में* सिद्ध करके उपस्थित कर सकें।"

मसीह में हमें साहस और भरोसे के साथ प्रवेश है

- इफिसियों 3:12, *"जिसमें,* उस पर विश्वास करने से, हमें यह साहस और भरोसा हुआ कि हमारी पहुंच परमेश्वर तक हो।"

मसीह में हमें उद्धार मिला है

- 2 तीमुथियुस 2:10, "इस कारण मैं चुने हुए लोगों के लिए सब कुछ सह लेता हूं, कि वे भी उस *उद्धार को जो मसीह यीशु में है,* और उसके साथ अनन्त महिमा को, प्राप्त करें।"

मसीह में हमें मीरास / उत्तराधिकार मिला है

- इफिसियों 1:10–11, "ऐसे प्रबन्ध के उद्देश्य से कि समयों के पुरे होने पर वह सब कुछ जो स्वर्ग और पृथ्वी पर है, मसीह में एकत्रित करे। *उसी में जो अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार सब कुछ करता है, हमने भी उसके अभिप्राय के अनुसार, पहिले से ठहराए जाकर, उत्तराधिकार प्राप्त किया है।"*

मसीह में ही परमेश्वर की अनंतकालीन महिमा है

- 1 पतरस 5:10, "तुम्हारे थोड़ी देर यातना सहने के पश्चात सारे अनुग्रह का परमेश्वर जिसने तुमें *मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिए* बुलाया, वह स्वंय ही तुम्हे सिद्ध, दृढ़, बलवंत और स्थिर करेगा।"

मसीह में हम पर पवित्र आत्मा की छाप लगी है

- इफिसियों 1:13, *"उसी में* तूम पर भी, जब तुमने सत्य का वचन सूना जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है, और जिस पर तूम ने विश्वास किया, *प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी।"*

मसीह में हम में पुनरुत्थान की सामर्थ है

- इफिसियों 1:19–20, "और *उसका सामर्थ* हम विश्वास करने वालों के प्रति कितना महान है। ये सब उसकी उस शक्ति के कार्य के अनुसार है, जिसे उसने *मसीह में पूरा किया* जब उसने उसे मरे हुओं में से जिलाकर अपनी दाहिनी ओर स्वर्गीय स्थानों में... बिठाया।"

मसीह में हमें आत्मिक वरदान मिले है

- 1 कुरिन्थियों 1:5, "कि *तुम मसीह में* प्रत्येक बात अर्थात, सम्पूर्ण वचन और समस्त ज्ञान में धनी किए गए –...।"

मसीह में हमें सब आत्मिक आशीषे मिलीं है

- इफिसियों 1:3, "हमारे प्रभु यीशु मसीह का पिता परमेश्वर धन्य हो, जिसने हमें *मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशीषों से* आशीषित किया है।"
- गलातियों 3:14, "यह इसलिए हुआ कि *इब्राहीम की आशीष मसीह यीशु में गैरयहुदियों तक पहुंचे* और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें जिसकी प्रतिज्ञा की गई है।"

मसीह में परमेश्वर का प्रेम, अनुग्रह और शान्ति मिलती है

- रोमियों 8:39, "न ऊंचाई न गहराई, और न कोई सृजी हुई वस्तु हमें *परमेश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु यीशु मसीह में है,* अलग कर सकेगी।"
- 1 कुरिन्थियों 1:4, "मैं तुम्हारे विषय में अपने परमेश्वर के *उस अनुग्रह के लिए जो मसीह यीशु में तुम को दिया गया,* परमेश्वर का निरन्तर धन्यवाद करता हूं।"
- इफिसियों 1:6, "कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो जिसे उसने हमें उस अति प्रिय में सेंत मेंत दिया।
- इफिसियों 2:7, "जिससे कि आने वाले युगों में वह अपनी उस कृपा से *जो मसीह यीशु में हम पर है अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए।"*
- 2 तीमुथियुस 2:1, "इसलिए, हे मेरे पुत्र, उस अनुग्रह में *जो मसीह यीशु में है,* बलवन्त हो।"
- फिलिप्पियों 4:7, "तब *परमेश्वर की शान्ति,* जो समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को *मसीह यीशु में* सुरक्षित रखेगी।"

मसीह यीशु में ही हम स्वर्गीय स्थानों में है

- इफिसियों 1:3, "हमारे प्रभु यीशु मसीह का पिता परमेश्वर धन्य हो, जिसने हमें *मसीह में* स्वर्गीय स्थानों में *सब प्रकार की आत्मिक आशीषों से* आशीषित किया है।"
- इफिसियों 2:6, "और मसीह *यीशु में उसके साथ उठाया और स्वर्गीय स्थानों में बैठाया।"*

मसीह में ही महिमा कि सम्पन्नता है

- फिलिप्पियों 4:19, "मेरा परमेश्वर भी अपने *उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है* तुम्हारी प्रत्येक आवश्यकता पूरी करेगा।"

मसीह में एक साथ सब स्थिर है

- कुलुस्सियों 1:17, "वही सब वस्तुओं में प्रथम है, *और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती है।"*

मसीह में हमें जीवन है, मसीह हमारा जीवन है

- यूहन्ना 3:15, "कि जो कोई विश्वास करे वह *उसमें अनन्त जीवन पाए।"*

- रोमियों 6:11, "इसी प्रकार तुम भी अपने आप को पाप के लिए मृतक परन्तु *मसीह यीशु में परमेश्वर के लिए जीवित समझो।"*
- रोमियों 6:23, "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे *प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।"*
- रोमियों 8:2, "क्योंकि *जीवन के आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में* तुम्हे पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतन्त्र कर दिया है।"
- 1 कुरिन्थियों 15:22, ..."*मसीह में सब जिलाए जायेंगे।"*
- कुलुस्सियों 3:3–4, "क्योंकि तुम तो मर चुके हो और तुम्हारा *जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है।* जब मसीह *जो हमारा जीवन है,* प्रकट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा में प्रकट किए जाओगे।"
- यूहन्ना 6:56, "जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू पीता है, *वह मुझ में बना रहता है और मै उसमें।"*
- यूहन्ना 15:5 "मैं दाखलता हूं, तुम डालियाँ हो। *जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमे,* वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझसे अलग हो कर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।"
- गलातियों 2:20, "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं। अब मै जीवित नहीं रहा, परन्तु *मसीह मुझ में जीवित है,* और अब मै जो शरीर में जीवित हूं, तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझसे प्रेम किया और मेरे लिए अपने आप को दे दिया।"

जो मसीह में है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है

- गलातियों 3:27–28, "तुम में से जितनो ने मसीह में *बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।* अब न कोई यहूदी है और न यूनानी, न दास है और न स्वतंत्र, न पुरुष है और न स्त्री, क्योंकि *तुम सब मसीह यीशु में एक हो।"*
- कुलुस्सियों 3:9–11, "एक दुसरे से झूठ मत बोलो, क्योंकि तुमने अपने पुराने मनुष्यत्व को उसके बुरे कार्यों सहित त्याग दिया है, और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृष्टिकर्ता के स्वरुप के अनुसार सत्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए नया बनता जाता है। इसमें यूनानी और यहूदी, खतना और खतनारहित, बर्बर, स्कुती, पराधीन और स्वाधीन में, कोई भेद नहीं, परन्तु *मसीह सब कुछ और सब में है।"*

हम मसीह में एक हैं

- यूहन्ना 17:21–23, "कि वे सब एक हों जैसे, हे पिता, तू मुझमें है और मैं तुझमें हूं, *वैसे ही वे भी हम में हों,* जिससे कि संसार विश्वास करे कि तूने ही मुझे भेजा है। और वह महिमा जो तू ने मुझे दी है मैंने उन्हें दी है, कि वे वैसे ही एक हों जैसे हम एक हैं: *मैं उनमें और तू मुझ में,* कि वे सिद्ध होकर एक हों जाएं, जिस से संसार जाने कि तू ने मुझे भेजा और जैसे तू ने मुझ से प्रेम किया वैसे ही उनसे भी प्रेम किया।"
- रोमियों 12:5, "वैसे ही हम भी जो अनेक हैं, *मसीह में एक देह हैं,* और एक दुसरे के अंग हैं।"
- गलातियों 3:28, "अब न कोई यहूदी है और न यूनानी, न दास है और न स्वतंत्र, न पुरुष है और न स्त्री, *क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।*"

परिशिष्ठ–ई

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

- इस पुस्तक की शिक्षा कैसे ''पापरहित सिद्धता'' के विचार से संबन्धित है ?

बाइबल के अनुसार, ''निष्पाप तो कोई जन नहीं।''[1] ''निःसंदेह पृथ्वी पर कोई ऐसा धर्मी मनुष्य नहीं जो भलाई ही करे और जिस से पाप न हुआ हो।''[2] ''इसलिये कि हम *सब बहुत* बार चूक जाते हैं।''[3] इस सच्चाई को ध्यान में रखते हुए, प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों को *प्रतिदिन* प्रार्थना करना सिखाया, ''हमारे अपराधों को क्षमा कीजिए।''[4]

दो महान आज्ञाओं में से *एक* को मान लेने से, ऐसा क्यों है कि हम तुरंत समझ सकते हैं: ''तू अपने प्रभु अपने परमेश्वर से अपने *सारे* मन और अपने *सारे* प्राण और अपनी *सारी* शक्ति और अपनी *सारी* बुद्धि के साथ प्रेम रख।''[5] हममें से कौन कह सकता था कि चूंकि परमेश्वर प्रेम रखे जाने योग्य है, हमने कभी परमेश्वर से एक घंटे तक के लिये भी प्रेम रखा? ऐसा करने के लिये, हमें उसे *उतनी ही सिद्धता से प्रेम करना होगा जितनी सिध्दता से मसीह उससे प्रेम रखता है।*

परंतु हम में से किसी ने भी ऐसा नहीं किया, यहां तक कि जब हम *प्रार्थना* और *आराधना कर रहे थे!* यहां तक कि हमारी प्रार्थनाएं और प्रशंसा प्रभु यीशु मसीह के सिध्द विश्वास, प्रेम, जोश और समर्पण के आगे अथाह रूप से कम पड़ जाती है। इसे कहने का दूसरा तरीका यह है कि यहां तक कि हमारी प्रार्थनाएं और प्रशंसाएं इस हद तक *पापयुक्त* हैं, कि वे मसीह की संपूर्ण सिध्दता के आगे ''विफल रहती'' हैं। इसी कारण एकमात्र ''यीशु मसीह के द्वारा'' एवं उसके हमारे बदले प्राण देने के कारण हमारी

प्रार्थनाएं और दूसरे ''आत्मिक बलिदान'' परमेश्वर को ''ग्रहण योग्य होते हैं।''[6] हम यहां तक कि बिना ''यीशु मसीह के द्वारा''[7] ''परमेश्वर को धन्यवाद'' भी नहीं दे सकते हैं! बाइबल के अनुसार, निसंदेह, अनजाने पाप अभी भी *पाप* कहलाते हैं और प्रायश्चित के लहू से उनका मोल चुकाया जाना आवश्यक है।

हरेक मसीही जन जो वचन और आत्मा द्वारा निर्देशित किया जाता है, महसूस करता है कि कितना अधिक वह प्रतिदिन अपने संपूर्ण मन, प्राण, बुध्दि और ताकत से परमेश्वर से प्रेम रखने में विफल रहता है। वह सरलता से अपना पूरा समय उन तरीकों को खोजते हुए और उनकी समीक्षा करते हुए बिता सकता है कि उसने एक दिन की अवधि में भी परमेश्वर को कितना निराश किया है। *तौभी, बाइबल का केंद्र बिंदु यह नहीं है।* इसके स्थान पर, हमें, बाइबल में, परमेश्वर ने अपनी संतानों के उपर अनुग्रह के जो अदभुत व सामर्थकारी कार्य प्रगट किये हैं, उनके उपर बल दिया जाना दिखाई देता है। उदाहरण के लिये, नथानियल के लिये प्रभु यीशु मसीह कहते हैं, ''यह सचमुच इजराएली है: इस में *कपट नहीं!*''[9] वह मसीही जन के लिये कहता है कि, ''*जो ईमानदार और भले हृदय का हो*''[10] और उसे ऐसा ''*भला मनुष्य*'' मानता है जो ''*मन के भले भंडार* से *भली बातें* निकालता है।''[11] वह चेलों के विषय में कहता है, कि मानो वे अपनी तमाम विफलताओं के बावजूद, ''*उसके साथ उसकी* परीक्षाओं में साथ रहे''[12] और ''परमेश्वर के वचन का पालन किया।''[13]

उसी प्रकार, पौलुस, जब अब्राहम की कहानी को सुना रहा था, अब्राहम की ठोकरों के वर्णन को पीछे छोड़ते हुए उसका चरित्र चित्रण ऐसे मनुष्य के रूप में करता है जो ''अविश्वास में डगमगाया न हो।''[14] वह इस बात से ''सहमत'' है कि रोमी विश्वासी ''*अच्छाई, सब प्रकार के ज्ञान से परिपूर्ण,* और परस्पर एक दूसरे को चेताने में *समर्थ होते* हैं।''[15] वह सभी मसीहियों को जैसे ''*पवित्र और प्रिय*''[16] के रूप में वर्णित करता है और कहता है कि उन्होनें ''*शरीर को* उसकी लालसाओं और इच्छाओं समेत *क्रूस पर चढ़ा दिया है*।''[17] ऐसे अनेकों उदाहरण मिल सकते हैं।

हरेक मसीही जन को बाइबल की इस बात पर बल देना चाहिये। यह जानते हुए कि प्रतिदिन वह सिध्दता के मायने में कितना विफल रहता है, फिर भी मसीही जन को, उसका हृदय और बुद्धि उन अदभुत बातों पर केंदित करना चाहिये, जो परमेश्वर ने मसीह में होकर, उसके लिये पूरी की हैं। यह विश्वास रखने का मनोभाव है। स्वयं में, हम ''कुछ नहीं'' हैं[18] और ''कुछ नहीं कर सकते हैं।''[19] परंतु मसीह में हम ''सब

कुछ कर सकते हैं!''[20] एक सहयोगी पास्टर ने, विपरीत सोच का उदाहरण, बड़े अच्छे ढंग से दिया:

> मान लीजिए कि एक मनुष्य के घर में मेहमान आते हैं। जब वे उसके घर में हुए कई परिवर्तन और सुधारों के उपर टिप्पणी करना आरंभ करते हैं, तो वह शर्म से अपना सिर झुका कर कहता है, ''ओह, परंतु ऐसी कोई चीज है जो मैं आप को दिखाना चाहता हूं।'' वह तब रसोईघर में जाता है और कचरे का डिब्बा खींच कर लाता है। (हर घर में एक डिब्बा रहता है!) वह और उसका मेहमान तब कचरे के डिब्बे की सामग्री की विस्तारपूर्वक जांच में संध्या बिताते हैं, और हर वस्तु के खराब और अरूचिकर हो जाने पर शोक मनाते हैं। ऐसा वे अपने नये आधुनिक बनाये गयी बैठक में बैठ कर करते हैं, इस कार्य में वे इतने मगन हो जाते हैं कि वे उनके आसपास के वातावरण से बिल्कुल बेखबर रहते हैं!

मसीही जीवन के प्रति यह *बाइबल सम्मत* दृष्टिकोण नहीं है! मसीही जन, सचमुच, ''अनेक तरीकों से ठोकरें खाते हैं,'' परंतु बाइबल के अनुसार, परमेश्वर अपनी संतानों से एवं उससे प्रेम रखने में उनके लड़खड़ाते भावों से भी प्रसन्न होता है, और वह उन पर आनंद की ध्वनि करता हुआ ''उल्लसित होता'' और ''खुशी मनाता है!''[21] वह उन्हें एवं उनकी भेंटों व जीवनों को सुंदर ''दुल्हन''[22] और ''सुगंधित इत्र''[23] के रूप में देखता है।

- **मसीह की सिद्धता के सामने निरंतर कम पड़ने और ज्ञात पाप के द्वारा निरंतर पराजित किये जाने के बीच क्या अंतर है?**

यह कहना कि मसीही जन निरंतर मसीह की सिद्धता के आगे कम पड़ते हैं, यह कहने से बिल्कुल अलग बात है कि मसीही जन को *ज्ञात पाप के द्वारा पराजित होना ही है।* 1 यूहन्ना 2:1 में यूहन्ना के विचार में यह बिल्कुल *स्पष्ट* और *विदित* पाप है, जब वह कहता है, ''हे मेरे बालकों, मैं ये बातें तुम्हें इसलिये लिखता हूं *कि तुम पाप न करो;* और *यदि* कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात धार्मिक यीशु मसीह।'' ''यदि'' शब्द के प्रयोग से, यूहन्ना इसे स्पष्ट कर देता है कि मसीहियों को जानबूझकर पाप *में नहीं* पड़ना है। पौलुस के दिमाग में यही बात थी जब वह हमसे आग्रह करता है कि ''पाप हमारे मरणहार शरीर में राज्य न करे कि हम उस की लालसाओं के अधीन रहें।'' *मसीहियों को पाप को उनके मरणहार शरीर में राज्य नहीं*

करने देने की आवश्यकता है! जब विदित पाप से उनका सामना होता है, विश्वासी के पास ''आत्मा के कारण'' यह योग्यता होती है कि ''देह की क्रियाओं को मार डाले।''[24] जब वह आत्मा में चलता है, वह शरीर की लालसाओं को पूरी *नहीं करेगा।*[25] वास्तव में, पौलुस निश्चितता से यह घोषित करता है कि पाप किसी मसीही जन के उपर प्रबल *नहीं होगा,* क्योंकि वह व्यवस्था के अधीन नहीं, वरन अनुग्रह के अधीन है।[26] मसीह ने ''जिस ने अपने आप को हमारे लिये दे दिया, कि हमें *हमारे हर प्रकार* के अधर्म से छुड़ा ले और *शुद्ध करके अपने लिये एक* ऐसी जाति बना ले *जो भले भले कामों में सरगर्म हो।*''[27]

इस पूरे जीवन काल में कोई मसीही जन सिद्ध नहीं होता है – बिल्कुल भी नहीं! परन्तु हरेक मसीही जन को मसीह में ज्ञात पाप के बंधन को तोड़ने की और पवित्र आत्मा में ''धार्मिकता, शांति और आनंद का''[28] जीवन बिताने की सामर्थ प्राप्त है।

- कुछ लोग कहते हैं कि रोमियों 7:14-25 साधारण रूप में मसीही जन का पाप के साथ जारी संघर्ष का चित्रण करता है - कि मसीही जीवन मूलतः विजय का जीवन है, परंतु मसीही जन उनके जीवन में फिर भी शेष रह गयी विफलताओं और कमियों से अत्यधिक दुःखी हैं। आप इस मत के प्रति कैसी प्रतिक्रिया देंगे?

मैं सामान्य तौर पर मसीही जीवन की प्रकृति को लेकर ऐसे लोगों से सहमत हूं। मसीही जीवन मूलतः विजय का जीवन है, परंतु मसीही जन उनके जीवन में फिर भी शेष रह गयी विफलताओं और कमियों से अत्यधिक दुःखी हैं! हर कोई रोमियों 7:14–25 को इस रूप में नहीं लेता है, जहां मसीही जन का, मसीही जीवन के प्रति ''निकम्मे मनुष्य'' या ''पराजयवादी'' प्रकार का मत प्रगट है, और हमें ऐसा नहीं मानना चाहिये कि वे ऐसा करते हैं। ऐसे लोगों के साथ मेरा भेद मूलतः धर्मशास्त्र के एक अंश की व्याख्या (और संभवतः अपप्रयोग) के अंतर को लेकर है, परंतु, आवश्यक नहीं, कि स्वयं मसीही जीवन की प्रकृति को लेकर, कोई भेद हो।

यद्यपि, यह एक सच्चाई है, कि *अधिकांश* लोग रोमियों 7 का दुरूपयोग करते हैं और जब वे पाप से दुखित और पराजित हो जाते हैं, तो ''ढ़ाढस'' पाने के लिये इसकी ओर मुड़ते हैंः ''आखिरकार प्रेरित पौलुस को भी विजय नहीं मिल सकी, तो क्यों मैं कुछ अलग की मांग करूं?'' यहां तक कि वे जो विश्वास करते हैं कि मसीही जीवन मूलतः विजय का जीवन है, वे भी सूक्ष्म तौर पर इस विचार से परीक्षा में पड़ते है कि

''इसी प्रकार का पाप'' *पौलुस के समान,* वैसा ही हो सकता है, जिस को वे कभी भी पराजित नहीं कर सकते।

रोमियों 7 के दुरूपयोग किये जाने के प्रकाश में, मैं एक बार और बल दूंगा कि रोमियों 7 की विषय वस्तु ''विश्वासी में बसने वाला पाप'' *नहीं* है, परंतु ''शरीर पर इसके प्रभाव के बावजुद, व्यवस्था भली है।'' रोमियों 7 इस तथ्य से संबंध है कि व्यवस्था, यद्यपि ''आत्मिक'' और ''भली'' थी फिर भी ''शरीर में दुर्बल थी।''[29]

यह विस्तार से इस सच्चाई का चित्रण करती है ''क्योंकि जब हम शारीरिक थे, तो पापों की अभिलाषायें जो व्यवस्था के द्वारा थीं, मृत्यु का फल उत्पन्न करने के लिये हमारे अंगों में काम करती थीं।''[30] यह भी ध्यान दिया जाना चाहिये (पूर्व में ''पापरहित सिध्दता'' के संबंध में उत्तर दिये जाने के प्रकाश में) कि रोमियों 7:14–25 में पौलुस स्पष्टतः मसीह की सिध्दता तक पहुंचने में, पवित्र मसीही जन की निरंतर विफलता के बारे में *नहीं* कह रहा है, जैसा कि कुछ लोगों ने मान लिया है, परंतु *ज्ञात पाप की प्रबुध्द पराजय* के विषय में कह रहा है। यह इस तथ्य से प्रगट है कि इन पदों में मनुष्य का चित्रण जागृत अवस्था में भलाई करनेवाले जन का है, परंतु जिसे वह ''बुरा'' *समझता* है, ''व्यवहार में'' वही करता है[31] जिस से उसे घृणा आती है।''[32] ज्ञात पाप द्वारा इस पराजय को एक सा वर्णित किया गया है, न कि कभी कभी, और इस मनुष्य को पवित्र आत्मा की सामर्थ द्वारा पाप को वश में करने की कोई भी योग्यता दिये जाने के लिये कुछ भी *नहीं* कहा गया है। पर इसके विपरीत, हम मसीही जन के रूप में, प्रति दिन परमेश्वर की प्रशंसा कर सकते है। ''क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया!''[33] हम ''व्यवस्था से ऐसे छूट गए कि लेख की पुरानी रीति पर नहीं, वरन आत्मा की नई रीति पर सेवा करते हैं।''[34]

- गलातियों 5:17 के विषय में क्या कहा जा सकता है ? क्या वहां रोमियों 7 के समान ही नही कहा गया है ?

गलातियों 5:17 (''क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में, और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करता है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं; इसलिये कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ) यह *पराजय* की निश्चयता नहीं वरन *विजय* की निश्चयता है। पौलुस पद 16 में इस प्रतिज्ञा के साथ आरंभ करता है कि यदि हम ''आत्मा के अनुसार चलते हैं,'' तो हम ''शरीर की लालसाओं को किसी भी रीति से पूर्ण नहीं करेंगे।'' तब

वह पद 17 में समझाता है कि ऐसा क्यों हैः पवित्र आत्मा, जिसका स्वभाव शरीर के सीधे विरोध में है, इसका प्रतिरोध करती है, *व प्रभावोत्कारी रूप में हमें स्वार्थीपन से जीवन जीने अथवा शरीर की लालसा का अनुसरण करने से बचाता है।* ''शरीर की क्रियाओं'' का विरोध पद 19–23 में ''आत्मा के फल'' के साथ करने के बाद, पौलुस तब हमें एक बार फिर पद 24 में विश्वास दिलाता है कि ''जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उस की लालसाओं और अभिलाषाओं समेत कूस पर चढ़ा दिया।''

व्याख्याकार अल्बर्ट बार्नेस का एक उध्दरण इस बिंदु पर सहायक हो सकता हैः

> इसकी व्याख्या करने का कोई कारण नहीं है, सिवाय इसके, जैसा कि हमेशा होता आया है, कि मन में बुरा करने की प्रवृत्ति अत्यधिक प्रबल होती है, और जैसे यह सिखाया गया हो कि मसीही जन भला करने के लिये इच्छुक रहता था, परंतु उसके भीतर बसने वाली भ्रष्टता के कारण, भला न कर सका। जहां तक पौलुस की भाषा अथवा इस तथ्य का संबंध है, इसके विपरीत भी समझा जा सकता है, और इसका अर्थ यह हो सकता है, कि हृदय के उपर पवित्र आत्मा का इतना नियंत्रण और प्रभाव होता है, कि मसीही जन बुराई नहीं करता है जो वह अन्यथा करेगा.....।
>
> वह (पौलुस) उनसे (गलातियों 5:16) में आत्मा में चलने का आग्रह कर रहा है और उन्हें आश्वासन देता है कि इस तरह वे शरीर की लालसाओं को पूरा नहीं करेंगे। इसके प्रति उन्हें प्रेरित करने के लिये, वह उन्हें स्मरण दिलाता है कि उनके विचारों में विरोधात्मक सिद्धांत, परमेश्वर के आत्मा का प्रभाव, और शरीर की एक निम्न प्रवृत्ति हुआ करती थी। ये एक दूसरे के विरोध में हैं; और वास्तव में, विचारों पर आत्मा के प्रभाव, कुछ इस रूप में हैं, कि मसीही जन वह बातें नहीं करता जो वह अन्यथा कर सकता था।[35]

- **क्या आप पुनरूज्जीवन का वर्णन करने वाले अनेक अंशों को समझने में, अति शब्दशः नहीं हो गये ?**

यह प्रगट है कि, जब बाइबल कहती है, उदाहरण के लिये, ''परमेश्वर का बीज''[36] के विषय में, जो हमारे भीतर शेष है जिसके हमारे भीतर होने से हम ''ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी हो जाते हैं।''[37] तो इन पदों को शरीर के संदर्भ में नहीं समझा गया है। न

वे अनंत सृष्टिकर्ता और उसकी सीमित सृष्टि के बीच सुनिश्चित खाई को कम करने का संकेत दे रहे हैं। तौभी, हमें विचार में निरंतर यह रखना आवश्यक है कि *पवित्र आत्मा ने* स्वइच्छा से *इन पदों को अभिप्राय से चुना है* क्योंकि वे अचूक रूप में हम तक अदृश्य सच्चाई के सत्य को पहुंचाते हैं। धर्मविज्ञानी विशेषज्ञता के नाम में, हम इन शब्दावलियों को उनके वास्तविक अर्थ खो जाने तक के बिंदु तक ''समझाने'' का हियाव नहीं करते हैं। मसीही जन *वास्तव* में ''परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है।'' वह *वास्तव* में ''नये हृदय'' के साथ ''नई सृष्टि'' है जो ''मृतकों में से जीवित हुआ'' है और ''स्वर्गीय स्थानों में बैठा हुआ है!''

- **अगर मसीही जन एक नया मनुष्य है और शरीर अपने आप में पापमयी नहीं है, तो विश्वासी में पाप कहां से आता है ?**

बाइबल हमें मनुष्य की मनोदशा अथवा मनुष्य के व्यक्तित्व का विस्तृत वर्णन नहीं देती है। इसके बजाय, यह हमें *क्रियात्मक* या *व्यवहारिक वर्णन* देती है। यह वर्णन कई गूढ़ प्रश्नों को अनुत्तरित छोड़ देता है, परंतु मसीही जीवन जीने के लिये यह जो स्थाई नींव प्रदान करता है, वह पर्याप्त होने से बढ़कर है।

मूल तथ्य स्पष्ट हैं :

1. मसीह जन के बारे में *गहन* और *अंतिम* सत्य यह है कि वह एक नया मनुष्य है। यह उसकी *आवश्यक पहचान* है। नया मनुष्य दर्शाता है कि वर्तमान समय में ''वास्तव'' में वह कौन *है* और अब से हजारों साल बाद कौन *होगा।*

2.. नया मनुष्य, मसीही जन के बारे में *एकमात्र* सच्चाई नहीं है। उसके *व्यक्तित्व का एक पहलू और है* जिसका छुटकारा अभी तक नहीं हुआ है – उसकी ''मरणहार देह।'' बाइबल के अनुसार, मसीह जन का पाप के साथ सतत संघर्ष इस तथ्य से उपजता है। पाप अभी भी उसकी मरणहार देह में राज्य करता है।[38]

यह अभिशप्त मरणहार देह, ऐसे स्थान के रूप में देखी जाती है जहां पाप अभी भी प्रबल होने का प्रयास करता है, बाइबल में इसे ''शारीरिक'' के संदर्भ में कहा गया है। धर्मशास्त्र बारंबार शरीर के ''अंगों'' के विषय में कहता हैं (हाथ, पैर, आंखे, इत्यादि) ये वे स्थान है जहां पाप स्वयं को प्रगट करता है।[39] बाइबल पापों को ''शरीर की क्रियाएं'' भी कहती है![40] हम जानते है कि जब मसीही जन पाप करता है, उसका अकेला शरीर पाप नहीं करता है, परंतु मसीही जन एक संपूर्ण व्यक्तित्व के रूप मे पाप करता है।

तौभी, बाइबल इसे स्पष्ट करती है कि एक बार जब शरीर ने छुटकारा प्राप्त कर लिया, विश्वासी के लिये पाप अब कोई समस्या नहीं रहेगी।[41]

मसीही जन के संपूर्ण व्यक्तित्व का एक पहलू उसका शरीर है, परंतु यह उसके लिये अंतिम सत्य नहीं है। यह इसे नहीं दर्शाता कि वह वास्तव में कौन है या वह वास्तव में क्या चाहता है। "शरीर की क्रियाएं" उसे दुःख पहुंचाती हैं और जो कुछ उसे सबसे अधिक प्रिय है, उसी का विरोध करती है।

3. *मसीही जन को शरीर से परास्त होने की आवश्यकता नहीं है। चूंकि उसकी बुद्धि उन तथ्यों पर विश्वास करने के द्वारा कि वह वास्तव में कौन है "नयी बनाई गयी है"*[42] और जैसे जैसे वह "आत्मा में चलना" सीखता है, वह "शरीर की क्रियाओं को मारने में" अधिकाधिक समर्थ किया जाएगा।

- यह शिक्षा कि एक मसीही जन के पास दो स्वभाव होते है, और यह शिक्षा कि मसीही जन एक नया मनुष्य होकर शरीर के साथ संघर्षरत रहता है, के मध्य व्यावहारिक अंतर क्या है ?

मूल अंतर *पहचान* का है: *मैं वास्तव में कौन हूं? मेरे बारे में अंतिम सत्य क्या है ?* यदि मेरे अस्तित्व के गहनतम भाग में, बुराई अभी भी इस भाव के रूप में पायी जाती है कि मैं *वास्तव में* कौन हूं और मैं *वास्तव में* क्या *चाहता हूं,* तब शुध्दिकरण *सच्चाई का इंकार करने वाली* एक प्रक्रिया हो जाती है और मैं वास्तव में कौन हूं, से हटकर कुछ और हो जाती है।

दूसरी ओर, यदि मैं एक नया मनुष्य होकर अभी भी शरीर के साथ संघर्षरत हूं, मैं हर बार पाप को "नहीं" कहता हूं तो मै जो मैं वास्तव में हूं और जो मैं वास्तव में चाहता हूं, उस को "हां" कह रहा हूं। तब शुद्धिकरण *सच्चाई को गले लगाने वाली* और *जो सत्य है उस पर विश्वास करने वाली* और जो मैं सचमुच हूं, अधिकाधिक, उस व्यक्तित्व के *होने के अभ्यास की* प्रक्रिया है।[43]

- जब यीशु मरकुस 7:21-22 में कहते है कि "भीतर से अर्थात मनुष्य के मन से बुरी बुरी चिंता, व्यभिचार, चोरी, हत्या, पर स्त्रीगमन, लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि, निंदा, अभिमान और मूर्खता निकलती है," तो क्या वह मसीहियों और उसी प्रकार से गैर मसीहियों के बारे में

कह रहा है ?

चूंकि प्रभु यहां *निश्चित क्रियाओं* का संदर्भ दे रहा हैं जो मनुष्यों से ''बाहर निकलते'' हैं और उन्हे अशुध्द करती है (पद 20), उनमें यथाशब्द ''व्यभिचार, चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन,'' और ''लोभ व दुष्टता की क्रियाएं,'' सम्मिलित हैं, तो इससे स्पष्ट है कि वह सामान्य तौर पर भटकी खोई हुई मानवता का वर्णन कर रहा है, न कि मसीहियों का।

इसके विपरीत, मसीहियों को, प्रभु ने यह कहकर संबोधित किया है जिनके पास *''एक ईमानदार और भला हृदय है।''*[44] यीशु के अनुसार, मसीही जन वह ''भला जन है जो अपने भले भंडार से भली वस्तुएं निकालता है।''

''यदि *पेड़ को अच्छा कहो, तो उसके फल को भी अच्छा कहो;* या पेड़ को निकम्मा कहो, तो उसके फल को भी निकम्मा कहो; क्योंकि पेड़ फल ही से पहचाना जाता है। हे सांप के बच्चों, तुम बुरे होकर क्योंकर अच्छी बातें कह सकते हो? क्योंकि जो *मन में भरा है,* वही मुंह पर आता है। *भला मनुष्य मन के भले भंडार से भली बातें निकालता है और बुरा मनुष्य बुरे भंडार से बुरी बातें निकालता है।''*[45]

- मत्ती 7:11 के विषय में क्या कहा जा सकता है ? किस अर्थ में मसीही जन ''बुरे'' होते हैं ?

जब यीशु फरीसियों को मत्ती 12:34 में कहते है (उपर उदधृत है), ''हे सांप के बच्चों, *तुम बुरे होकर* क्योंकर अच्छी बातें कह सकते हो?'' तो यह स्पष्ट है कि वह ''बुरे'' शब्द का प्रयोग गैर मसीहियों के लिये प्रयुक्त कर रहा है – ''बुरा मनुष्य'' जो ''बुरे भंडार से बुरी बातें निकालता है'' – मसीही जन के विपरीत, ''जो भला मनुष्य'' है और जो ''मन के भले भंडार से भली बातें निकालता है।''

दुसरी ओर, मत्ती 7:11 में यीशु अपने चेलों को प्रार्थना करने के बारे में सिखा रहा है। इसलिये, यह प्रगट है, कि जब वह उनसे कहता है, ''सो जब *तुम बुरे होकर,* अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को अच्छी वस्तुएं क्यों न देगा?,'' तब वह उस रूप में उन्हें ''बुरे मनुष्य'' *नहीं* कह रहा है जिसमें वह अपरिवर्तित फरीसियों को कहता है। तौभी, ''उनका पिता जो स्वर्ग में है'' *की तुलना में,* वे सचमुच ''बुरे'' हैं। जैसे हमने पूर्व में इस परिशिष्ठ में देखा, सच्चे

मसीही जन भी परमेश्वर की सिध्द भलाई के सामने अथाह रूप में कम पड़ जाते हैं। जब उससे तुलना की गयी, *''परमेश्वर एकमात्र के अतिरिक्त कोई भी भला नहीं है।''*[46]

● क्या यिर्मयाह 31:31-34 और यहेजकेल 36:25-28 कलीसिया की ओर नहीं, परंतु इजराएल की ओर इशारा करते हैं ?

पुराने नियम में एक नये बनाये गये या पुर्नस्थापित ''इस्त्राएल'' के संबंध में अनेक भविष्यवाणियां नये नियम में देखी गई है कि कलीसिया में उनकी *अंतिम* पूर्णता हो। ''नयी वाचा'' उनमें से एक है। परमेश्वर यिर्मयाह 31 में कहते हैं कि वह ''इजराएल के घराने के साथ और यहूदा के घराने के साथ'' एक नयी वाचा बांधेगे। इब्रानियों का लेखक इसे स्पष्ट करता है कि यह प्रतिज्ञा भौतिक रूप में ''इजराएल के घराने के साथ और यहूदा के घराने के साथ'' पूर्ण नहीं हुई है, परंतु कलीसिया में पुर्ण हुई है।[47] हरेक *मसीही जन,* चाहे यहूदी हो या अन्यजाति, नयी वाचा में भाग लेने वाला ठहरा है।[48] भविष्य में परमेश्वर की प्रगट होने वाली करूणा कलीसिया में यहूदियों के साथ साथ विश्वास करने वाली अन्यजातियों के लिये भी है।[49]

यहेजकेल 36 में कई ''नयी वाचा'' की प्रतिज्ञाओं के संदर्भ में इसी प्रकार कहा गया है, उदाहरण के लिये यहेजकेल 34:23–25 मे मसीहा के आगमन और ''शांति की वाचा'' के बारे में कहा गया है जो परमेश्वर तब, अपने लोगों के साथ बांधेगा, और यहेजकेल 37:24–28 में ''शांति की वाचा'' के बारे में जो ''सनातनकाल की वाचा'' है, कहा गया है।'' (देखिये इब्रानियों 13:20)

पुराने नियम की प्रतिज्ञायें इजराएल के लिये थी और उन्हें कलीसिया पर लागू नहीं किया गया, इस दृष्टिकोण से अलग हटकर देखने पर, पौलुस, इफिसुस में गैर जाति विश्वासियों को बताता है, कि यद्यपि एक बार वे ''इजराएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए, *और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे,''* अब वे (विश्वासी यहूदियों के साथ) *उन मूल प्रतिज्ञाओं* के सहभागी ठहरे, और ''मसीह के लहू द्वारा निकट हो गए।''[50] यहूदी और गैर जाति, *दोनों* ''एक नये मनुष्य''– अर्थात कलीसिया बनाये गये।

''क्योंकि वही हमारा मेल है, *जिस ने दोनों को एक कर दिया:* और अलग करने वाली दीवार को जो बीच में थी, ढा दिया......अपने में एक *नया मनुष्य उत्पन्न करके,* मेल करा दे। और क्रूस पर बैर को नाश करके इस के द्वारा *दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए.......*।'' पौलुस इससे और अधिक बढ़कर कहता है कि, ''अन्यजाति

अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे..... परंतु पवित्र लोगों (यहूदी विश्वासी) के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए।''

पुराने नियम की प्रतिज्ञाओं का यह दृष्टिकोण पतरस द्वारा भी सामने रखा गया, जो *कलीसिया के लिये* कहता है, इजराएल के लिये नहीं, क्योंकि परमेश्वर की पुराने नियम से यह इच्छा[51] थी कि एक ''निज प्रजा'' का निर्माण हो: ''पर तुम एक *चुना हुआ वंश,* और राज–पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग और परमेश्वर की *निज प्रजा* हो, इसलिये कि जिस ने तुम्हें अंधकार में से अपनी अदभुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो। *तुम पहिले तो कुछ भी नहीं थे, पर अब परमेश्वर की प्रजा हो:* तुम पर दया नहीं हुई थी पर अब तुम पर दया हुई है।''[52]

लेखक के विषय में

चार्ल्स लीटर अपनी पत्नी मोना और दो बच्चों के साथ कर्क्सविल, मिसूरी के साथ रहते हैं, जहां उन्होंने 1974 से पासबान के रूप में सेवा की। प्रभु ने उन्हें कई मसीहियों की सच्ची सहायता और लाभ के लिए अपनी सेवा में शिक्षक के रूप में उपयोग किया है। उसके पासबानीय परिश्रम के अतिरिक्त उन्होंने विदेशों में और संपूर्ण देश में महासभाओं में सेवकाई की है। आप उनकी सेवकाई के विषय में और जिस कलीसिया के वे सहपासबान हैं, उसके विषय में www.lakeroadchapel.org इस वेबसाईट पर जान सकते हैं।

प्रकाशक की ओर से एक शब्द

परमेश्वर के लोगों के हाठों पर उसकी स्तुति देखना हमारा बड़ा लक्ष्य है। ग्रान्टेड मिनिस्ट्रीज़ ने उसके आरंभ ही से, उन लोगों का प्रभाव आगे बढ़ाने का प्रयास किया है जिन्हें परमेश्वर ने विश्वास में हमारी अपनी व्यक्तिगत उन्नति के लिए अद्‌भुत रीति से उपयोग किया है। परमेश्वर के बाद, चार्ल्स लीटर ने ग्रान्टेड मिनिस्ट्रीज़ में सहभागी हम सभी लोगों पर गहरा प्रभाव डाला है। और अधिक विशिष्ट तौर पर, इस पुस्तक की विषयवस्तुओं ने (धर्मीकरण और नए जन्म के आवश्यक सत्यों कों इतनी स्पष्टता से समझाया है) यह प्रमाणित कर दिया है कि यह कइयों के लिए बड़े आशीष का कारण होगी। हमें भरोसा है कि इस पुस्तक को व्यापक तौर पर उपलब्ध करने का हमारा प्रयास मसीह की देह की बड़ी सेवा होगी। हमें यकीन है कि यह कलीसिया कि वास्तविक ज़रूरत है कि वह और पूर्णता के साथ और गहराई से अपने परमधन्य परमेश्वर को जाने। इस प्रयास कि साथ हम हमारे प्रभु यीशु मसीह के साथ प्रार्थना में सहभागी होते हैं, "उन्हें सत्य से पवित्र कर; क्योंकि तेरा वचन सत्य है" (यूहन्ना 17:17)। हम आपको प्रोत्साहन देते हैं कि इस वेबसाईट पर हमसे मिलिएः www.grantedministries.org और लाभ प्राप्त करें।

आप क्या खरीदने में सक्षम हैं "निती"

हमारे द्वारा उपलब्ध कराए गए सभी सामुग्रियों के समान ही, यह पुस्तक उस किसी भी व्यक्ति के लिए प्रस्तुत की जाती है जो उससे लाभ पा सकता है, चाहे वे उसके लिए मूल्य अदा कर सकें या न कर सकें। पुस्तक का एक मूल्य है, परंतु हम नहीं चाहते

कि यह किसी के लिए रुकावट बने। यदि आप एक प्रति खरीद नहीं सकते हैं, या यदि आप इसके मूल्य का केवल एक भाग खरीद सकते हैं, तो हम आपसे बिनती करते हैं कि हमें लिखकर उसके लोगों के लिए प्रयोजन कर परमेश्वर की सेवा करने का अवसर प्रदान करें। हमारी एकमात्र शर्त यह है कि यदि आप यह पुस्तक छः महीनों के अंदर पढ़ नहीं सकते, तो इसके लिए बिनती न करें। हम उदारतापूर्वक आपके वाचनालय का विस्तार बढ़ना नहीं चाहते, परंतु उदारतापूर्वक आपकी आत्मिक दशा का विस्तार करना चाहते हैं।

GOSPEL'S POWER & MESSAGE

PAUL WASHER

"Praise God for the gospel and books like this that help us know, understand, and love it more deeply."

- Voddie Baucham -

ALETHIA Publications

For more information please call 9561912734, or visit our website:
www.alethiabooks.com

If You Bite & Devour One Another

Alexander Strauch

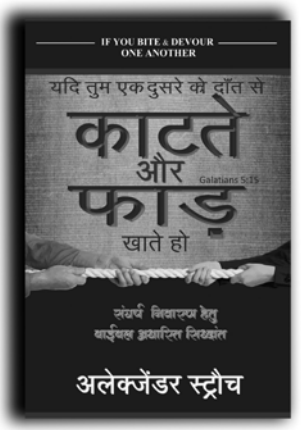

Conflict is all too common where two or more people are present. The church is no different. If You Bite & Devour One Another is perhaps the only Christian book of its kind dealing with conflicts in the church.

ALETHIA Publications

For more information please call 9561912734, or visit our website:
www.alethiabooks.com

Biblical Eldership

Alexander Strauch

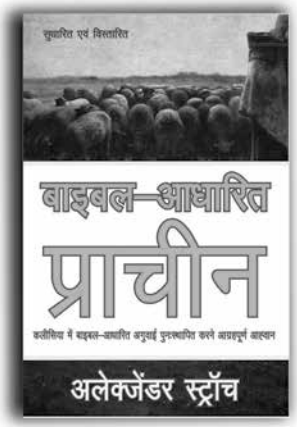

Do you want a Biblical Church? It all starts with Biblical leadership. With over 200 000 English copies sold, this comprehensive look at the role and function of elders/pastors shows us from scripture how your church can achieve this.

ALETHIA Publications

For more information please call 9561912734, or visit our website:
www.alethiabooks.com

THE GOSPEL CALL & TRUE CONVERSION

PAUL WASHER

"In *The Gospel Call and True Conversion*, Paul Washer brilliantly and clearly helps the reader understand truth, carefully opening the Scriptures and explaining how the power of the gospel ought to impact our lives as Christians."

Greg Gilbert, author & senior pastor of Third Avenue Baptist Church

ALETHIA Publications

For more information about our publications, or to order, please visit our website:
www.alethiabookshop.com